निःशुल्क वितरण हेतु

बाँसुरी - I

कक्षा 3 के लिए कला की पाठ्यपुस्तक

0338

सत्र 2026–27

विद्ययाऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

यह पाठ्यपुस्तक शासकीय संपत्ति है। इसका क्रय-विक्रय अवैधानिक है।

प्रकाशन वर्ष - 2026

छत्तीसगढ़ शासन, स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृत

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली
के सौजन्य से छत्तीसगढ़ राज्य के द्वारा अनुकूलित

आवरण पृष्ठ एवं ले आउट डिजाइनिंग
रेखराज चौरागड़े, हिमांशु वर्मा

प्रकाशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

मुद्रक
छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर (छ.ग.)

मुद्रणालय

मुद्रित पुस्तकों की संख्या - ____________________

प्राक्कथन

कला शिक्षा भारतीय संस्कृति की अनुपम पहचान है। इसके सतत शिक्षण से बच्चों के आंतरिक एवं बाह्य कौशलों का उत्कृष्ट विकास एवं सकारात्मक अभिव्यक्ति संभव है। कला शिक्षा जीवन के विविध पक्षों में कलात्मकता को पोषित करती है। यह भारतीय दर्शन में उल्लेखित पंचकोषों को पोषित कर मानव जीवन के प्रत्येक कार्य में आनंदानुभूति कराती है। जिससे बच्चों में उत्साह, जिज्ञासा, कल्पना, तर्क, विवेचनात्मक चिंतन और समालोचनात्मक चिंतन भी विकसित होता है। भारतीय संस्कृति के आधारित स्तंभ पंचकोष- अन्नमय कोष, प्राणमय कोष, मनोमय कोष, विज्ञान मय कोष और आनंदमय कोष हैं, जो परस्पर दुगुने एवं तीव्र गति से पोषित होकर बच्चों के समग्र विकास का सुदृढ़ आधार बनते हैं।

स्कूली पाठ्यक्रम में कला शिक्षा में बच्चे "क्या और कैसे" सीखेंगे के उद्देश्य की पूर्ति हेतु NEP 2020, NCF-SE (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा-स्कूली शिक्षा) एवं SCF-SE (राज्यीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा-स्कूली शिक्षा) में दिशा निर्देश एवं सुझाव प्रस्तुत हैं | NEP 2020 के अनुसार कला शिक्षा को स्कूली शिक्षा में शामिल कर सभी बच्चों में कलात्मक अभिव्यक्ति विकसित करना, स्थानीय कलाओं को प्रोत्साहित करना एवं कला के विभिन्न रूपों की सराहना करने में सक्षम बनाना है।

कला शिक्षा के प्रभावी शिक्षण के लिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि विभिन्न आयु समूह में बच्चे कला कैसे सीखते हैं, बच्चों की विविधताओं, क्षमताओं के अनुरूप उन्हें कला गतिविधियों में संलग्न होने और सौंदर्य विकास के विकासात्मक चरण विकसित करने हेतु कला विषय वस्तु को अच्छी तरह से डिजाइन कर पाठ्यपुस्तक 'बाँसुरी-1' का विकास किया गया है, जिसके माध्यम से बच्चों एवं शिक्षकों में कलात्मक कौशलों के प्रति दृष्टिकोण - विषय वस्तु का चयन, सामग्री संगठन की तकनीकें, कलात्मक अभ्यास, कला शिष्टाचार और नैतिकता, अंतः विषय अभ्यास को प्रोत्साहित किया जा सकता है। कला शिक्षा शास्त्र विभिन्न कला रूपों को जोड़ता है। बच्चों को स्थानीय संसाधनों, कलाकारों, कला और संस्कृति के सम्मान के साथ-साथ पूछताछ विश्लेषण, आलोचनात्मक चिंतन और सौंदर्य की सराहना करने के लिए भी सक्षम बनाता है।

सभी बच्चों में कला शिक्षा के प्रति संवेदनशीलता, जागरूकता, सौंदर्य एवं कलात्मक प्रवीणता विकसित करने हेतु कक्षा 3 की यह पाठ्यपुस्तक 'बाँसुरी-1', NCERT की कला शिक्षा की पाठ्यपुस्तक 'बाँसुरी-1' को आधार मानकर सर्वसमावेशी कक्षा व्यवस्था तथा आंशिक स्थानीय अनुकूलन के साथ विकसित की गई है। इस विषय को राज्य में औपचारिक रूप से शिक्षण के लिए पहली बार सम्मिलित किया गया है। जिसके कारण इसके शिक्षण में कुछ चुनौतियाँ शिक्षकों के समक्ष आ सकती हैं। परंतु उन्हें इसे अवसर के रूप में मानकर शिक्षकों एवं बच्चों में कलात्मक प्रवीणता को प्राप्त किया जा सकता है, जिसके लिए मैं सभी शिक्षकों को उनके बेहतर कार्य के लिए शुभकामनाएँ देती हूँ।

यह पाठ्यपुस्तक बच्चों में संगीत, दृश्यकला, नाटक और नृत्य की रसानुभूति के साथ कला के विषय क्षेत्रों की परिचयात्मक समझ भी विकसित करेगी, साथ ही विद्यार्थी कलात्मक प्रवीणता और स्थानीय कला, संस्कृति के प्रति गौरवान्वित होंगे। इसी विश्वास के साथ यह पाठ्यपुस्तक 'बाँसुरी-1' कक्षा 3 के सभी बच्चों और शिक्षकों के लिए अनुशंसित करती हूँ। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में सम्मिलित SECRT, राज्य एवं स्थायी समिति के अध्यक्ष एवं सभी सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने इसे साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और आशा करती हूँ कि यह पुस्तक कला शिक्षण की सभी अपेक्षाओं को पूरा करेगी।

इसको परिष्कृत करने तथा भावी संशोधनों के लिए राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर सदैव आपके सुझावों को स्वीकृत करेगी।

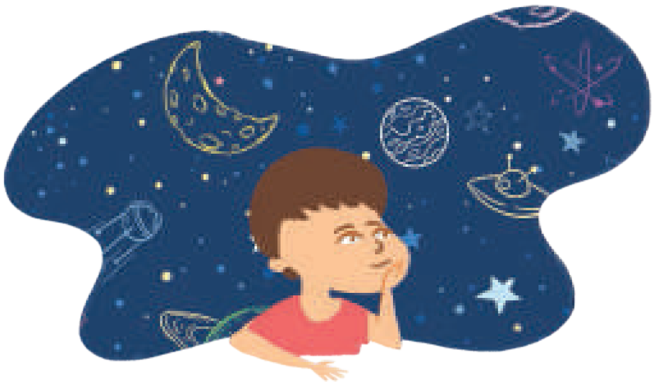

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

आमुख

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा संस्तुत शिक्षा का बुनियादी स्तर बच्चों के समग्र विकास के लिए, उन्हें न केवल हमारे देश की संस्कृति और संवैधानिक व्यवस्था से उद्भुत अमूल्य संस्कारों को आत्मसात करने का अपितु बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता अर्जित करने का भी अवलंबन देता है ताकि वे अधिक चुनौतीपूर्ण आरंभिक स्तर के लिए पूर्णरूपेण तैयार हो सकें।

आरंभिक स्तर, जो बुनियादी और मध्य स्तरों के बीच एक सेतु का काम करता है, विद्यालयी शिक्षा की वह तीन वर्षीय अवधि है, जिसमें कक्षा 3 से कक्षा 5 सम्मिलित हैं। यह कहना अनावश्यक होगा कि इस स्तर पर बच्चों को मिलने वाली शिक्षा, आवश्यक रूप से आधारभूत स्तर के शिक्षा उपागम पर आधारित होगी। खेल-आधारित, खोज और गतिविधि प्रेरित सीखने-सिखाने की विधियाँ सतत रहेंगी लेकिन इसी बीच इस स्तर पर बच्चों को पाठ्यपुस्तकों और कक्षाओं से अधिक औपचारिक रूप में परिचित कराया जाएगा। इसका उद्देश्य बच्चों को कठिन स्थिति में डालना नहीं है अपितु उनमें पठन, लेखन एवं वाचन के साथ-साथ चित्रकला और संगीत इत्यादि के माध्यम से समग्र अधिगम और आत्म-अन्वेषण के लिए सभी विषयों के द्वारा आधार तैयार करना है।

अतः इस स्तर पर बच्चे शारीरिक शिक्षा, कला शिक्षा व पर्यावरण शिक्षा के साथ-साथ भाषाओं, गणित, आरंभिक विज्ञान और सामाजिक विज्ञान से भी परिचित होंगे। यहाँ यह सुनिश्चित किया जाएगा कि बच्चों का संज्ञानात्मक-संवेदनात्मक तथा भौतिक-प्राणिक स्तरों पर समग्र विकास हो ताकि वे सहजता से मध्य स्तर में प्रवेश कर सकें।

कक्षा 3 की यह पाठ्यपुस्तक 'बाँसुरी-1' कला शिक्षा के लिए है और उपरोक्त उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु विकसित की गई है। इस विषय को पहली बार औपचारिक रूप से पाठ्यचर्या में सम्मिलित किया गया है। पाठ्यपुस्तक को *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* और *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* की अनुशंसाओं के अनुरूप तैयार किया गया है। यह पुस्तक आनंदमय शिक्षा के माध्यम से बच्चों को न केवल रचनात्मक अनुसरण की ओर ले जाती है अपितु पंचकोश के पाँचवें हिस्से आनंदमय कोश के विकास में सहायता करती है।

यह पाठ्यपुस्तक बच्चों को न केवल संगीत, दृश्यकला, नाटक और नृत्य की गतिविधियों का आनंद लेने में सक्षम बनाएगी अपितु कला के विषयक्षेत्रों की मूलभूत समझ भी विकसित करेगी।

पुस्तक में दी गई गतिविधियाँ, दृश्य एवं चित्र, एक सर्व समावेशी कक्षा व्यवस्था को ध्यान में रखकर विकसित की गईं हैं। पाठ्यपुस्तक 'बाँसुरी-1' में निहित कला की सामग्री भारत के विभिन्न भागों की विविध सांस्कृतिक परंपराओं और विरासत की अनुभवात्मक यात्रा सुनिश्चित करती है। इसमें विशेष आवश्यकता वाले बच्चे भी सम्मिलित हैं। गतिविधियों में मूल्यांकन के बिंदु अंतर्निहित हैं।

इस स्तर पर बच्चे स्वाभाविक रूप से उत्सुक होते हैं और उनके पास बहुत सारे प्रश्न होते हैं। इसलिए यह पुस्तक उनकी सीखने की मूल उत्सुकता को संबोधित करने के लिए सभी प्रयास करती है तथा खेल और खिलौनो के साथ सीखने की प्रक्रिया को जोड़ती है। इस पुस्तक से सीखना अपने आप में महत्वपूर्ण है, साथ ही यह अपेक्षा है कि बच्चे इस विषय पर बहुत-सी अन्य पुस्तकें भी पढ़ेंगे और सीखेंगे। स्कूलों में पुस्तकालयों को इस संबंध में प्रावधान करने की आवश्यकता है। साथ ही, इस प्रकार से माता-पिता और शिक्षक उन्हें और अधिक सीखने में सहायता करेंगे, ऐसी अपेक्षा है।

इस विश्वास के साथ, मैं यह पुस्तक आरंभिक स्तर के सभी विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए अनुशंसित करता हूँ। मैं इस पाठ्यपुस्तक के विकास में सम्मिलित सभी लोगों का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस उत्कृष्ट प्रयास को साकार किया है और आशा करता हूँ कि यह पुस्तक सभी संबंधित लोगों की अपेक्षाओं को पूरा करेगी।

व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों को निरंतर परिष्कृत करने के प्रति समर्पित राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् आपकी टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में सहायता ली जा सकती है।

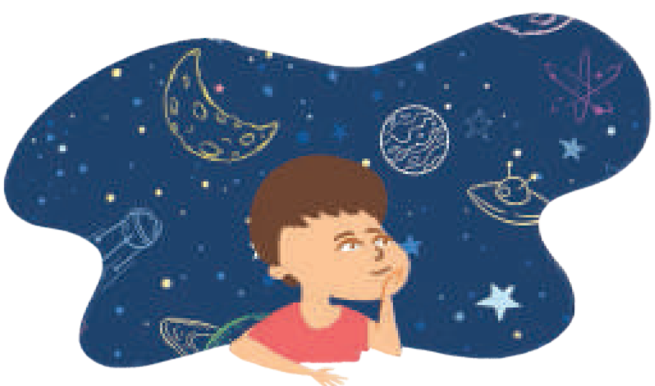

दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली
जून 2024

नमस्ते! शिक्षको एवं अभिभावको

> शिक्षक हमारे समाज के सबसे अनिवार्य और सम्मानित सदस्य हैं, इसलिए शिक्षा नीति शिक्षकों को सभी स्तरों पर पुनर्स्थापित करने में सहायक होनी चाहिए। चूँकि वे अगली पीढ़ी के नागरिक तैयार करते हैं, इसलिए शिक्षा नीति द्वारा शिक्षकों को सशक्त बनाने हेतु हर संभव प्रयास करना चाहिए और उन्हें उनका कार्य प्रभावशाली ढंग से करने में सहायता प्रदान करनी चाहिए।
>
> —राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, परिचय

आपके हाथों में कक्षा 3 की कला पाठ्यपुस्तक 'बाँसुरी-1' है। कक्षा 3 की पाठ्यपुस्तक 'बाँसुरी-1' *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* और *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा 2023* के आधार पर विकसित की गई है। इनका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सभी बच्चे पाठ्यचर्या लक्ष्यों को प्राप्त करें। इसके साथ-साथ सीखने के परिणामों के आधार पर एक पाठ्यक्रम विकसित किया गया है। *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.-एस.ई.)* ने कक्षा 10 तक कला के अनिवार्य पाठ्यक्रम विषयों में से एक के रूप में अनुशंसा की है और यह भी अनुशंसा की है कि स्कूल कला के लिए शैक्षणिक सत्र में कम से कम 100 घंटे देना सुनिश्चित करें, जिसमें कला के चार घटक या क्षेत्र— दृश्य कला, संगीत, नृत्य और अंग संचालन तथा रंगमंच हैं। इस प्रकार पाठ्यपुस्तक 'बाँसुरी-1' को चार इकाइयों में विभाजित किया गया है, जिसमें कुल 20 अध्याय हैं। प्रत्येक अध्याय में कई गतिविधियाँ हैं जिन्हें इस कक्षा के बच्चे आपके सहयोग से आसानी से कर सकते हैं। खोज और रचनात्मकता की इस प्रक्रिया में आपको महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। इस प्रक्रिया को प्रत्येक बच्चा पूरे शैक्षिक सत्र में अनुभव करेगा।

क्या आप जानते हैं?

यह पहली बार है कि कला के लिए एक पाठ्यपुस्तक बनाई गई है जो प्रत्येक विद्यार्थी को व्यक्तिगत और समूह में काम करने, टिप्पणी करने, लिखने, पढ़ने और बहुत-सी गतिविधियाँ करने के अवसर प्रदान करती है। यद्यपि बच्चे विद्यालयी शिक्षा की प्रक्रिया का औपचारिक हिस्सा बनने से पहले ही गायन, नृत्य, अनुकरण और लिखना आदि शुरू कर देते हैं तथापि आपके कुशल मार्गदर्शन में संगीत, रंगमंच, नृत्य और अंग संचालन तथा दृश्य कला विषयों से युक्त एक सार्थक कला कक्षा में सम्मिलित होने का यह उनका पहला अनुभव होगा। बच्चों के समग्र विकास के लिए आवश्यक घटकों में से कला भी एक महत्वपूर्ण घटक है और *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा*

(एन.सी.एफ.-एस.ई.) इसे विद्यालय पाठ्यक्रम में एक उचित स्थान देती है। बच्चे अपने कलात्मक अनुभवों के माध्यम से अनेक मूल्य सीखेंगे, जैसे— समूह में एक साथ काम करना, अपने विचारों और भावनाओं को संप्रेषित करना, कक्षा के अपने सभी साथी विद्यार्थियों को अपनी कलात्मक यात्रा में सम्मिलित करना, एक समावेशी वातावरण में काम करना, अपनी राष्ट्रीय विरासत के प्रति सचेत रहना आदि। सबसे अधिक बढ़कर वे सभी 'बाँसुरी-1' में सुझाई गई गतिविधियों का आनंद लेंगे!

'बाँसुरी' का उपयोग कैसे करें?

यह पाठ्यपुस्तक चार इकाइयों में विभाजित की गई है और इसे बच्चे आसानी से समझ सकें, इसलिए प्रत्येक इकाई को एक अलग रंग दिया गया है। बच्चों को आरंभ में ही बताया जा सकता है कि नीचे दिए गए रंग किस कला के लिए हैं—

- **पीला** दृश्य कला के लिए है
- **नीला** संगीत के लिए है
- **गुलाबी** नृत्य और अंग संचालन के लिए है
- **बैंगनी** रंगमंच के लिए है

पाठ्यपुस्तक की चारों इकाइयाँ अलग-अलग हैं, लेकिन साथ ही इनमें समानताएँ भी हैं। प्रत्येक इकाई कला के उस रूप के बारे में एक परिचय के साथ शुरू होती है जिसे सीखने वाला अनुभव करेगा। आपके लिए गतिविधियों को व्यवस्थित करने, संसाधनों की खोज करने के लिए प्रत्येक अध्याय के क्यू.आर. कोड विशेष रूप से लगाए गए हैं, जिनको स्कैन करके आप अतिरिक्त संसाधनों तक पहुँच सकते हैं। यदि आपकी पहुँच इंटरनेट तक नहीं है तो ऐसे में आप या तो बच्चों को कला प्रदर्शन स्थलों पर ले जा सकते हैं या स्थानीय कलाकारों, लोक संगीतकारों, नर्तकों एवं अन्य कलाकारों को बच्चों के साथ अंत:क्रिया करने के उद्देश्य से विद्यालय में आमंत्रित कर सकते हैं। कई अभिभावक और

समुदाय के अन्य सदस्य जो किसी कला में पारंगत हैं, वे बच्चों के सामने उस कला का प्रदर्शन करने हेतु सहमत हो सकते हैं। विद्यालयों में कलाकारों आदि के साथ वार्ता सत्रों का आयोजन किया जा सकता है, जिनमें बच्चों को प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है, यह बच्चों के लिए प्रेरणाप्रद होगा। बच्चे अपने आस-पास, प्रकृति एवं दैनिक गतिविधियों का अवलोकन करें, इसके लिए आप उन्हें कक्षा से बाहर विद्यालय परिसर में ले जाएँ। नाटक, नृत्य-प्रदर्शन, संगीत समारोह और कला प्रदर्शनी आदि देखने के लिए शैक्षणिक यात्राओं का आयोजन करने से बच्चों को प्रेरित करने में सहायता मिलती है। इस पाठ्यपुस्तक में अनेक गतिविधियाँ सुझाई गई हैं, आप इसमें अन्य गतिविधियों को भी समावेशित कर सकते हैं, जिनमें विषय के अनुरूप उपलब्ध स्थानीय सामग्री और संसाधनों का उपयोग किया जा सकता है।

आपकी समय-सारिणी इस तरह से तैयार की जानी चाहिए कि बच्चों को प्रत्येक सप्ताह आवंटित सभी चार कला रूपों के लिए निर्दिष्ट कालांशों का अवसर प्राप्त हो। जहाँ भी संभव हो बच्चों के लिए गतिविधियाँ करने के लिए एक कालांश या दो संयुक्त कालांश रखे जा सकते हैं क्योंकि सभी गतिविधियाँ काफी आकर्षक एवं आनंददायक होती हैं। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* सभी विषयों को समान महत्व प्रदान करती है, जिसमें कला भी सम्मिलित है। इसलिए अभिभावकों से अनुरोध है कि वे घर पर बच्चों को कला गतिविधियाँ करने पर हतोत्साहित न करें। शिक्षकों और विद्यालयों को यह सुनिश्चित करना होगा कि समय-सारिणी में कला विषय को प्रदान किए गए समय का उपयोग अन्य विषयों के लिए न किया जाए।

प्रत्येक कला कक्षा की शुरुआत से पहले बच्चे केवल आँख बंद करके पिछली कक्षा में क्या किया गया, उस पर ध्यान दे सकते हैं। कक्षा के अंतिम 10 मिनट चर्चा के लिए रखे जा सकते हैं। उदाहरण के लिए रंगमंच इकाई में सुझाव दिया गया है, शिक्षक सभी बच्चों के साथ बैठकर बातचीत करें, परंतु इस समय यह चर्चा बच्चों के लिए अनौपचारिक होती है। इस समय शिक्षक बच्चों से टिप्पणियाँ ले सकते हैं, जिन्हें वे अगली पाठ्य योजनाओं में सम्मिलित कर सकें।

विभिन्न अवधारणाओं पर बच्चों की समझ विकसित करने के लिए समग्र अधिगम वातावरण प्रदान करने का भाव पाठ्यपुस्तक और शिक्षणशास्त्र में पूर्ण रूप से प्रतिबिंबित होता है। शिक्षक उन्हें समूह में या व्यक्तिगत रूप से कार्य करने में सक्षम बनाने हेतु सहायता करें, जिससे बच्चों को विभिन्न प्रकार के कौशल विकसित करने में सहायता मिल सके। यह प्रक्रिया पुस्तक के सभी चार कला रूपों के लिए लगातार चलती रहे। बच्चों को अपने आस-पास की वस्तुओं का अवलोकन करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। साथ ही वे कक्षा में जो कुछ करते हैं, उसका अभ्यास व कला कार्य को घर पर भी जारी रखें।

अपने अवलोकन और चर्चाओं के माध्यम से एक बच्चे में योग्यता और कौशल विकास के स्तर की प्रगति को चिह्नित करने के लिए आकलन के उपाय भी सुझाए गए हैं। कला में उत्तीर्ण या अनुत्तीर्ण के पैमाने का उपयोग न किया जाए, इस स्तर पर कुछ भी अच्छा या बुरा नही हैं, सुधार की संभावना सदैव बनी रहती है और बच्चों को अवधारणाओं की समझ के साथ गतिविधियों को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। शिक्षा उनके लिए एक लंबी यात्रा है और हर बच्चा भिन्न है, उनके कौशल और अभिव्यक्ति के तरीके भी भी भिन्न हैं और यह भिन्नता ही उनके बालपन की सुंदरता है। उनके प्रदर्शन की तुलना कक्षा में किसी से नहीं की जानी चाहिए, अपितु सुधार लाने हेतु उनकी प्रतिस्पर्धा स्वयं से होगी।

कला कक्षा के लिए आपको क्या-क्या चाहिए?

सभी कला गतिविधियों के लिए आपको प्रकाशयुक्त स्थान की आवश्यकता होती है जो कक्षा के अंदर या बाहर हो सकता है, जहाँ बच्चे मुक्त रूप से कला संबंधी गतिविधियाँ कर सकें। आपको रंगमंच में आवश्यक वस्तुओं के लिए सुलभ सामग्री, कला सामग्री, उपकरण और मूलभूत स्टेशनरी, सामग्री को सुरक्षित रूप से संग्रहीत करने के लिए स्थान, साथ ही व्यवस्थित तरीके से विद्यार्थियों की कलाकृति को प्रदर्शित और साझा करने के लिए प्रदर्शन पटल, कंप्यूटर, प्रोजेक्टर, स्पीकर और

संगीत वाद्ययंत्रों आदि की आवश्यकता होगी। सुनिश्चित करें कि वस्तुओं का उपयोग उचित प्रकार से किया जा रहा है और ये स्थानीय रूप से उपलब्ध हैं।

हम आशा करते हैं कि यह पाठ्यपुस्तक प्रत्येक शिक्षक और अभिभावक के लिए उपयोगी, रोचक और संसाधनपूर्ण सिद्ध होगी। यह प्रत्येक कला कक्षा को रोमांचक बनाएगी और उसका विस्तार करते हुए उसके अन्य आयामों को खोलेगी। हम इस पुस्तक को अधिक सफल बनाने के लिए आपके सुझावों और प्रतिक्रियाओं का स्वागत करते हैं, जो पुस्तक की संरचना और सामग्री को बेहतर करने में सहायता प्रदान करेंगे। यह पाठ्यपुस्तक दृश्य कलाओं और प्रदर्शन कलाओं को प्रत्येक बच्चे के विकास की प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग बनाने, उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने, उन्हें भावनात्मक रूप से सशक्त बनाने और संतुलित नागरिक बनने के लिए कौशल विकसित करने का एक निरंतर प्रयास है।

ज्योत्स्ना तिवारी
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री समिति (एन.एस.टी.सी.)

महेश चंद्र पंत, *कुलाधिपति*, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान (**अध्यक्ष**)

मञ्जुल भार्गव, *प्रोफेसर*, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी (**सह-अध्यक्ष**)

सुधा मूर्ति, प्रतिष्ठित लेखिका एवं शिक्षाविद

बिबेक देबरॉय, *अध्यक्ष*, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (ई.ए.सी.-पी.एम.)

शेखर मांडे, *पूर्व महानिदेशक*, सी.एस.आई.आर. एवं *प्रतिष्ठित प्रोफेसर,* सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

सुजाता रामदोरई, *प्रोफेसर*, ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय, कनाडा

शंकर महादेवन, संगीत विशेषज्ञ, मुंबई

यू. विमल कुमार, *निदेशक*, प्रकाश पादुकोण बैडमिंटन अकादमी, बेंगलुरू

मिशेल डैनिनो, *विजिटिंग प्रोफेसर*, आई.आई.टी. गांधीनगर

सुरीना राजन, *आई.ए.एस.* (सेवानिवृत्त), हरियाणा एवं *पूर्व महानिदेशक*, एच.पी.ए.

चामू कृष्ण शास्त्री, *अध्यक्ष*, भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय

संजीव सान्याल, *सदस्य*, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (ई.ए.सी.-पी.एम.)

एम.डी. श्रीनिवास, *अध्यक्ष*, सेंटर फॉर पॉलिसी स्टडीज, चेन्नई

गजानन लोंढे, हेड, प्रोग्राम ऑफिस, एन.एस.टी.सी.

रेबिन छेत्री, *निदेशक*, एस.सी.ई.आर.टी., सिक्किम

प्रत्यूष कुमार मंडल, *प्रोफेसर,* सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

दिनेश कुमार, *प्रोफेसर,* योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

कीर्ति कपूर, *प्रोफेसर,* भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

रंजना अरोड़ा, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली (**सदस्य-सचिव**)

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष

शंकर महादेवन, *सदस्य*, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, कला शिक्षा एवं *संगीत विशेषज्ञ*, मुंबई

योगदान

अनुतोष देब, *सदस्य*, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, कला शिक्षा एवं *टी.जी.टी.*, आर्ट्स, (सेवानिवृत्त), केंद्रीय विद्यालय, गुवाहाटी

आराधना गुप्ता, *सदस्य*, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, कला शिक्षा

गोविंदराजु भारद्वाज, *सदस्य*, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, कला शिक्षा और *निदेशक* एवं *प्रोफेसर*, स्कूल ऑफ परफॉरमिंग एंड विजुअल आर्ट्स, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

चिंथु साची, *सदस्य*, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, कला शिक्षा

प्रियदर्शिनी घोष, *विशेषज्ञ*, नृत्य कला

फणींद्र शर्मा, *परामर्शदाता*, प्रोग्राम ऑफिस, एन.एस.टी.सी.

बिंदु सुब्रमण्यम, *सदस्य*, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, कला शिक्षा

बिदिशा हाजरा, *असिस्टेंट प्रोफेसर*, संगीत, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर

मालविका राजनारायण, *विशेषज्ञ*, दृश्य कला शिक्षा

राजश्री एस.आर., *वरिष्ठ परामर्शदाता*, प्रोग्राम ऑफिस, एन.एस.टी.सी.

रिम्सी खन्ना, *असिस्टेंट प्रोफेसर*, कॉलेज ऑफ आर्ट्स, दिल्ली विश्वविद्यालय

शर्बरी बैनर्जी, *सदस्य*, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, कला शिक्षा एवं *असिस्टेंट प्रोफेसर*, कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

श्रीधर रंगनाथन, *सदस्य*, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, कला शिक्षा

समीक्षक

अनुराग बेहर, *सदस्य*, एन.ओ.सी.

मञ्जुल भार्गव, *सह-अध्यक्ष*, एन.एस.टी.सी

संध्या पुरेचा, *सदस्य*, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, कला शिक्षा एवं *अध्यक्ष*, संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली

अनुवाद एवं अनुवाद समीक्षा समिति

अरुणाभ सौरभ, *असिस्टेंट प्रोफेसर*, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

अशेष उपाध्याय, *टी.जी.टी.*, संगीत, प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

दिनेश वशिष्ट, *संपादक*, हिंदी (संविदा), प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प.

मधुसूदनन पी.वी., *असिस्टेंट प्रोफेसर*, कला शिक्षा, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

राम झलक यादव, *असिस्टेंट प्रोफेसर* (संविदा), क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

शुभम वर्मा, *पी.जी.टी.* (संविदा), चित्रकला, प्रायोगिक विद्यालय, भोपाल

श्रुति अधिकारी, *पी.जी.टी.*, संगीत, प्रायोगिक विद्यालय, भोपाल

सुचिता राउत, *पी.जी.टी.* एवं *विभागाध्यक्ष*, कला विभाग, दिल्ली पब्लिक स्कूल, नीलबड़, भोपाल

सुषमा श्रीवास्तव, सेवानिवृत्त *उप प्रधानाध्यापक*, प्रायोगिक विद्यालय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

सदस्य समन्वयक

ज्योत्स्ना तिवारी, *सदस्य समन्वयक*, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, कला शिक्षा और *प्रोफेसर* एवं *विभागाध्यक्ष*, कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

विषय समन्वयक - श्रीमती प्रीति सिंह

अनुकूलन समूह - श्रीमती मधुदानी, लखेश्वर साहू, द्रोण कुमार सार्वा, दिव्या सिंह परिहार, रुद्रप्रताप सिंह

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर
अनुकूलन समूह

संयोजक - व्ही.के तिवारी, कौस्तुभ चटर्जी, डॉ.ललित साहू

संपादन सहयोग- दानीराम वर्मा (से.नि.प्राचार्य), डॉ.आर.एस.चौहान (से.नि.प्राचार्य), डॉ.ओ.पी.मिश्रा (सचिव, राज्य शिक्षा आयोग), बी.आर.साहू (पूर्व फैकल्टी एस.सी.ई.आर.टी. भाषाविद्)

विषय समन्वयक - प्रीति सिंह

सहयोग- डॉ.पुरुषोत्तम चंद्राकर, डॉ.पीसीलाल यादव, सीताराम साहू, अशोक तिवारी, राकेश तिवारी

राज्य शिक्षा स्थायी समिति

क्रं	नाम व पदनाम	
1.	श्री आलोक चक्रवाल, कुलपति गुरु घासीदास केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर	**अध्यक्ष**
2.	संचालक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर	**सदस्य सचिव**
3.	संचालक, लोक शिक्षण संचालनालय, छत्तीसगढ़	**सदस्य**
4.	मिशन संचालक, समग्र शिक्षा, रायपुर, छत्तीसगढ़	**सदस्य**
5.	डॉ. वासुदेव साहसी, सहा.प्रा., शा.जे. योगानंदम छ.ग. महाविद्यालय, रायपुर	**सदस्य**
6.	डॉ. सुभाष चन्द्राकर, प्राध्या., दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर	**सदस्य**
7.	श्री मनीष देवांगन, वि.खं. शिक्षा अधिकारी, कार्या. धरसींवा, जिला-रायपुर	**सदस्य**
8.	श्री नरेन्द्र सिंह राजपूत, सहा. शिक्षक, प्राथ. विद्या. सिवनी खुर्द (बोडला), जिला-कबीरधाम	**सदस्य**
9.	श्री मनोज सिंह, शा. शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर	**सदस्य**
10.	श्री दिलीप केसरवानी, पूर्व प्राचार्य, कबीर नगर, रायपुर	**सदस्य**

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा निरीक्षण समिति (एन.सी.एफ.ओ.सी.) के सम्मानीय अध्यक्ष और सदस्यों, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह (सी.ए.जी.) कला के अध्यक्ष और सदस्यों एवं अन्य संबंधित पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह के उन सभी सदस्यों का आभार ज्ञापित करती है, जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण तथा इसके विभिन्न विषयों को अंतिम रूप देने में अपना मार्गदर्शन एवं सहयोग प्रदान किया है।

इस पाठ्यपुस्तक में जेंडर एकीकरण, समावेशन, मूल्यांकन आदि की समीक्षा के लिए परिषद् अपने संकाय के वरिष्ठ सदस्यों, सुनीति सनवाल, *प्रोफ़ेसर* एवं *विभागाध्यक्ष*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग; इंद्राणी भादुड़ी, *प्रोफ़ेसर* एवं *अध्यक्ष*, शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग; विनय सिंह, *प्रोफ़ेसर* एवं *विभागाध्यक्ष*, विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग; मिली रॉय, *प्रोफ़ेसर* एवं *विभागाध्यक्ष*, जेंडर अध्ययन विभाग के प्रति आभारी है।

पाठ्यपुस्तक के निर्माण के लिए परिषद् सिद्धि गुप्ता, *संकाय सदस्य*, सृष्टि मनिपाल यूनिवर्सिटी ऑफ आर्ट, डिजाइन एंड टेक्नोलॉजी, बेंगलुरू; सुधनवा ए.के., *निदेशक*, नव क्षितिज एवं *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, रेवा यूनिवर्सिटी, बेंगलुरू; दीपा श्रीधर, *निदेशक*, शंकर महादेवन अकादमी; विदुषी ज्योति भट, भरतनाट्यम इंस्ट्रक्टर, पुरनापारामति, बेंगलुरू द्वारा प्रदान किए गए सहयोग के लिए उनके प्रति भी आभार ज्ञापित करती है।

हम उन संस्थानों, संगठनों, व्यक्तियों का भी आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने हमें इस पुस्तक के लिए उपयोगी लिखित सामग्री, चित्र, छायाचित्र, ऑडियो-वीडियो सामग्री आदि संसाधन प्रदान किए। इनमें राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली; नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट, नई दिल्ली; नेशनल क्राफ्ट म्यूजियम एवं हस्तकला अकादमी, नई दिल्ली; सेंटर फॉर कल्चरल रिसर्च एंड ट्रेनिंग, नई दिल्ली; दस्तकारी हाट समिति, नई दिल्ली; सेंट्रल चिन्मय मिशन ट्रस्ट, सी.सी.एम.टी.; सुब्रमण्यम एकेडमी ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्स; शंकर महादेवन म्यूजिक अकादमी, सुनाद, बेंगलुरू; चिल्ड्रन्स

लिटल थिएटर, कोलकाता; व्योम आर्ट्स्पेस एंड स्टूडियो थियेटर, बेंगलुरू; सुनीता कंविंदे, नई दिल्ली और अनुतोष देब, *टी.जी.टी.* (सेवानिवृत्त), केंद्रीय विद्यालय संगठन, गुवाहाटी क्षेत्र सम्मिलित हैं। हम केंद्रीय विद्यालय, सेक्टर 2, आर.के. पुरम, नई दिल्ली; केंद्रीय विद्यालय, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली और केंद्रीय विद्यालय, डोगरा लाइन्स, मेरठ के प्रधानाचार्यों का भी आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने बच्चों की कलाओं के चित्र, कला-प्रदर्शन करते बच्चों के चित्र आदि उपलब्ध कराकर हमें सहयोग प्रदान किया है। परिषद् पुस्तक के डिजाइन और ले-आउट के लिए रीतू टोपा, आर्ट क्रिएशन्स की आभारी है।

परिषद् इस पुस्तक के संपादन के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के प्रकाशन प्रभाग के सदस्यों दिनेश वशिष्ट, *संपादक* (संविदा); राहुल सेमवाल, *सहायक संपादक* (संविदा); अभिजीत प्रसाद, *हिंदी प्रूफ रीडर* (संविदा); पांडुलिपि को आकार देने और पुस्तक का स्वरूप प्रदान करने के लिए पवन कुमार बरियार, *प्रभारी*, डी.टी.पी. प्रकोष्ठ और अजय कुमार प्रजापति, *डी.टी.पी. ऑपरेटर* (संविदा) के प्रयासों की भी सराहना करती है।

प्यारे बच्चो

आप अपने हाथों में अपनी कला की पाठ्यपुस्तक 'बाँसुरी-1' लिए हुए हैं। हम आशा करते हैं कि आप इसका भरपूर आनंद लेंगे। यह आपको रचनात्मकता की अद्भुत यात्रा पर लेकर जाएगी और आपके आस-पास से एक अनोखे ढंग से परिचित कराएगी।

हम यह जानते हैं कि आप में से अधिकतर बच्चे पहले से ही किसी न किसी प्रकार की कला से जुड़े हुए हैं। संभवतया आप उनको कला के विभिन्न रूपों की तरह से नहीं जानते, लेकिन जो आप कर रहे हैं वह कला ही है— नृत्य करना, वाद्ययंत्र बजाना, गोदा-गादी करना, रेखांकन करना, चित्र बनाना, मिट्टी या कागज से नमूने या खिलौने बनाना, गाना, अन्य व्यक्तियों की नकल करना, नाटक करना आदि, जो कलाात्मक गतिविधियों में संलग्न रहते हैं, वे वास्तव में अपने दैनिक जीवन का आनंद लेते हैं।

आप चाहे विद्यालय में हों या घर पर या कहीं जाते हैं तो अपने आस-पास का अवलोकन करना आनंददायी होता है, जैसे— पक्षियों का उड़ना, साइकिल से काम पर जाते हुए लोग, काम के लिए तैयार होती हुई माँ, सुबह उठने से लेकर रात को बिस्तर पर जाने तक आपकी अपनी दिनचर्या की गतिविधियाँ, मैदान में खेलते हुए बच्चों आदि को देखना कितना आनंददायक है! हम प्रकृति के निकट रहते हैं और प्रकृति हमारी कलाओं के लिए प्रेरणा का सबसे बड़ा स्रोत है।

इसलिए बच्चो, अपने चारों ओर देखो, अपने घर, विद्यालय, परिवार, बगीचे, खेल के मैदान में, यात्रा करते समय सड़क के किनारे, जहाँ भी तुम जाओ, तुम्हें कला दिखाई देगी। कभी प्रकृति द्वारा बनाई गई और कभी-कभी, मनुष्यों द्वारा बनाई गई। इन्हें देखकर आप आनंदित हो उठेंगे!

क्या आप जानते हैं कि मानवता के आरंभ से ही मनुष्य बहुत रचनात्मक रहा है। इससे पहले कि मनुष्य बोलना या लिखना शुरू करते, वे आपकी तरह दीवारों पर चित्रकारी करते, गाते

और नृत्य करते थे। विशेषकर हमारे भारत देश में कला-संस्कृति की समृद्ध विरासत रही है— दृश्यकला से लेकर काव्य एवं संगीत, नृत्य, रंगमंच आदि। इनकी नींव हजारों वर्ष पुरानी है, जिसका संबंध कई अन्य विषयों से हैं। कला किसी न किसी रूप में हमारे चारों ओर विद्यमान है और हम सभी रचना, प्रदर्शन, अवलोकन और अनुभव द्वारा कला का आनंद लेते हैं। कला में ऐसी सुंदरता है जो हमारे जीवन को सुंदर बनाती है और हमें आनंद देती है। साथ ही, हमारे भीतर हमेशा एक छोटा-सा कलाकार होता है, जो अनुभव करने, प्रदर्शन करने या कुछ सृजन करने के लिए उत्सुक रहता है।

बाँसुरी-1 में चार कला रूप हैं और ऐसी कई मनोरंजक गतिविधियाँ हैं जिनके माध्यम से आप इन कला रूपों को सीखेंगे—

1. दृश्य कला में आपको रेखांकन, चित्रकला, काटना, चिपकाना आदि गतिविधियाँ करने, मिट्टी, रंग, प्राकृतिक वस्तुओं आदि जैसी सामग्रियों के साथ खेलने में आनंद आएगा।
2. संगीत में आपको देश के अलग-अलग भागों और विभिन्न भाषाओं के गीतों को गाने और वाद्ययंत्रों को बजाने का अवसर मिलेगा। आप संगीत और वाद्ययंत्रों के बारे में जानेंगे।
3. नृत्य और अंग संचालन में आप मुक्त रूप से शरीर को हिलाने-डुलाने, थिरकने, धुनों और गीतों पर विभिन्न शारीरिक गतिविधियों का आनंद लेंगे। इसके साथ-साथ हाथों और पैरों की विभिन्न मुद्राओं के बारे में भी जानेंगे।
4. रंगमंच भाग में नाटक आपको निश्चित रूप से पसंद आएगा। इसमें विदूषक आपको अभिनय, मंच, सहायक सामग्री और अन्य कई यात्राओं पर ले जाएगा।

इसलिए, आइए बच्चो, कला का अन्वेषण करें। इस कला यात्रा का आनंद लें और अपने मित्रों, शिक्षकों और परिवार के साथ प्रतिदिन कुछ नया बनाएँ, गाएँ और दिखाएँ।

विषय-सूची

आमुख .... *v*

नमस्ते! शिक्षको एवं अभिभावको .... *vii*

प्यारे बच्चो .... *xvii*

दृश्य कला

1. कला एवं वस्तुएँ 3
2. कला एवं पेड़-पौधे 12
3. कला एवं जीव-जंतु 22
4. हमारे आस-पास के लोग 30
5. त्यौहार, उत्सव और समारोह 35

संगीत

6. हमारा राष्ट्रगान 43
7. लय का अनुभव करें– त क त कि ट 45
8. विभिन्न गीत गाएँ 58
9. वाद्ययंत्र 64
10. उत्सव मनाएँ..................... 71

नृत्य और अंग संचालन

11. आइए, नृत्य करें 82

12. आनंद के लिए नृत्य 88

13. आइए, नृत्य करते हुए खेलें 93

14. प्रकृति के साथ नृत्य 98

रंगमंच

15. आइए, पता लगाएँ 107

16. कल्पना करें 118

17. आइए, सृजन करें 124

18. आस-पास देखें 128

19. गतिविधियाँ 135

20. कला-विधाओं का एकीकरण 137

दृश्य कला

शिक्षकों के लिए

- विद्यार्थियों के बैठने एवं कार्य करने हेतु पर्याप्त प्रकाश युक्त और हवादार स्थान सुनिश्चित करें।
- विद्यार्थियों के कार्यों को प्रदर्शित और साझा करने के लिए प्रदर्शन बोर्ड लगाएँ। विद्यार्थियों के कार्य नियमित रूप से बदलते रहें ताकि उन्हें प्रोत्साहन मिल सके।
- विद्यार्थियों को अपने विचारों, कल्पनाओं, भावनाओं और जिज्ञासा व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करें और उनके कार्य में उनकी रचनात्मकता और सरलता को प्रतिबिंबित होने दें।
- विद्यार्थियों को कक्षा में खोज एवं प्रयोग करने के अवसर उपलब्ध कराएँ और उन्हें अपने विचारों के आदान-प्रदान करने वाली गतिविधियों के लिए प्रोत्साहित करें।
- कार्य समाप्त होने पर सफाई करने एवं उपयोग की गई सामग्री वापस रखने, कला सामग्री के उचित रख-रखाव और देख-रेख की आदतें विकसित करें।
- विद्यार्थियों को घर पर अपनी गतिविधियों की चर्चा करने के लिए प्रोत्साहित करें ताकि वे कला एवं संस्कृति सीखें और उसके अभ्यास में अपने माता-पिता को भी सम्मिलित कर सकें।

1 कला एवं वस्तुएँ

हम अपने आस-पास भिन्न-भिन्न प्रकार की वस्तुएँ देखते हैं। इनका उपयोग हम प्रतिदिन विद्यालय, घर आदि में सजावट के लिए करते हैं। अलग-अलग सामग्री से बनी इन वस्तुओं की बनावट अनोखी होती है।

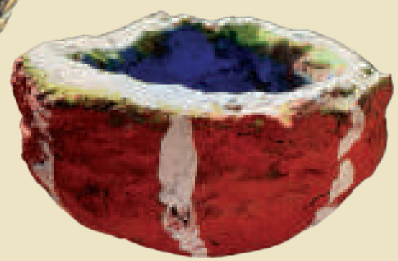

0338CH01

आप इस अध्याय के पश्चात चित्र बनाने, रंग भरने, मिट्टी के काम और सरल शिल्प बनाने में सक्षम होंगे। आप इस प्रक्रिया में विभिन्न प्रकार के **आकारों, रूपों, रंगों** और भौतिक वस्तुओं की सराहना करना भी सीखेंगे।

गतिविधि 1 आइए, रेखाओं के साथ खेलें

कलम से आड़ी-तिरछी रेखाएँ खींचें और रेखाओं को विभिन्न दिशाओं में जाने दें। कुछ रेखाओं को तेजी से और कुछ को बहुत धीमी गति से खींचें।

- मोटी एवं गहरी रेखाएँ खींचने के लिए कलम पर थोड़ा दबाव डालें।
- पतली और हल्की रेखाएँ खींचने के लिए कम दबाव दें।

निम्नलिखित रेखाओं का अभ्यास करें —

लहरदार रेखाएँ

टेढ़ी-मेढ़ी रेखाएँ

बिंदुदार रेखाएँ

टूटी रेखाएँ

खड़ी रेखाएँ

पड़ी रेखाएँ

तिरछी रेखाएँ

घुमावदार रेखाएँ

गतिविधि 2 अपने आस-पास की वस्तुओं के चित्र बनाइए और उनमें रंग भरिए

अपने आस-पास की कुछ वस्तुओं को देखें और छुएँ। उनकी रेखाओं, आकारों और रंगों को देखिए। किन्हीं तीन वस्तुओं के चित्र बनाइए, जो आकार में भिन्न हों और उनमें रंग भरिए।

अभ्यास करें— घर में उपलब्ध वस्तुओं के चित्र बनाइए और रंग भरिए। कागज, श्यामपट्ट या कला पुस्तिका में और भी चित्र बनाइए।

अपने घर में उपयोग की जाने वाली विभिन्न वस्तुओं को बनाएँ एवं उनमें रंग भरें। विभिन्न **आकार और आकृतियों** की वस्तुएँ ढूँढ़िए जिनका उपयोग नीचे दिए गए कार्यों में किया जाता है—

- खाना पकाना
- घर के काम करना
- पढ़ना
- सोना
- खेलना

इनमें से कुछ के चित्र बनाइए और रंग भरिए। इन चित्रों को अपने सहपाठियों के साथ साझा कीजिए।

गतिविधि 3 छापना, काटना और अतिच्छादन करना

इस गतिविधि को हम तीन विभिन्न प्रकार की वस्तओं, जैसे— पत्तियों, छोटी वस्तुओं और अमूर्त आकृतियों का उपयोग करके कर सकते हैं।

चरण 1

ऐसी तीन वस्तुओं का चयन करें और उनका चित्र बनाएँ, जिन्हें आपने पहले बनाया हो।

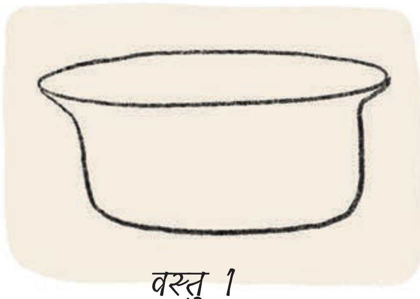

वस्तु 1

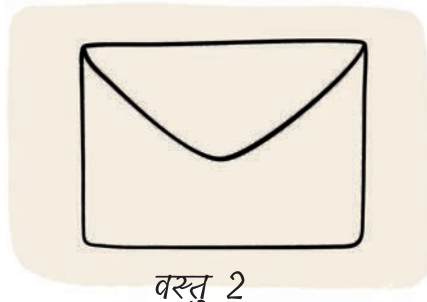

वस्तु 2

वस्तु 3

चरण 2

अपने चित्रों के ऊपर किसी पतले कागज को रखें और तीनों चित्रों की अलग-अलग प्रतियाँ बनाएँ।

शिक्षक संकेत

- छापने की क्रिया से हाथ की गति और पेंसिल पर पकड़ सशक्त होती है।
- अतिच्छादन करने से नए आकार बनाने और रंग भरने में मदद मिलती है।

चरण 3

प्रतियों को काटकर अलग कर लीजिए।

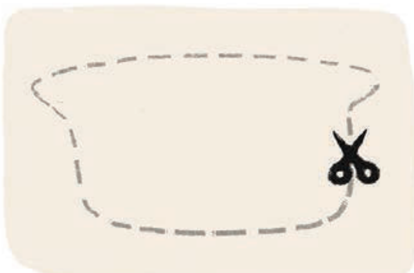

चरण 4

इन प्रतियों में से एक के आकार की बाहरी रेखा बनाएँ।

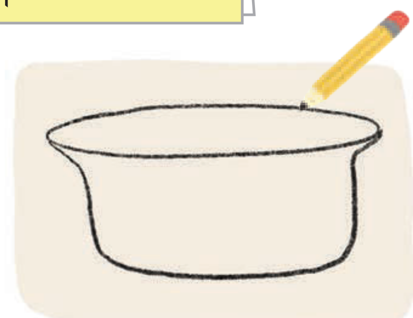

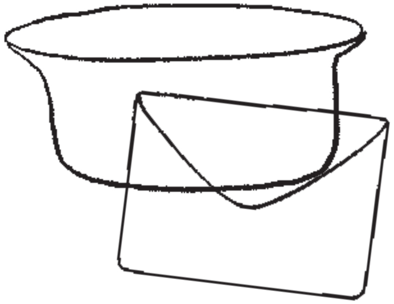

चरण 5

दूसरी प्रति की आकृति को, पहले चित्रित आकार पर अतिच्छादित करते हुए रखें और अब बाहरी रेखाकृति बनाएँ।

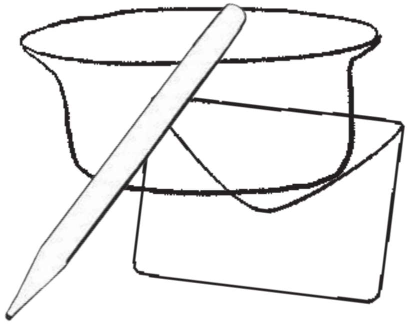

चरण 6

अब तक बने हुए आकार पर पुन: एक और काटे गए आकार को रखकर इसकी रेखाकृति बनाएँ।
वाह! आपने एक नई आकृति बना ली है। इस प्रक्रिया को दोहराएँ।

चरण 7

प्रत्येक आकार में **लाल**, **पीला** और **नीला** अलग-अलग रंग भरें।
आप जलरंगों का प्रयोग कर सकते हैं।
वाह! अतिच्छादित आकार में आप तीन नए रंग देखेंगे।

चरण 8

कार्य को पूर्ण करने के पश्चात स्थान को स्वच्छ करें।

गतिविधि 4 एक बोतल का चित्र बनाएँ एवं उसके आकार से खेलें

मैं बोतल का ढक्कन हूँ।

मैं अनुमान लगाता हूँ कि आप मेरा आकार जानते हैं।

मेरी बोतल खो गई है।

क्या आप मेरे लिए बोतल का एक चित्र बना सकते हैं?

आपने जो बोतलें देखी हैं, उससे अलग बोतल का चित्र बनाएँ।

नहीं तो मुझे पता नहीं चलेगा कि मेरी कौन-सी बोतल है!

अगर आप दो चित्र बनाएँगे तो मेरे मित्र को भी खुशी होगी!

गतिविधि 5 मिट्टी के साथ खेलें

क्या आपको मिट्टी से खेलना आनंददायक नहीं लगता? मिट्टी से अलग-अलग **आकारों** और **आकृति** की वस्तुएँ बनाई जा सकती हैं।

अपने आस-पास उपलब्ध वस्तुओं को मिट्टी से बनाएँ। आप उनमें कुछ नई विशेषताएँ जोड़ें और उन्हें अपने मित्रों को दिखाएँ।

उन्हें एक छोटी-सी बारीक डंडी से बिंदु और रेखाएँ बनाते हुए सजाएँ।

उन्हें पूरा करें और स्वयं बनाई गई वस्तुओं को अलग-अलग नाम दें। वस्तुएँ बनाने के बाद हाथ धोना और अपने स्थान को स्वच्छ करना न भूलें।

क्या आप जानते हैं?

भारतीय संगीत में मिट्टी के घड़े का उपयोग संगीत में वाद्ययंत्र की तरह किया जाता है। इसे 'घटम' के नाम से जाना जाता है।

अभ्यास करें— किसी स्थानीय संग्रहालय, शिल्प मेले या कुम्हार के पास जाएँ। आप वहाँ विभिन्न प्रकार की मिट्टी की वस्तुएँ देखेंगे। आप उनमें से अपनी पसंद की वस्तु का चित्र बनाएँ। आपको आनंद आएगा।

गतिविधि 6 मिट्टी के बर्तन बनाना

1. इन चित्रों में आप किन-किन वस्तुओं को देख रहे हैं?

____

____

2. आपने इन चित्रों में कौन-कौन से आकार और आकृति के बर्तन देखे?

____

____

3. इन चित्रों में लोग क्या कर रहे हैं?

____

____

आप एक बर्तन को सजाने का प्रयास करें!

2 कला एवं पेड़-पौधे

हम अपने आस-पास विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधे देखते हैं। इस अध्याय में आप कहानियों के माध्यम से उनके महत्व को समझ सकेंगे और अपने आस-पास के बाग-बगीचों, मैदानों, जंगलों आदि में सैर करते हुए उनकी सुंदरता का अवलोकन कर सकेंगे। आप प्रकृति से जुड़े अपने इन अनुभवों को अपनी कलाकृतियों के माध्यम से व्यक्त कर सकेंगे।

आप प्रकृति में दिखाई देने वाली अलग-अलग प्रकार की सुंदर **रेखाओं, आकृतियों, रंगों** एवं **स्वरूपों** (पैटर्न) का अवलोकन करेंगे और इन्हें कपड़ों तथा विभिन्न प्रकार की कलाकृतियों में पाए जाने वाले प्रारूप से जोड़ सकेंगे।

आप प्रकृति में पाई जाने वाली वस्तुएँ, जैसे— टहनी, डंडी, बीज, कंकड़, सूखी पत्तियों, फूलों और अन्य वस्तुओं को एकत्रित करके उनके द्वारा कला में विभिन्न प्रयोग कर सकते हैं। इसके माध्यम से आप काल्पनिक चित्रों की रचना भी कर सकते हैं। आप चित्रकला, रंग भरने, शिल्प और प्रारूप गतिविधियों के माध्यम से अपने कपड़ों पर चित्र या नक्शा, ग्रिटिंग कार्ड, पृष्ठ का किनारा आदि बना सकते हैं।

गतिविधि 1 प्रकृति भ्रमण एवं रेखांकन

अपनी कक्षा से बाहर निकलें और पौधों से भरे बाग-बगीचों, खेतों या जंगल के सुरक्षित क्षेत्रों में जाएँ।

वहाँ दिख रहे फूलों, तनों, पेड़ की छालों, कीड़ों, तितलियों, शाखाओं, फलों, बीजों, जड़ों इत्यादि को ध्यान से देखें और उन्हें हल्के से स्पर्श करें! आपको किस प्रकार की **रेखाएँ, आकृतियाँ, रंग** और **संरचनाएँ** दिख रही हैं? उनको स्पर्श करते हुए आपको कैसा लग रहा है?

अपने साथ अपनी कला पुस्तिका या कागज एवं पेंसिल लेकर जाएँ।

गतिविधि 2 प्रकृति का चित्रण

विभिन्न आकर की तीन या चार पत्तियों, फूलों या पक्षियों का रेखांकन करें और उनमें रंग भरें।

अभ्यास करें— स्वयं प्राकृतिक रंग बनाएँ। अपने आस-पास मिलने वाले कुछ फल, सब्जी, फूल या पत्तियों, जड़ों को लें, उन्हें पीसकर थोड़ा पानी मिलाकर देखें कि कौन-सा रंग बनता है!

गतिविधि 3 प्राकृतिक रंग

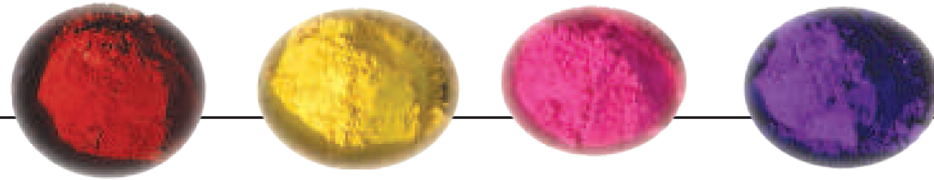

पत्तियों, फलों और फूलों से रंग बनाए जा सकते हैं।

आपकी जीभ का रंग कैसा होता है जब आप ये फल खाते हैं—

चुकंदर

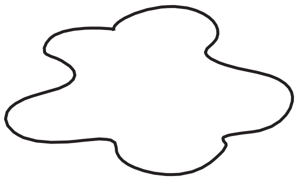

जामुन

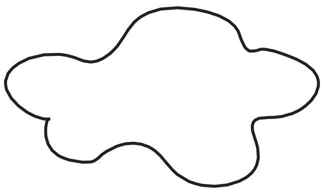

आम

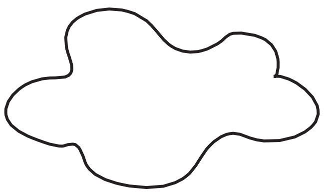

ऊपर दिए गए आकारों में रंग भरें।

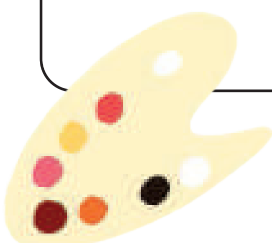

ऊपर दिए गए स्थान में प्राकृतिक रंगों का उपयोग करके एक चित्र बनाएँ।

गतिविधि 4 जालीदार खिड़कियाँ और द्वार

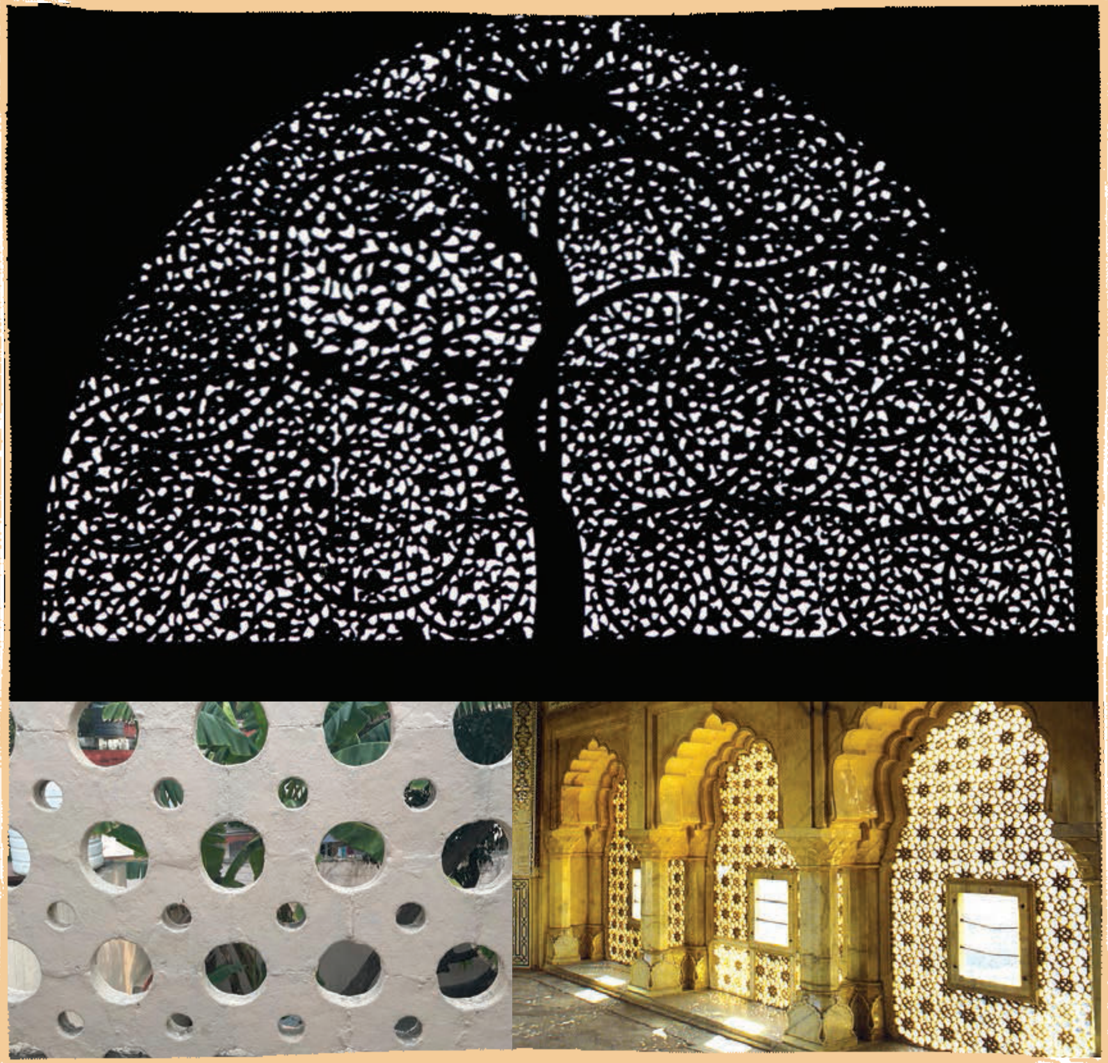

जाली को ग्रिल भी कहा जाता है। कभी-कभी प्राकृतिक या ज्यामितीय आकृतियों के पैटर्न इन जालियों में उकेरे जाते हैं।

आपने अपने आस-पास किस प्रकार की जालियाँ देखी हैं?

____

____

____

____

क्या आपने दरवाजे और खिड़कियों की जालियों की बनावट ध्यान से देखी है?

अभ्यास करें— किसी भवन या स्मारक को देखने जाएँ जिसमें जालियाँ उकेरी गई हों। उन जालियों में बनी विभिन्न आकृतियों का चित्र बनाएँ।

पेंसिल का उपयोग करते हुए दी गई खाली जगह में जालीदार प्रारूप बनाएँ।

गतिविधि 5 स्वयं जाली बनाएँ

इस गतिविधि को करते समय कैंची का उपयोग सावधानी से करें। शिक्षक या बड़ों का सहयोग लें।

जाली बनाते समय अगर आपके मित्र को कागज काटने या मोड़ने में कोई बाधा आ रही हो तो आप उसकी सहायता करें।

चरण 1

एक पुराना समाचार पत्र लें और उसे एक के बाद एक विपरीत दिशा में मोड़ते जाएँ।

चरण 2

उस पर दो या तीन अलग-अलग प्रकार की पत्तियों के आकार बनाएँ।

चरण 3

मोड़े गए कागज को पत्ती का आकार देते हुए काटिए।

चरण 4

मोड़े गए कागज को खोलें, स्वयं बनाई गई जाली को देखें और उसमें रंग भरें।

अब, अपनी बनाई गई जाली का उपयोग स्टैंसिल के रूप में करते हुए एक प्रारूप तैयार करें। उसमें रंग भरें। दिए गए चित्र का उदाहरण देखें।

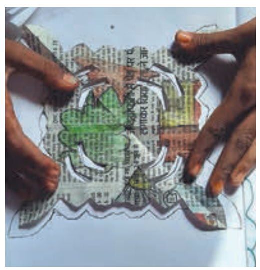

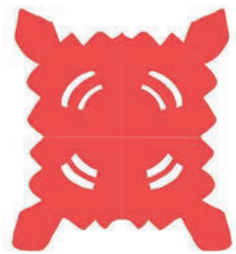

गतिविधि 6 चित्रों में कहानियाँ

क्या आप पेड़ों या पौधों की कोई कहानी जानते हैं? ऐसी एक कहानी का चित्र बनाएँ और उसमें रंग भरें।

शिक्षक संकेत

सभी बच्चों को पेड़, पौधों, जानवरों आदि की कहानी सुनाने के लिए प्रेरित करें।

वस्त्रों, कपड़ों, चित्रों और घर की अन्य वस्तुओं में पौधों के प्रारूप ढूँढ़ें। इन्हें दिए गए स्थान में बनाइए।

गतिविधि 7 पौधों के आकारों के प्रारूप बनाएँ

निम्नलिखित सामग्री लें —
सादा कागज, चार्ट पेपर, पुराने कपड़े, पुराने समाचार पत्र, रंगीन कागज, धागा, प्राकृतिक वस्तुएँ, जैसे– बीज, फूल, भूमि पर गिरी पत्तियाँ या पँखुड़ियाँ और गोंद।

पौधों से फूल और ताजी पत्तियाँ न तोड़ें!

अपने शिक्षक एवं सहपाठियों के साथ अपने विचार एवं चुनी हुई सामग्रियों पर चर्चा करें। आप अभिनंदन-पत्र या कागज पर किनारा बना सकते हैं।

3 कला एवं जीव-जंतु

0338CH03

हमारे आस-पास अलग-अलग प्रकार के पशु-पक्षी एवं कीड़े-मकोड़े रहते हैं। कुछ हमें आकाश में दिखते हैं, कुछ पानी में, कुछ भूमि पर और कुछ भूमि के अंदर भी।

जीव-जंतुओं का निरीक्षण करके आप उनके आकार, आकृति, रंग पोत (टेक्स्चर), उनके शरीर पर बने विशेष चिह्नों और पैटर्न को पहचान सकेंगे। विभिन्न कहानियों में दिए गए जीव-जंतुओं के अलग-अलग प्रकार के आवास स्थानों को चित्रों द्वारा दिखाएँ। आपको अपनी कल्पना से कलाकृतियों की रचना करते हुए आनंद का अनुभव होगा। इसके उपरांत आप विभिन्न कला सामग्रियों और तकनीकों का उपयोग कर इन जीव-जंतुओं की कलाकृतियाँ बनाएँ।

गतिविधि 1 जीव-जंतु की कहानी बनाइए

किसी एक जीव-जंतु की कहानी की कल्पना करें एवं उसका चित्र बनाएँ।

आप अपनी कल्पना से दो या तीन क्रम दर्शाएँ कि पहले क्या घटित हुआ और उसके बाद क्या हुआ, इसी प्रकार आगे ...

अभ्यास करें— अपने घर के आस-पास मिलने वाले पशु-पक्षी और जीव-जंतुओं का चित्र बनाइए और उनमें रंग भरिए।

गतिविधि 2 जीव-जंतु और मैं

अपने समूह में मुखौटा बनाने के बारे में विचार करें।

चरण 1 – काई एक पशु चुनें।

चरण 2 – उसके चेहरे की रेखाओं, आकार एवं रंगों का अवलोकन करें।

चरण 3 – एक मुखौटा बनाइए और उस पर अपने पसंद के पशु की आँखें, नाक और कानों को रेखांकित करें।

चरण 4 – उपलब्ध सामग्री एवं उपकरणों से अपने चुने हुए पशु का मुखौटा बनाएँ।

शिक्षक संकेत

3–4 छात्रों का समूह बनाएँ, उन्हें उनकी पसंद की सामग्री दें। जिससे प्रत्येक समूह में एक मुखौटा बन सके।

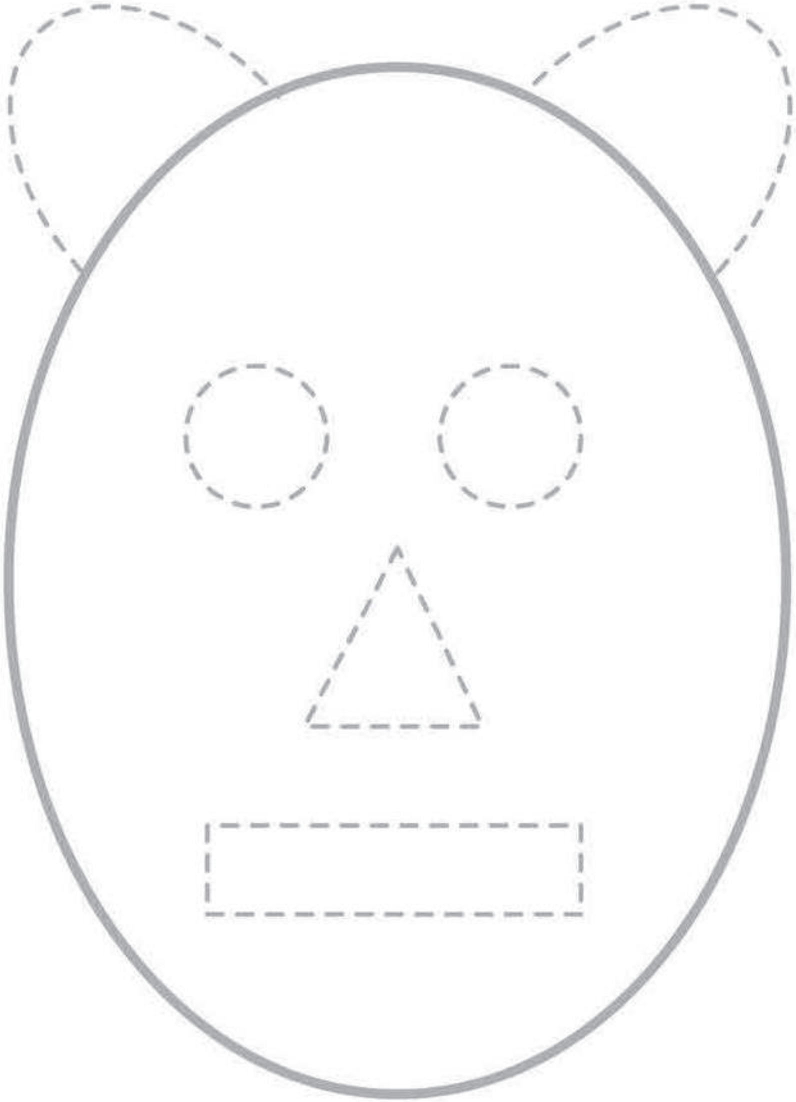

गतिविधि 3 पशु अभिनय

अपनी पसंद के पशु का मुखौटा पहनें—

- पशु जैसा अभिनय करें।
- पशु का मुखौटा पहनकर उसकी तरह चलें।
- उसकी तरह आवाज निकालें।
- यह पशु कैसे खेलेगा?
- यह पशु क्या बोलेगा?

एक समूह गतिविधि के रूप में पशुओं के जीवन के एक दिन की कल्पना करते हुए एक पशु की कहानी बनाएँ।

अपने मुखौटों को पहनकर उसका अभिनय करें। यह गतिविधि इस पुस्तक की रंगमंच इकाई का हिस्सा भी हो सकती है।

गतिविधि 4 जीव-जंतुओं में विभिन्न आकारों को खोजें

हाथी में आप कौन-से आकार देखते हैं?

____

____

क्या आप ऐसे आकार अन्य पशुओं में भी देखते हैं?

____

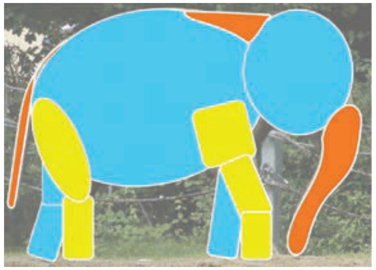

चरण 1 – अपनी आँखें बंद करें और एक पशु के शरीर की कल्पना करें।

चरण 2 – उन विभिन्न आकारों के बारे में सोचें जिनका उपयोग आप उस पशु के शरीर को बनाने के लिए कर सकते हैं।

चरण 3 – अब उस पशु का चित्र बनाएँ।

चरण 4 – इसमें रंग भरें!

चित्र में दिए हुए आकारों को बनाइए और उनमें रंग भरिए। पहले चित्र का एक उदाहरण दिया गया है।

अब, किसी अन्य पशु, कीट, सरीसृप (रेंगने वाले जीव) या पक्षी पर स्वयं यह अभ्यास करें।

गतिविधि 5 अपने पालतू जीव के लिए घर बनाएँ

कल्पना करें कि आपके पास एक पालतू जीव है। वह जीव पानी में, भूमि पर, भूमि के अंदर या इन सभी जगहों पर रहने में सक्षम है। उसे कोई नाम दीजिए। अपने प्राकृतिक परिवेश से सामग्रियों का उपयोग करते हुए उसके लिए एक घर बनाएँ।

आपके पालतू जीव का नाम ______________________________

अपनी कल्पना के अनुसार नीचे दिए गए स्थान में अपने पालतू जीव का घर बनाएँ –

4 हमारे आस-पास के लोग

हमारे आस-पास के सभी लोग भिन्न हैं। हमारे परिवार के सदस्य, शिक्षक और दोस्त। उनके नाक, आँखें, बाल, त्वचा और चेहरा, सब अलग-अलग दिखाई देते हैं। वे अलग-अलग अवसरों पर विभिन्न सामग्रियों से बने, भिन्न-भिन्न कपड़े पहनते हैं।

आठे कन्हैया

बस्तर कलाकृति

इस अध्याय के अंत तक आप लोगों की शारीरिक विशेषताओं, कपड़ों के प्रारूप आदि का बारीकी से अवलोकन करके उनका चित्रण कर सकेंगे। आप कला, सामग्री, प्रारूप और संरचना (प्रतिरूप) का भी पता लगाकर अपने लिए कपड़ों को डिजाइन कर सकते हैं जिससे ये एक-दूसरे से भिन्न दिखाई देंगे।

गतिविधि 1 आइए, तैयार होते हैं!

क्या आप सदैव एक जैसे कपड़े पहनते हैं?

____

आप किस-किस प्रकार के कपड़े पहनते हैं?

____

____

क्या आप अपने पहने जाने वाले कपड़ों में कोई विशेष प्रकार का आकार या चित्र देखते हैं?

____

अपनी पसंद के कोई भी वस्त्र पहने हुए आप स्वयं का चित्र बनाएँ और उसे अपनी पसंद के अनुसार रंग और प्रतिरूप (पैटर्न) दें। आकारों को बनाने में विभिन्न प्रकार के बिंदुओं, रेखाओं और प्रतिरूपों का उपयोग करें।

आनंदपूर्ण तथ्य

जब कोई आकृति क्रम से बार-बार दोहराई जाती है तो वह प्रतिरूप बन जाता है।

गतिविधि 2 कब क्या पहनें?

मेले में जाने के लिए आप क्या पहनेंगे? चित्र बनाइए।

अथवा

आप अपने किसी संबंधी के विवाह में जा रहे हैं, आप क्या पहनना पसंद करेंगे? स्वयं को पारंपरिक वेशभूषा में कल्पना करते हुए उसका चित्र बनाइए।

अथवा

आप अपने अगले जन्मदिवस में क्या पहनेंगे? चित्र बनाइए।

गतिविधि 3 चेहरे का चित्र बनाएँ

दिए हुए खाली स्थान में किसी भी सामग्री और शैली का उपयोग करके एक चेहरा बनाएँ और उसमें आँखें, कान, बाल, नाक, होंठ आदि भी बनाएँ।

सवनाही कला

अभ्यास करें— शरीर के अन्य अंगों या पूरे शरीर का चित्र बनाएँ, जिसमें आप हाथ, अँगुलियाँ, पैर, पैरों के अँगूठे और अँगुलियाँ या अपनी कल्पना से कुछ अलग विशेषताएँ जोड़ें।

गतिविधि 4 हाथों के चित्र बनाएँ

अपना हाथ

एक वयस्क व्यक्ति का हाथ

5 त्यौहार, उत्सव और समारोह

हम पूरे साल विभिन्न प्रकार के त्यौहार और उत्सव मनाते हैं। ये त्यौहार हमारे हृदय और घर को आनंदमय कर देते हैं। इन अवसरों पर हम अपनी प्रसन्नता को कई तरह से व्यक्त करते हैं। इनमें भोजन, घर की सजावट, संगीत, पोशाक, नृत्य और लोगों का आपस में मिलना-जुलना आदि सम्मिलित है।

इस अध्याय के अंत तक आप दृश्य कला की उन परंपराओं से परिचित हो जाएँगे जो इन उत्सवों पर आनंदमय वातावरण तैयार करती हैं। इनमें फर्श एवं दीवार पर विभिन्न प्रकार के डिजाइन (पैटर्न), मालाएँ, लालटेन, तोरण, दीपक और कंदील बनाना आदि सम्मिलित है। इस अध्याय में आप अपने घरों और आस-पड़ोस के समुदायों में प्रचलित परंपरागत स्थानीय कलाओं से परिचित होंगे।

गतिविधि 1 फर्श एवं दीवार पर डिजाइन

क्या आपने फर्श या दीवारों पर बने डिजाइन देखे हैं?

आपने उन्हें कहाँ देखा है?

हम अपने फर्श और दीवारों को कब सजाते हैं?

____

____

नीचे दिए गए स्थान में फर्श पर बनाए जाने वाला कोई भी एक डिजाइन बनाएँ।

आप बिंदुओं और रेखाओं द्वारा भी रंगोली बना सकते हैं। नीचे दिए गए उदाहरण को देखें और बिंदुओं को जोड़कर रंगोली का प्रारूप बनाएँ।

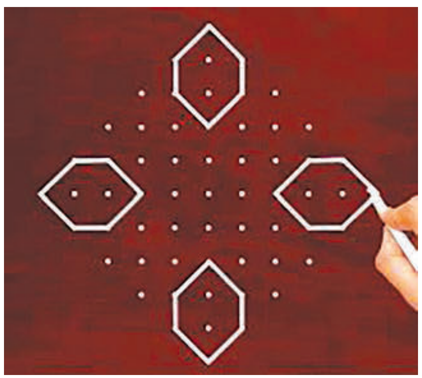

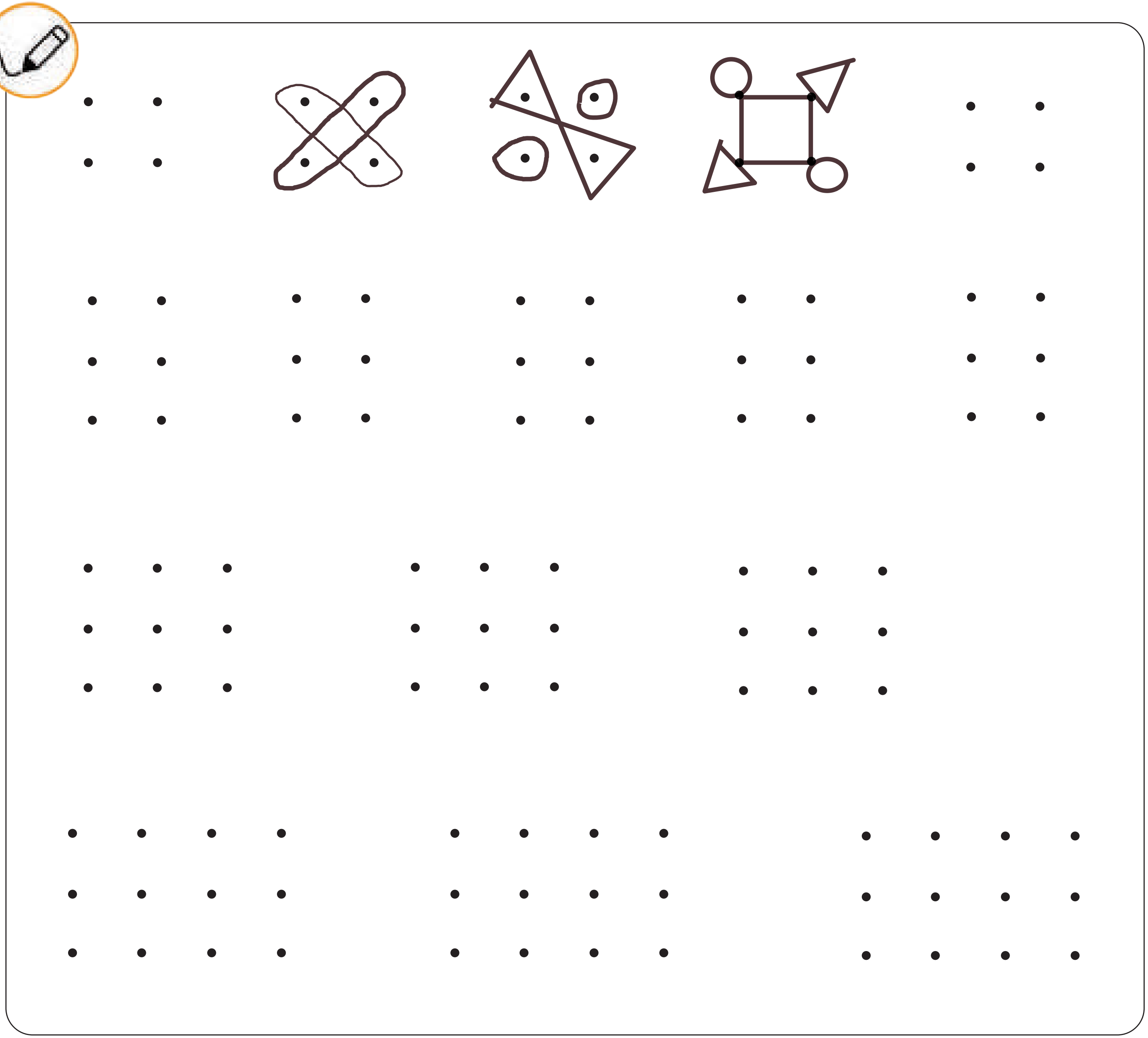

गतिविधि 2 फूलों की माला बनाइए

हम कई अवसरों पर फूलों और पत्तियों को पिरोकर माला बनाते हैं। हम *तोरण* भी बनाते हैं। फूल-पत्तियों के रंग और सुगंध हमारे उत्सवों को आनंदमय बनाते हैं।

आइए, हम अपनी माला और तोरण बनाते हैं। इसके लिए आप फूलों, पत्तियों, टहनियों, कागज, मोती, धागा और अपने आस-पास उपलब्ध सामग्रियों का उपयोग कर सकते हैं।

चरण 1 – अपने हाथ की लंबाई जितना या तीन फीट लंबा धागा लें।

चरण 2 – कागज, पत्तियों, फूलों आदि से एक पैटर्न बनाएँ और उन्हें धागे पर चिपकाते हुए *तोरण* बनाएँ।

चरण 3 – अपने *तोरण* को प्रवेश द्वार पर लगाएँ।

गतिविधि 3 कागज से अपना कंदील बनाएँ

आपने एक जाली बनाई, अब आप स्वयं कागज का कंदील भी बना सकते हैं। आपको बस कागज के दोनों किनारों को जोड़कर बेलनाकार बनाना है। विभिन्न रंगों का उपयोग करके आप अपने कंदील को आकर्षक बनाएँ!

गतिविधि 4 मिट्टी के दीपक बनाएँ

आपने पहले भी मिट्टी की वस्तुएँ बनाई हैं! क्या आपने कभी दीपक भी बनाएँ हैं? आप कितने प्रकार के दीपक बना सकते हैं?

दीपक बनाकर उसे धूप में सुखाएँ फिर इसे रंगकर डिजाइन बनाएँ! उन्हें काँच, टेप, बिंदियों और चित्र आदि से भी सजाया जा सकता है। एक दीपक बनाने का प्रयास करें!

गतिविधि 5 आभूषण बनाएँ

कागज, कैंची, क्रेयॉन और गोंद या टेप का उपयोग करके आभूषण बनाएँ। उनमें अपनी मनपसंद सामग्री का उपयोग करके डिजाइन बनाएँ और उसको सुंदर बनाएँ।

बरगद पत्ते का मुकुट

बबूल (पइरी) की पायल

चरण 1 - कागज की दो पट्टियाँ लें जिन्हें आपकी कलाई पर लपेटा जा सके।

चरण 2 - एक पट्टी को अपने किसी मनपसंद फूल के रंग से रंगें।

चरण 3 - दूसरी पट्टी को किसी अन्य रंग से रंगें।

चरण 4 - पट्टियों को सुंदर बनाने के लिए कुछ डिजाइन और पैटर्न बनाएँ तथा विभिन्न सामग्रियों को चिपकाकर उसे सजाएँ।

चरण 5 - दोनों पट्टियों को अपनी कलाई पर लपेटें और उन्हें गोंद या टेप से चिपकाएँ।

आपका बाजूबंद या कंगन ब्रेसलेट तैयार है!

अब, आप अपनी पायल और अन्य आभूषणों के डिजाइन भी बना सकते हैं। इन्हें बनाने के लिए प्राकृतिक सामग्री का उपयोग करें। जब आप इन्हें बना लें, तो आप अपने सहपाठियों के साथ इन आभूषणों का आदान-प्रदान कर सकते हैं या उन्हें उपहार स्वरूप दे सकते हैं।

संगीत

शिक्षकों के लिए

- कक्षा में सिखाए गए गीतों का घर में अभ्यास करने के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करें।
- विभिन्न त्यौहारों और उत्सवों पर घर में गाए जाने वाले गीतों को गाने के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करें। इन गीतों को कक्षा में भी गाएँ और अपने मित्रों को भी सिखाएँ।
- हमारे दैनिक जीवन में गीत-संगीत अनेक प्रकार से जुड़ सकता है, उदाहरण के लिए प्रार्थना सभा में अथवा दो कालांश के बीच घंटी बजाने के स्थान पर कोई धुन बजायी जा सकती है।
- देश के सभी भागों में सुने जाने वाले अलग-अलग शैलियों का संगीत सुनें और उनका आनंद लें। विद्यार्थियों के साथ उनके द्वारा विभिन्न आवाजों, वाद्ययंत्रों, भाषाओं और शैलियों में सुने जाने वाले गीतों के बारे में चर्चा करें।
- पाठ्यपुस्तक के इस भाग में कई गतिविधियाँ दी गई हैं। साथ ही आप भी अन्य गतिविधियों का समावेश कर सकते हैं।
- क्यू.आर. कोड के माध्यम से पाठ्यपुस्तक में दिए गए अधिकांश गीत और गतिविधियों के ऑडियो एवं वीडियो को सुना और देखा जा सकता है।
- बच्चों का संगीत से परिचय कराने के लिए कलाकारों, अभिभावकों और अन्य शिक्षकों की भागीदारी सुनिश्चित करें।

पदम् विभूषण डॉ. तीजन बाई

6 हमारा राष्ट्रगान

गतिविधि 1 आइए, राष्ट्रगान गाएँ

0338CH06

बोल

जन–गण–मन–अधिनायक जय हे
भारत–भाग्य–विधाता।
पंजाब–सिंध–गुजरात–मराठा
द्राविड़–उत्कल–बंग।
विंध्य–हिमाचल–यमुना–गंगा,
उच्छल जलधि–तरंग।
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिष माँगे,
गाहे तव जय–गाथा।
जन–गण–मंगल–दायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ॥

रचनाकार – रविन्द्रनाथ ठाकुर
भाषा – बांग्ला

क्या आप जानते हैं?

प्रत्येक देश का एक राष्ट्रगान होता है। यह देश का आधिकारिक गीत होता है और महत्वपूर्ण अवसरों पर गाया जाता है। जब भी राष्ट्रगान गाया जाता है तब हमें अपने देश के सम्मान के प्रतीक के रूप में खड़े हो जाना चाहिए।

राष्ट्रगान गाते समय आपको कैसा अनुभव होता है?

अपने विद्यालय की प्रार्थना को सुनें, सीखें और गाएँ।

आप संगीत की किन अन्य विधाओं से परिचित हैं?

गतिविधि 2 ध्वनि और संगीत

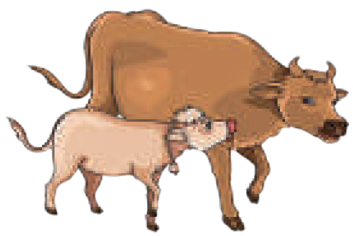

हमारे चारों ओर अनेक ध्वनियाँ सुनाई देती हैं।

वर्षा से उत्पन्न ध्वनि, चिड़ियों की चहचहाहट, चलती रेलगाड़ी की ध्वनि, गाय का रंभाना, पत्तों की सरसराहट, विभिन्न पूजा स्थलों की प्रार्थनाओं और घंटियों की ध्वनियाँ, विभिन्न प्रकार के वाद्ययंत्रों ढोल, बाँसुरी, डमरू, ढफली, मंजीरा आदि की ध्वनियाँ। क्या आपने ध्यान दिया कि ये सभी ध्वनियाँ एक-दूसरे से किस प्रकार भिन्न हैं?

क्या आप अपने आस-पास सुनाई देने वाली विभिन्न ध्वनियों के बारे में बता सकते हैं? उन्हें नीचे दिए स्थान में लिखिए।

टिप्पणी

____

____

____

____

____

क्या आप जानते हैं?

कुछ ध्वनियों का संकलन संगीत बनाता है। यह जानना आवश्यक है कि संगीत क्या है— सुमधुर, लयबद्ध और आनंददायक ध्वनि संगीत कहलाती है।

7 लय का अनुभव करें – त क त कि ट

संगीत में लय सबसे आवश्यक है। घड़ी की

टिक-टिक, नल से टपकते पानी की बूँद, चिड़ियों के कलरव आदि का अनुभव करें—

- आपके आस-पास और क्या है जो एक स्थिर लय बनाता है?
- ऐसी कौन-सी वस्तुएँ हैं जिनकी ध्वनियाँ स्थिर नहीं हैं? पेड़-पत्तों की सरसराहट, प्रेशर कुकर की सीटी और यातायात में हार्न का बजना, ये सारी ध्वनियाँ ऐसी हैं जिनकी लय स्थिर नहीं हैं।

क्या आपको स्थिर ध्वनि अच्छी लगती है या अस्थिर? इसके अतिरिक्त कौन-से अन्य उदाहरण हो सकते हैं, इस पर विचार करिए?

गतिविधि 1 एक दो तीन चार!

नीचे विभिन्न क्रियाओं (ताली बजाना, चुटकी बजाना, लयबद्ध पैरों की थाप लगाना) को दर्शाया गया है जिन्हें करने पर अनेक प्रकार की ध्वनियाँ निकलती हैं। ऐसी चार अन्य लयबद्ध ताल बनाएँ और आनंद लें।

1.				
2.				
3.				

0338CH07

गतिविधि 2 बोलने और प्रतिक्रिया का मानचित्र

टिप्पणी

हम अपने शरीर से इस प्रकार लय बना सकते हैं—

- ताली बजाकर
- चुटकी बजाकर
- पैरों की थाप लगाकर
- मुँह से ध्वनि निकालकर

आइए, नीचे दी गई क्रियाओं को संख्या दें—

ताली	–	1
चुटकी	–	2
पैरों की थाप	–	3
मुँह से आवाज निकालना	–	4

(क)	1	2	3	4
(ख)	2	3	1	4
(ग)				
(घ)				
(ङ)				
(च)				

अपने शरीर का प्रयोग कर कुछ क्रियाओं द्वारा विभिन्न लयों की स्वयं रचना करें।

अब, ऐसी लयों को बनाते रहें।

गतिविधि 3 आइए, एक प्रेरणादायक गीत सुनें और सीखें

आइए, एक लोकप्रिय गाने को सीखें जिसे दुनिया के कई भागों में अलग-अलग भाषाओं में गाया जाता है।

हम होंगे कामयाब

हम होंगे कामयाब,
हम होंगे कामयाब,
हम होंगे कामयाब एक दिन।
हो हो मन में है विश्वास,
पूरा है विश्वास,
हम होंगे कामयाब एक दिन।

अंग्रेजी

वी शैल ओवरकम,
वी शैल ओवरकम,
वी शैल ओवरकम सम डे।
ओह! डीप इन माय हार्ट,
आई डू बिलीव,
दैट वी शैल ओवरकम सम डे।

छत्तीसगढ़ी

हम होबो सुफल
हम होबो सुफल
हम होबो सुफल एक दिन ।
हो हो मन में हे बिसवास
पूरा हे बिसवास
हम होबो सुफल, एक दिन ।

गतिविधि 4

आइए, वाद्ययंत्रों के साथ लय को सीखें

हम होंगे कामयाब— इस गीत की लय को सुनिए। डाँडीया की काठी, मंजीरा, खरताल, मैराकस, डफली या घुँघरू— कोई भी सरल वाद्ययंत्र के प्रयोग द्वारा इस गीत की लय को बजाएँ। इन वाद्ययंत्रों द्वारा लय देते हुए जब आप इस गीत को गाएँगे तो एक अलग आनंद की अनुभूति होगी।

क्या आप जानते हैं?

ताल का उल्लेख सबसे पहले सामवेद में मिलता है। 16वीं शताब्दी तक उत्तर एवं दक्षिण भारत की ताल प्रणालियों में कोई अंतर नहीं था।

गतिविधि 5

आइए, शरीर के अंगों के साथ लय को सीखें

अपने शरीर के अंगों, जैसे— हाथ, पैर, मुख से ध्वनि निकालें। पैर की थाप से गिनें या हाथ से ताली बजाएँ और गिनें। लय बनाए रखने के लिए अलग-अलग तरह से तालियाँ बजाएँ— कभी दाएँ, कभी बाएँ और कभी ऊपर बजाएँ। उदाहरण के लिए—

1, 2, 3 ताली; 5, 6, 7 ताली; 1, 2, 3 दाएँ ताली; 5, 6, 7 बाएँ ताली; 1, 2, 3 सिर के ऊपर ताली; 5, 6, 7 शांति।

लय का यह अनुभव कैसा लगा? आप इस गतिविधि को अलग-अलग प्रकार से कक्षा में सहपाठियों के साथ मिलकर करें। 5–10 मिनट बाद आप को सम्मिलित लय या ध्वनि सुनाई देगी। अब आगे बढ़ें। इस लय में कुछ *तबले के बोल* को जोड़ें, जैसे—

धा गे न ति (1,2,3,4) न क धि न (5,6,7,8) कभी धीमी गति से तो कभी द्रुत गति में इन बोलों को बोलते रहें या त क धी मी, त क झ नु बोलें।

'धा गे न ति न क धि न' *कहरवा* ताल के नाम से जानी जाती है और इसी तरह 8 *अक्षर काल* (आठ मात्राएँ) होती हैं।

'त क धी मी — त क झ नु'

यह आदि ताल के नाम से जानी जाती है। इस लय का आनंद लें। हम होंगे कामयाब गीत को इसी ताल से गाकर देखते हैं।

गतिविधि 6

संगीत में स्वर सीखें

भारतीय शास्त्रीय संगीत के साथ-साथ विश्व के कई अन्य संगीत के प्रकार में भी सात स्वर होते हैं।

सा रे ग म प ध नि ...

ऊपर दिए गए स्वरों के बाद 'सा' स्वर को ऊँचे स्वर में गाएँ। इन सात स्वरों को 'सप्तक' कहा जाता है।

आइए, हम सात स्वरों को आरोह एवं अवरोह में गाएँ।

क्या आप जानते हैं?

नाट्यशास्त्र भरतमुनि का लिखा हुआ प्राचीन भारतीय ग्रंथ है। इसमें संगीत, नृत्य और नाट्य का वर्णन है। क्या आप जानते हैं कि नाट्यशास्त्र में संगीत के प्रत्येक स्वर अलग-अलग भाव से संबंधित हैं? इसका अर्थ यह है कि आप जो भी गाते हैं वह स्वरों के अनुसार अलग-अलग भाव प्रदान करता है।

गतिविधि 7 आइए, गीत गाएँ — सिर, कंधे, घुटने और पैर

आइए, एक मनोरंजक गतिविधि करें। अपने सिर, कंधों, घुटनों और पैरों को छूते हुए यह गीत गाएँ। इससे आपका समन्वय कौशल बेहतर होगा और आपको छत्तीसगढ़ी भाषा से भी परिचित कराएगा।

क्या आप जानते हैं?

लय संगीत में ताल या गति को इंगित करता है। यह हृदय की धड़कन के समान है, जैसे— दौड़ते समय हृदय की धड़कन तेज हो जाती है और सोते समय धीमी, उसी प्रकार अलग-अलग रचनाओं में लय भी अलग-अलग हो सकती है।

बोल

मुड़ी, खाँध, माड़ी, गोड़

मुड़ी, खाँध, माड़ी, गोड़

आँखी, नाक, मुंहु, कान

मुंहु भीतरी दाँत जुबान।

भाषा –छत्तीसगढ़ी

हिंदी अनुवाद

सिर, कंधा, घुटना, पैर,
सिर, कंधा, घुटना, पैर
आँख, नाक, मुँह, कान
मुँह भीतर दाँत, जुबान

अब आप समझ गए हैं कि इस गाने को दो भाषाओं में किस तरह गाना है। क्या आप इसे अन्य किसी भाषा में गा सकते हैं?

इस गीत को अलग-अलग लय और गति (तेज और धीमी) में गाने का प्रयास करें।

गतिविधि 8 जन्मदिवस का गीत सीखिए!

जन्मदिवस हर किसी के लिए महत्वपूर्ण दिवस होता है। आइए, एक जन्मदिवस का गीत सीखें।

बोल

बधाई हो बधाई भाई
जनम दिन के हो बधाई।
जुग-जुग तुम जियो भाई
असीस देवथे ददा-दाई।
खेलो कूदो, हांसो-गाव
खा ले खोवा मिठाई।
कुल के सब बहिनी भाई
तोर जिनगी रहे सुखदाई।

अर्थ

प्रिय मित्र जन्म दिन की बधाई। तुम जुग-जुग जियो माता-पिता का आर्शीवाद है तुम्हें। खेलो, कूदो प्रसन्न रहो और मिठाई खाओ। हम सब भाई,बहन आनंदित है। तुम्हारा जीवन सुखमय हो।

भाषा –छत्तीसगढ़ी

क्या आप अपना मनपसंद गीत गा सकते हैं? ताली बजाते हुए लय बनाने का प्रयास करें।

शिक्षक संकेत

कक्षा में बच्चे का जन्मदिवस गीत, नृत्य और शुभकामना संदेश के कार्ड बनाकर मनाएँ। इस गतिविधि द्वारा स्वाभाविक रूप से कला का समावेश होगा।

गतिविधि 9 एक रोचक कहानी

प्राचीन भारतीय ग्रंथों के अनुसार विभिन्न पशु-पक्षी ऐसी ध्वनियों द्वारा संचार करते हैं जो विभिन्न स्वरों के अनुरूप होती हैं। प्राचीन संस्कृत ग्रंथ *नारदीय शिक्षा* विभिन्न पशु-पक्षी की ध्वनियों पर आधारित है। आइए, यह गीत सीखें।

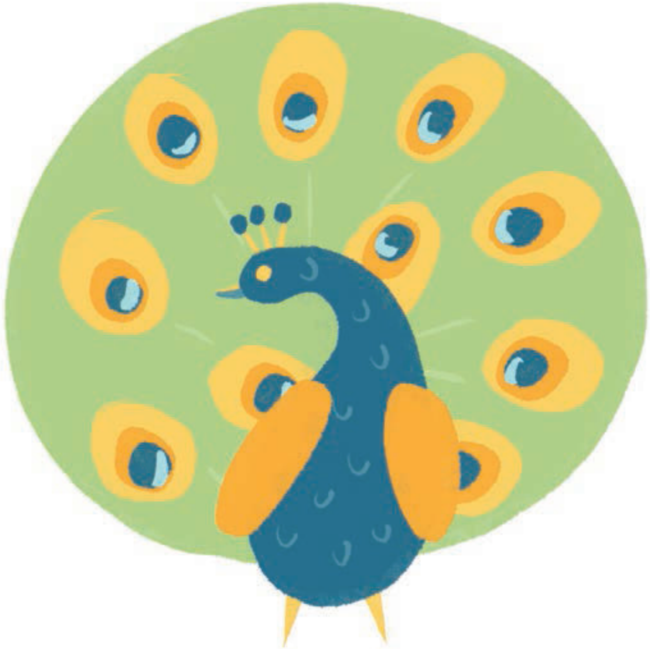

बोल

सा मोर के लिए जो बहुत रंगीन है।
रे बैल के लिए जो वास्तव में मजबूत है।
ग बकरी के लिए जो इधर-उधर दौड़ती है।
म बगुले के लिए जो सफेद एवं लंबा है।
प कोयल के लिए जो प्यारी एवं मीठी है।
ध घोड़े के लिए जो तेज दौड़ता है।
नि हाथी के लिए जो विशालकाय है।

यह हमें फिर से सा पर ले आएगा–
सा रे ग म प ध नि सां ।
सां नि ध प म ग रे सा प सा ॥

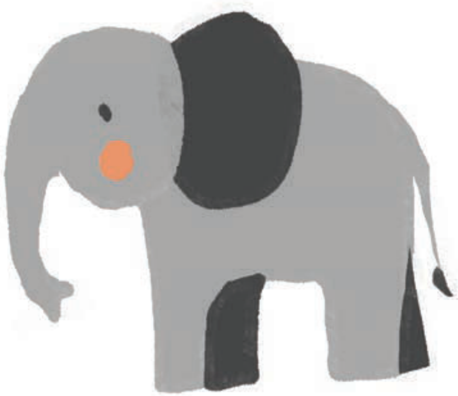

गतिविधि 10 पशु-पक्षियों की श्रुति या स्वर

ऐसे पशु-पक्षियों के स्वरों की नकल करें जिनके स्वर ऊँचे और मंद ध्वनि वाले हों?

उन पशु-पक्षियों के नामों की सूची बनाइए जिनकी ध्वनि आपको अपने आस-पास सुनाई देती है। आप अपने मित्रों और परिवार के सदस्यों को भी इन ध्वनियों की नकल करके सुना सकते हैं।

टिप्पणी

गतिविधि 11 सरगम या अलंकार गाने की विधि

जिस तरह एक घर बनाने के लिए ईंटों का सहारा लिया जाता है उसी तरह संगीत को भी स्वरों द्वारा निर्मित किया जाता है। सात स्वर तो आपको याद ही होंगे जो आपने पहले सीखे हैं? आइए, उन्हें सुनें और एक बार साथ मिलकर गाएँ। अब और कुछ सरगम या अलंकार सीखें। अलंकार यानी आभूषण, संगीत में स्वर इन आभूषणों के समान हैं।

सासा रेरे गग मम । पप धध । निनि सांसां ।।
सांसां निनि धध पप । मम गग । रेरे सासा ।।
सारेग रेगम गमप मपध पधनि धनिसां ।
सांनिध निधप पमग मगरे गरेसा ।।

इस अभ्यास में आप कितनी पंक्तियों को गा सके?

यदि आप इन सभी पंक्तियों को नहीं गा सके तो कोई बात नहीं! अभ्यास करते रहें।

गतिविधि 12

स्वर द्वारा अलंकार या सरगम – गाएँ और याद करें

क्या आप जानते हैं?

हम स्वरमान (पिच) शब्द का उपयोग यह समझाने के लिए करते हैं कि कोई स्वर कितना ऊँचा और नीचा है। सुर में गाना कैसे सीखें, यह समझने के लिए हम तंबूरा या तानपूरा नामक वाद्ययंत्र का उपयोग करते हैं। तंबूरा एक लंबी गर्दन वाला तार युक्त वाद्य है। लेकिन अब 'इलेक्ट्रॉनिक तंबूरा' और यहाँ तक कि 'तंबूरा ऐप्स' भी उपलब्ध हैं। भारतीय संगीत का अभ्यास करते समय, अपने स्वरमान से मेल खाने के लिए तंबूरा का उपयोग करना बहुत सहायक होता है।

तानपूरा

कंठ अभ्यास

(i) सा ग सा ग
सा ग म ग रे सा
रे ग रे ग,
रे ग प म ग रे
सा सा सा

अब कुछ शब्दों को ताली के साथ ऊपर दिए गए स्वरों के अनुसार गाएँ—

आओ आओ
खुशियाँ मनाएँ
गाओ गाओ,
सब मिल गाएँ

(ii) आइए, एक और सरगम या अलंकार गाएँ।

सा सा सा रे
रे रे रे ग
ग ग ग म
म म म प

ऊपर दिए गए अलंकार या सरगम को आगे बढ़ाते हुए खाली स्थान में पूरा करें और गाएँ।

____

____

नि नि नि सां

(विशेष— जब 'सा' के ऊपर बिंदु होता है तो इसका अर्थ है कि आपको 'सां' को ऊँचे स्वर में गाना है।)

गतिविधि 13

तालम् या ताल को सीखें

आपने सीखा कि तालम् या ताल एक लय का स्वरूप (पैटर्न) है। संगीत में हम ताल का उपयोग लय बनाए रखने के लिए करते हैं। प्रत्येक तालम् या ताल की मात्रा (बीट्स) एक निश्चित संख्या होती है जो दोहराई जाती है। यह ताल चक्र कहलाता है। आदि ताल और कहरवा तो आपने सीख लिया जिसमें आठ इकाइयाँ हैं।

एक और ताल जो छह मात्रा का है जिसका नाम दादरा है। आइए, इसको बोलते हैं—

धा धि ना / धा ति ना

गतिविधि 14

यह गीत सुनें और उसके साथ ताल देने का प्रयास करें

श्यामले मीनाक्षी

बोल

श्यामले मीनाक्षी
सुन्दरेश्वर साक्षी
शंकरी गुरुगुह
समुद्भवे शिवेव
पामर मोचनी
पंकज लोचनी
पद्मासना वाणी
हरि लक्ष्मी विनुते शाम्भवी
श्यामले मीनाक्षी

गीत के बारे में

यह देवी मीनाक्षी का गीत है। वे शिव की पत्नी हैं और सन्मुख की माता हैं।

संयोजक – मुत्तुस्वामि दीक्षितर
भाषा – संस्कृत
रागम – शंकराभरणम्
तालम् – आदि

कुछ संगीत संबंधी शब्दावली

संगीत में हम निम्नलिखित शब्दावली का उपयोग करते हैं—

ताल या तालम्	निश्चित नियमित (रिदमिक साइकल) बोल
लय या लयम्	गति (टेम्पो)
सम् या सामम्	ताल की पहली मात्रा (बीट) जिस इकाई से ताल की शुरुआत होती है।
आवर्तन या आवर्तनम्	ताल का एक चक्र

0338CH08

8 विभिन्न गीत गाएँ

गतिविधि 1 नई भाषा में गीत गाएँ

हम भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोलते हैं। आप और आपके मित्र घर पर कौन-सी भाषाएँ बोलते हैं? अपने बड़ों से किसी भी विषय (ऋतु, उत्सव, त्यौहार, देशभक्ति आदि) पर एक गीत सीखें। अपने माता-पिता, भाई-बहन या किसी अन्य से गीत को यहाँ लिखवाएँ, गीत को कक्षा में प्रस्तुत करें।

गतिविधि 2 खेलते हुए सीखें

एक मनोरंजक गीत चुनिए और उसका प्रयोग इस खेल में करिए।

- एक विद्यार्थी को कक्षा से बाहर भेजें। उसके जाते ही कक्षा की किसी एक वस्तु, जैसे पानी की बोतल या पोंछन (डस्टर) आदि को छुपा दीजिए।
- जब वह विद्यार्थी कक्षा में वापस आए, तब एक छुपाई गई वस्तु को खोजने के लिए गीत का उपयोग सहायक संकेत के रूप में करिए।
- समूह में गाना शुरू करें। जैसे ही विद्यार्थी वस्तु के समीप पहुँचे तो ऊँचे स्वर में गाएँ और दूर होने पर धीमे स्वर में गाएँ।

गतिविधि 3

आइए, एक छत्तीसगढ़ी गीत सीखें

इस छत्तीसगढ़ी गीत को चार-ताल चक्र में सुनिए। प्रत्येक चक्र के आरंभ में ताली बजाएँ।

बोल

झुलना के झुल भइया कदम के फूल
झुलना झुलत नोनी हांसे खुल-खल
एमा रांधे दार भात,
एमा रांधे साग
गाड़ी आवथे डोकरी
झुलना के झुल भइया कदम के फूल
राहटा ला टार-टार
ढुलथे गाड़ी बाबू के ढुलमुल
नोनी के दाई तरिया गेहे
ददा गेहे खेत
खाये पीये ल छोड़ के
झुलना मे हे चेत
फुरफुर फुरफुर करथे नोनी के बुलबुल।
झुलना के झुल भइया कदम के फूल।
बड़े बाढ़ के नोनी ह, अब्बड़ नाम कमाही
पढ़ लिख के आगु बढ़ही, देश ल बढ़ाही
मगन हो के नोनी ह, हांसे खुलखुल। झुलना रे

गीत के बारे में

भइया तुम झुलना झूलो, तुम्हारे साथ बहन भी झुला झूलकर प्रसन्न है। माँ नहाने के लिए तालाब गई है और पिताजी खेत गये हैं। बच्चे खाना-पीना छोड़कर झुला झूलने में मगन हैं। झुला झूलने से बहन के बाल लहराकर उड़ रहे हैं।

गतिविधि 4

अक्षरों के साथ लय बनाएँ

एक–दो–तीन–चार

सुनें और उन्हें स्थिर लय में बोलने का प्रयास करें। लय में बोलते समय उच्चारण इकाई (अक्षर) जिसे शब्दांश भी कहते हैं, का उपयोग किया जा सकता है। उदाहरण के लिए *कोनाकोल*, दक्षिण भारतीय शैली (कर्नाटक शैली) में अपनी ध्वनि का उपयोग करते हुए लय बनाने में निम्नलिखित अक्षरों का प्रयोग किया जाता है—

था धी धॉम नम ।
नम धॉम धी था ।
था धी धॉम नम नम
धॉम धी था ।
था था धी धी धॉम धॉम
नम नम ।

इन्हें लय में ताली या डांडिया या किसी वाद्ययंत्र की सहायता से विद्यालय में बोलने का प्रयास करें।

हिंदुस्तानी संगीत में लय को इस प्रकार भी बोला जाता है —

धा धा ते टे
धा धा धिन ना
ता ता ते टे
धा धा तिन ना

गतिविधि 5 छत्तीसगढ़ी गीत सुनें एवं सीखें

इस गाने की लय को समझिए। शरीर के अंगों के माध्यम से लय एवं ताल की एक मनोरंजक गतिविधि बनाएँ।

खेल गीत "फुगड़ी"

गोबर दे बछरू गोबर दे
चारों खूंट ल लीपन दे
चारो देरानी ल बइठन दे
अपन खाथे गुदा-गुदा
हमला देथे बीजा
ए बीजा ल का करबो?
रहि जबो तीजा
तीजा के बिहान दिन
सरी-सरी लुगरा।
हेर दे भउजी कपाट के खीला
केंव-केंव करे मंजुर के पीला
एक गोड़ म लाल भाजी
एक गोड़ म कपुर
कतेक ल मानंव देवर ससुर
फुगड़ी फूं-फूं रे फुगड़ी फूं

राजा घर के पुतरी
खेल जमुना फुगड़ी
फुन्ना फूं-फून्ना फूं
हारगे भउजी हरा देंव रे
चिकनी पइसा ल धरा देंव रे
लीम मोर भइया
नरियर के बुच, पाछु डहर घुंच

गतिविधि 6

कोंकणी गीत सुनें एवं सीखें

उन्रा मौजए मामा

बोल

उन्रा मौजए मामा
अनि हाव सांगता तुका –2
अनि माजोरिचा पिला लागी
खेमांडी ना को –2
उनिर मामा आइलो,
अनि पेटिए कुशिक लिपलो –2
अनि माझोरिचा पिलान ताका एका घासान खाइलो –2
या या मया या –4

गीत के बारे में

यह गोवा का एक पारंपरिक लोक गीत है, जो कोंकणी भाषा में लिखा गया है। इसमें चूहे के लिए चेतावनी है कि वह बिल्ली से दूर रहे और उसके साथ कभी न खेले।

गतिविधि 7

छत्तीसगढ़ी गीत सुनें और सीखें

बिहनिया के गीत

बोल

कुकरा बोले कुकरूँस कूँ
चिरई बोले चूँ...चूँ.......चूँ
कुकुर भूँके भूँ.....भूँ....भूँ
घुटरे परेवा घुटुर घूँ,
मूसर बाहना भुकरूँस भूँ
मिट्ठू बोले तपत कुरू
होगे हवय बिहनिया जी
जाग-जाग जी बाबू तहूँ......।

गीत के बारे में

मुर्गा कुकरूंकू बोंल रहा है,
चिड़ियाँ चूँ...चूँ कर रही है।
कुत्ता भों-भों भौंक रहा है
कबूतर घुटुरघुं बोल रहा है।
मूसल और ओखल की आवाज आ रही है
तोता तपट कुरू बोल रहा है।
सुबह हो गई है बाबू अब तुम जाग जाओ।

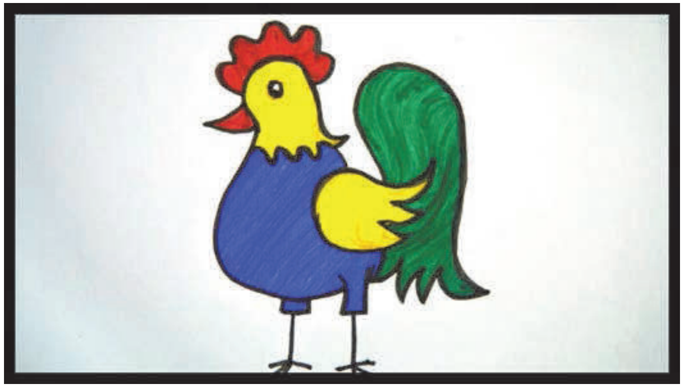

9 वाद्ययंत्र

0338CH09

गतिविधि 1 वाद्ययंत्र को सुनिए

ये भारतीय शास्त्रीय और लोक संगीत में उपयोग किए जाने वाले कुछ वाद्ययंत्र हैं। आप इस अध्याय की शुरुआत में दिए गए क्यू.आर. कोड को स्कैन करके इनकी ध्वनियाँ सुन सकते हैं।

हारमोनियम

बाँसुरी

मृदंगम

तबला

मांदर

सितार

दफड़ा

सारंगी

शहनाई

मंजीरा

पखावज

इनमें से कौन-से वाद्ययंत्र आपने पहले कभी सुने हैं? क्या आप बता सकते हैं कि,छत्तीसगढ़ी जसगीत में कौन-सा वाद्ययंत्र बजाया गया है?

शिक्षक संकेत

स्थानीय संगीतकारों को आमंत्रित करें जो बच्चों के समक्ष कोई वाद्ययंत्र बजा सकें।

गतिविधि 2 रसोई के बर्तनों की ध्वनियों से वाद्यवृंद (ऑर्केस्ट्रा) बनाएँ

जब कई संगीतकारों का एक समूह एक साथ विभिन्न वाद्ययंत्रों को बजाता है तो उसे **वाद्यवृंद** कहते हैं।

क्या आप अपने घर की रसोई में वाद्यवृंद बना सकते हैं?

रसोई वाद्यवृंद बनाने में रसोईघर में उपयोग की जाने वाली किस प्रकार की वस्तुओं का प्रयोग किया जा सकता है?

क्या आप अपने रसोई के वाद्यवृंद को कोंकणी गीत "उन्रा मौजए मामा" या किसी अन्य गीत के साथ बजा सकते हैं?

क्या आप जानते हैं?

झुनझुना वैसी ही ध्वनि देगा जैसी सामग्री आप उसमें डालेंगे और जितनी मात्रा में डालेंगे। झुनझुना बनाने के लिए आप अलग-अलग प्रकार के अनाज, कंकड़, संगमरमर के टुकड़े या बीज ले सकते हैं।

स्वयं प्रयास करें।

कौन-सा अनाज सबसे तेज ध्वनि उत्पन्न करता है?

जब आप झुनझुने में और अनाज डालते हैं तब क्या उसकी ध्वनि बढ़ जाती है?

गतिविधि 3 झुनझुना बनाएँ

झुनझुना एक ताल वाद्य है जिसका उपयोग लय बनाने में किया जाता है। इसे हिलाने पर ध्वनि निकलती है इसलिए इसे झुनझुना कहते हैं।

झुनझुना बनाने के लिए उपयोगी वस्तुएँ—

- एक छोटी अनुपयोगी खाली बोतल
- एक मुट्◌्ठी अनाज, बीज या कंकड़
- रंग

अपना झुनझुना बनाएँ—

- बोतल को अंदर और बाहर से सुखा लें।
- बोतल में सूखी दालें, कच्चे चावल और मनचाहे अनाज भरें। याद रखें कि अलग-अलग प्रकार की वस्तुओं से विभिन्न प्रकार की ध्वनियाँ निकलती हैं।
- बोतल के ढक्कन को कसकर बंद करें।
- अपने मनचाहे रंगों और चमकीली वस्तुओं से बोतल को बाहर से सजाएँ।
- बोतल की सजावट को सूखने दें।
- झुनझुना उपयोग के लिए तैयार है।

गतिविधि 4 वाद्ययंत्रों की ध्वनि

वाद्ययंत्र बजाना तो हम बाद में सीखेंगे। आइए, पहले कुछ वाद्ययंत्रों की ध्वनि सुनें, जैसे—

डफ, डमरू, मृदंग, तबला, ढोलक, चेन्डा, इडैक्का

ये सभी वाद्य लकड़ी या पीतल और खाल से बने होते हैं। किसी वाद्ययंत्र का मुख ऊपर की ओर, किसी का दाएँ या बाएँ ओर होता है। इनको हाथ या छोटे डंडों से बजाया जाता है।

धनकुल लोकवाद्य

घुमट

गतिविधि 5

आपने अपने आस-पास त्यौहारों में कई प्रकार के ढोल बजते हुए देखे होंगे। आइए, उनकी आवाजें सुनें और उनके छायाचित्र भी देखें।

ड्रम

डफली

नगाड़ा

माड़िया ढोल

कुछ संगीत के वाद्ययंत्रों के चित्र एकत्रित करें और नीचे चिपकाएँ—

बाँसुरी

नागस्वरम्

शहनाई

रणसिंघा

गतिविधि 6 अलग-अलग स्वर के समूह को सुनिए और सीखिए

गीतों में ऐसे पैटर्न को ढूँढ़ें जिसमें लय और ताल को बार-बार दोहराया गया हो।

शिक्षक संकेत

बच्चों से इन स्वरों को गुनगुनाते हुए, आकार और अलंकार या सरगम शैली में गवाएँ। ताली या किसी वाद्ययंत्र के साथ लय बनाए रखें। छात्रों को बताएँ कि गाते समय अपने श्वास को नियंत्रण में रखना होता है।

नीचे दी गई सरगम को गाएँ और इसका अभ्यास करें—

सा रे ग म प ध नि सां
सां नि ध प म ग रे सा

सारे, रेग, गम, मप, पध,धनि, निसां,
सांनि, निध, धप, पम, मग, गरे, रेसा।

सारेग, रेगम, गमप, मपध, पधनि, धनिसां,
सांनिध, निधप, धपम, पमग, मगरे, गरेसा।

सारेगम, रेगमप, गमपध, मपधनि, पधनिसां,
सांनिधप, निधपम, धपमग, पमगरे, मगरेसा।

10 उत्सव मनाएँ

0338CH10

गतिविधि 1 आइए, एक दिवाली गीत सुनें और सीखें

आ गे देवारी

बोल

ओरी-ओरी दीया बरे
कोरी-कोरी दीया बरे देवारी म।
घर अंगना म दीया बरे
तुलसी चंवरा म दीया बरे देवारी म।
गली खोर म दीया बरे
खेत-खार म दीया बरे देवारी म।
जगर-मगर दीया बरे
गाँव शहर दीया बरे देवारी म।
तोरो घर दीया बरे
मोरो घर दीया बरे देवारी म।
सबो घर दीया बरे
हाँ सबो घर दीया बरे देवारी म।

गीत के बारे में अनुवाद

कतार में दीपक अनगिनत संख्या में जल रहे है। घर आंगन में, तुलसी के चबूतरे में,गलियों और खेतों में गाँवों और शहरों में दीपक जगमग जल रहे हैं। तुम्हारे घर भी दीपक जल रहा है मेरे घर भी दीपक जल रहा है। हाँ सभी के घर दीपक जल रहे हैं।

गीत के बारे में

यह गीत दिवाली का वर्णन करता है, जो भगवान राम के अयोध्या लौटने के उपलक्ष्य में मनाया जाने वाला दीपोत्सव है। इस दिन लोग नए कपड़े पहनते हैं और अपने घरों को दीयों से रोशन करते हैं। चारों तरफ उल्लास और उत्साह का वातावरण होता है।

गतिविधि 2 आइए, संस्कृत में एक नववर्ष गीत सुनें और सीखें

बोल

क्षणं प्रति क्षणं यं नवम् नवम्
तच्च सुन्दरम् सच्च तच्चिवम्

वर्ष नूतनं ते शुभं मुदम्
उत्तरोत्तरं भवतु सिद्धिदम्

गीत के बारे में

जो सदैव नया और ताजा है, वही अच्छा, वास्तविक और सुंदर है। यह नव वर्ष आपके लिए सौभाग्य, खुशियाँ और सफलता लेकर आए।

संगीतकार – स्वामी तेजोमयानंद

गतिविधि 3

चलिए, एक क्रिसमस गीत सुनें और सीखें

जिंगल बेल्स

बोल

डैशिंग थ्रू द स्नो,
इन वन-हॉर्स ओपन स्लेज।

ओवर द फील्ड्स वी गो,
लाफिंग ऑल द वे।

बेल्स ऑन बोबटेल्स रिंग,
मेकिंग स्पिरिट्स ब्राइट।

वॉट फन इट इज टू राइड एंड
सिंग ए स्लेइंग सांग टूनाइट।

ओह! जिंगल बेल्स, जिंगल बेल्स,
जिंगल ऑल द वे।

ओह! वॉट फन इट इज टू राइड
इन ए वन-हौर्स ओपन स्लेज। हे!

गीतकार और संगीतकार – जेम्स लॉर्ड पियरपोंट

आनंदपूर्ण तथ्य

क्रिसमस के समय लोग समूह में एकत्रित होते हैं और एक साथ क्रिसमस गीत गाते हैं जो कैरलिंग कहलाता है।

गतिविधि 4 आइए, ईद के लिए एक गीत सुनें और सीखें

आओ, ईद मनाएँ

बोल

आओ ईद मनाएँ
एक-दूजे के संग
तोड़े नफरत की दीवार
गले लगाए प्यार से

घर को दीपों से सजाएँ
भेदभाव को मन से मिटाएँ

नए कपड़ों के संग
मेहंदी और चूड़ियों के रंग

दावत की खुशियाँ मनाएँ
छोटे-बड़ों के साथ

खुदा से माँगें दुआएँ हम
नाना-नानी दादा-दादी
ईद मुबारक और करम

गीत के बारे में

'आओ ईद मनाएँ' गीत एकता, प्रेम और भाईचारे के साथ ईद का त्यौहार मनाने के बारे में है। यह गीत घरों को सजाने, नफरत को मिटाने, नए कपड़े पहनने और परिवार के साथ मिलकर आनंदपूर्वक त्यौहार मनाने को कहता है। यह ईश्वर और बड़ों से आशीर्वाद लेने के महत्व को भी बताता है।

गतिविधि 5

आइए, भगवान बुद्ध को समर्पित एक गीत सुनें और सीखें

बोल

बुद्धं शरणं गच्छामि
धम्मं शरणं गच्छामि
सघं शरणं गच्छामि
बुद्धं शरणं गच्छामि
धम्मं शरणं गच्छामि
सघं शरणं गच्छामि

गीत के बारे में

भगवान बुद्ध को समर्पित इस प्रार्थना में उपासक भगवान बुद्ध और धर्म की शरण में जाने की प्रार्थना करते हैं।

गतिविधि 6 आइए, साथ में एक देशभक्ति गीत सीखें और गाएँ

आइए, एक ऐसा गीत सीखें जो हमें बताएगा कि भारत भूमि को प्रकृति किस प्रकार घेरे हुए है।

गीत के ताल पर ध्यान दीजिए। यह कहरवा ताल– ध गे न ती न क धी न है।

बोल

हिंद देश के निवासी सभी जन एक हैं
रंग रूप वेश भाषा चाहे अनेक हैं

बेला गुलाब जूही चम्पा चमेली –2

प्यारे-प्यारे फूल गूंथे माला में एक हैं
हिंद देश के निवासी सभी जन एक हैं
रंग रूप वेश भाषा चाहे अनेक हैं

गंगा यमुना ब्रह्मपुत्र कृष्णा कावेरी –2

जाके मिल गई सागर में हुई सब एक हैं
हिंद देश के निवासी सभी जन एक हैं
रंग रूप वेश भाषा चाहे अनेक हैं

कोयल की कूक प्यारी पपीहे की टेर न्यारी –2

गा रही तराना बुलबुल राग मगर एक है
हिंद देश के निवासी सभी जन एक हैं
रंग रूप वेश भाषा चाहे अनेक हैं

गतिविधि 7 **मिलकर गाएँ!**

देश भक्ति गीत

बोल

रंग-बिरंग के फुलवा हम सब,
भारत भुइया फुलवारी के।
जात-पंथ कोनो-होवय
एक सुंता संगवारी के।।
भाखा बोली अलग-अलग
फेर एके मया म बंधाये हन।
ताग-ताग डोरी कस जुर के,
डोर बनके जुरियाये हन।।
सुरुज बनके चंदा बनके,
बनके सुघर चंदैनी हम।
जांगर परे आगू बढ़बो,
चढ़बो सरग निसैनी हम।।
बिपत परे मा देश खातिर,
हम सऊँहे जूझ जाबो रें।
सीमा म जाके जान लड़ा के,
धजा तिरंगा फहराबो रे।।

अर्थ

भारत भूमि एक फुलवारी हैं जिसके हम रंग-बिरंगे फूल हैं। हम सभी हिन्दू-मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई एक सूत्र में बंधे हुए है।

भाषायें हमारी अलग-अलग हैं पर प्यार के डोर से बंधे हुए हैं।

सूरज चाँद और तारों की तरह चमककर हम मेहनत करके अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

विपत्ति आने पर देश की खातिर हम अपने प्राणों का बलिदान करेंगे। सीमा पर जाकर प्राणों की बाजी लगाकर तिरंगा झंडा फहरायेंगे।

नृत्य और अंग संचालन

शिक्षकों के लिए

- प्रत्येक गतिविधि के लिए नृत्य द्वारा गति को दर्शाएँ और इसका प्रदर्शन करें।
- प्रत्येक कक्षा के लिए विभिन्न सरल गीत, लय और ताल सहित रिकार्ड किया गया संगीत रखें।
- चर्चा की शुरुआत करें और प्रत्येक गतिविधि को संवादपूर्ण बनाएँ, इससे बच्चे प्रत्येक गतिविधि के बारे में आत्मनिर्भरता से सोच-विचार कर सकेंगे।
- बच्चों की प्रतिक्रिया के आधार पर पाठ्यपुस्तक में दी गई गतिविधियों को आगे बढ़ाने के लिए आप स्वतंत्र हैं, यदि वे किसी गतिविधि में अधिक रुचि प्रदर्शित करते हैं तो उसे विविधता के साथ दोहराया जा सकता है।

क्या आपने नृत्य यानी डांस (DANCE) शब्द सुना है?
हम इसका विस्तार इस प्रकार कर सकते हैं —

D — Do (करना)
A — Actions (कार्य करना)
N — Narrate (वर्णन करना)
C — Compose (संरचना करना)
E — Enjoy (आनंद लेना)

जैसे ही आप यह शब्द सुनेंगे, आपको नृत्य करने का मन करेगा।

किम्बोई और विमला नृत्य कर रही हैं।

आपके राजेश सर भी शायद छड़ी लेकर नाच रहे हैं।

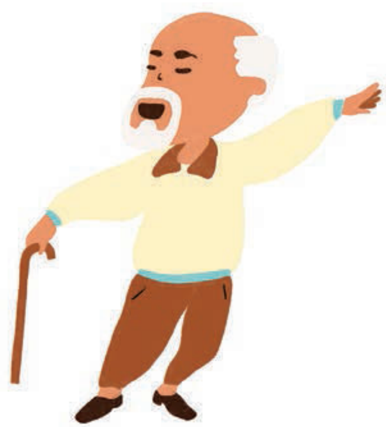

ऋषि और सोना साथ में नाच रहे हैं।

क्या आप आनंद का अनुभव कर रहे हैं?
आइए, यह समय 'आनंद' लेने का है।

11 आइए, नृत्य करें

0338CH11

गतिविधि 1 आओ झूमें

पंथी गीत

ए माटी के काया, ए माटी के चोला,
कै दिन रहिबे बता दे मोला ।।
दस महीना ले वो माता के गरभ में
घोर अंधियारी वो, माता के गरभ में
ए माटी के काया, ए माटी के चोला,
नइहे उहाँ चंदा वो, नइहे उहाँ सूरज,
नइहे उहाँ संगी साथी, नइहे दीया-बाती
ए माटी के काया, ए माटी के चोला,
कै दिन रहिबे बता दे मोला ।।

शिक्षक संकेत

बच्चों की कोई कविता या पारंपरिक गीत बजाएँ।

अर्थ

यह शरीर मिट्टी का है यह कितने दिन रहेगा इसका कोई भरोसा नहीं। नौ माह तक माता के गर्भ में घोर अंधकार में रहा, न वहाँ चाँद है, न वहाँ सूरज है और ना ही कोई संगी साथी। वहाँ दीया-बाती भी नहीं है।

पंथी नृत्य

गतिविधि 2 ताल पर नृत्य करें

- किसी गीत पर या ड्रम के साथ नृत्य की तैयारी करें। संगीत में कई तरह के लयबद्ध प्रारूप होते हैं। इन विभिन्न प्रारूपों (पैटर्न) को सुनने से बच्चों को स्वयं ही नृत्य करने में सहायता मिलती है।
- पैर से थाप लगाएँ।
- गीत की धुन पर ताली बजाएँ।

उदाहरण के लिए—

- पैर के अँगूठे और तलवे अथवा एड़ी और तलवे का उपयोग करें।
- घेरा बनाएँ।
- हाथ से ताली बजाकर और पैर से थाप लगाकर नृत्य करें।
- चित्रों को देखकर अनुकरण करें।
- बाएँ और दाएँ दोनों पैरों का उपयोग करें।
- हाथों से चार मात्रा की लय या ताल बजाएँ।

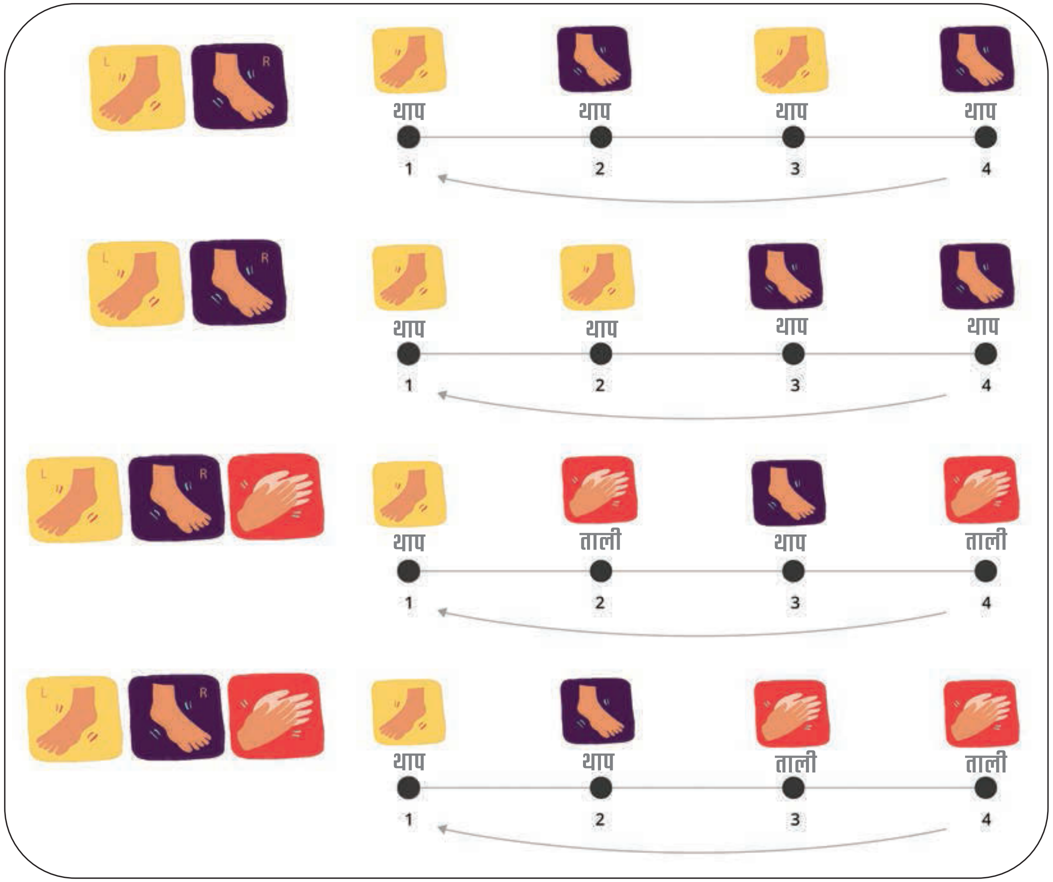

शिक्षक संकेत

पैर के अँगूठे और एड़ी का समन्वय बनाने तथा समूह बनाने में बच्चों की सहायता करें।

जब दो या दो से अधिक लोग समूह में एक साथ नृत्य कर रहे हों तो समन्वय बनाकर एक साथ नृत्य करना महत्वपूर्ण है। क्या आपको आनंद आया? अपने सहपाठियों के साथ अपनी प्रसन्नता साझा करें।

गतिविधि 3 अंग संचालन को पहचानें

क्या आप इनके अंग संचालन की क्रियाओं को पहचान सकते हैं? ये सब क्या कर रहे हैं? लिखिए—

1

2

3

4

5

6

गतिविधि 4 चार मात्रा पर अंग संचालन

शिक्षक संकेत

चार ठेकों के लिए गतिविधि 2 को देखें।

चार मात्रा के समूहों के विभिन्न संयोजनों का उपयोग करें।

- मुद्राओं के साथ अंग संचालन की सरल संरचना बनाएँ।
- अपने समूह के साथ हस्त मुद्राएँ बनाएँ।

इसके साथ ही परिचित बोल भी बोलते जाएँ। ताल सहित उदाहरण—

ना धिन धिन ना

या

तक धिमि तक झुनू

या

ता थई थई तत

और इसी तरह आगे बढ़ें...

गतिविधि 5 हस्त मुद्राएँ

पशुओं की गतिविधियों का अवलोकन करें और उनका अनुकरण करें। नीचे हाथों और उँगलियों की कुछ मुद्राएँ दी गई हैं जो विभिन्न प्रकार के फूलों और पशु-पक्षियों को प्रदर्शित करती हैं।

उड़ता पक्षी

पुष्प

सर्प

हाथ तथा उँगलियों के संचलन का अभ्यास करें और पक्षियों, मनुष्यों, पशुओं और पेड़ों की स्थितियों आदि को देखें तथा हाथों और उँगलियों से इनकी मुद्राएँ बनाएँ।

मछली

तोता

पशु

गतिविधि 6 हाथों एवं पैरों का समन्वय

किसी गीत की एक पंक्ति या एक छोटी-सी कहानी पर अपने मित्रों के साथ नृत्य करें। चार मात्रा में बोल कहते हुए हाथों एवं उँगलियों की विभिन्न मुद्राओं के साथ समन्वय करें।

क्या आप चार एवं आठ मात्रा की लय को पहचान सकते हैं?

क्या आप इन छंदों पर पूरे जोश के साथ नृत्य कर सकते हैं?

अपने हाथों से पशु-पक्षी, फूल, प्रकृति आदि को प्रदर्शित करने के लिए हस्त मुद्राएँ बनाएँ ...

हाँ, नृत्य करते रहें!

शिक्षक संकेत

चार मात्रा के सरल गीत का सुझाव दें।

0338CH12

12 आनंद के लिए नृत्य

नृत्य, हमारे संपूर्ण शरीर का उपयोग करके, बिना शब्दों के कहानी कहने का माध्यम है। यह दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों को शैलीगत एवं कलात्मक रूप से अभिव्यक्त करता है। नृत्य में बहुत-सी नई विशेषताओं को समाहित किया जा सकता है जहाँ प्रत्येक व्यक्ति नए विचारों और संचलन को सम्मिलित कर सकता है।

गतिविधि 1 अपने शरीर के अंगों को पहचानिए

इस गतिविधि में हम अपने शरीर के अंगों को जानेंगे।

- आप अपने हाथों को ऊपर उठाते हुए साँस को अंदर ले सकते हैं।
- ऐसा करने से आपको ऊर्जा में वृद्धि होने की अनुभूति होगी।

हमारी श्वास ठीक उसी तरह चलती हैं जैसे नृत्य में संगीत। योग की तरह श्वास भीतर और बाहर लें।

चार मात्रा के लयबद्ध तरीके से श्वास लेने के अभ्यास के साथ अपने शरीर को गतिबद्ध करने का प्रयास करें। हमारा शरीर विभिन्न प्रकार के अंगों वाला जादुई पिटारा है, जैसे-जैसे आप स्वयं को जानेंगे, आपको स्वयं की अभिव्यक्ति के कई तरीके मिलेंगे।

नृत्य में शरीर के अंग दो भागों में विभाजित होते हैं—

1. शरीर के बड़े अंग
2. शरीर के छोटे अंग

शरीर के बड़े अंग

इनमें सिर, हाथ, पैर और कमर आदि सम्मिलित हैं।

शरीर के छोटे-छोटे अंग

इनमें कंधे, आँखें, भौंहें,
गाल, नाक, जबड़ा, होंठ, दाँत, जीभ,
ठुड्डी, चेहरा और अन्य अंगों में— एड़ी, टखने,
पैर के अँगूठे और उँगलियाँ आदि सम्मिलित हैं।

क्या आप थिरकने के लिए तैयार हैं!

अब आपको शरीर के बड़े और छोटे दोनों अंगों का उपयोग करना है। अपने शरीर के प्रतिदिन किए जाने वाले कार्यों को नृत्य और हस्त मुद्राओं से प्रदर्शित करें।

गतिविधि 2 शरीर का लयबद्ध संचालन करें

कल्पना कीजिए कि आप अपने मित्रों के साथ घर के बाहर प्राकृतिक वातावरण में खेल रहे हैं। इसे दर्शाने के लिए आप अपनी आँखों, सिर, होंठ, हाथ, उँगलियों आदि को हिलाकर, कूदकर और उत्साहपूर्वक दौड़कर, बड़े-बड़े कदम उठाकर किस प्रकार से प्रदर्शन करते हैं।

साथ ही जिस तरह से पशु-पक्षी, पेड़ आदि अपने बड़े और छोटे अंगों का उपयोग करते हैं आप उनका अनुकरण करें। इसके अलावा, छोटी-छोटी गतिविधियों में ताल का उपयोग करते हुए, लय में नृत्य करें और गाएँ। उदाहरण—

एक, दो, तीन, चार – चार, तीन, दो, एक

आइए, उपर्युक्त सभी छोटी गतिविधियों को साथ में लेकर नृत्य के माध्यम से अपनी नियमित दिनचर्या की गतिविधियों को प्रदर्शित करें।

एक ऐसा नृत्य बनाएँ, जो आपकी दिनचर्या को प्रदर्शित करता हो।

गतिविधि 3 नृत्य में दिनचर्या को प्रदर्शित करना

अपने शरीर के अंगों का उपयोग करते हुए दर्शाएँ—

- जागना
- नाश्ता करना
- स्वादिष्ट भोजन करना
- बहुत सारा गृहकार्य करना
- साइकिल चलाना
- अन्य गतिविधियाँ
- बूढ़े व्यक्ति की तरह चलना
- आकाश में उड़ते पक्षी की तरह नाचना

स्वयं की इस कहानी को दर्शाने में अपने पूरे शरीर का उपयोग करें। आप एक कथाकार हैं और यह नृत्य एक विशेष कहानी है।

क्या आपने अपने शरीर के बड़े और छोटे अंगों के बारे में सीखा कि नृत्य में इनका उपयोग किस प्रकार किया जाता है?

आपने कहानी कहने में किस प्रकार से इनका उपयोग किया?

क्या आप अपने मित्रों के साथ नृत्य में समन्वय स्थापित करना सीख गए?

टिप्पणी

गतिविधि 4 राऊत दोहा

अरसी फूले घमाधम भइया मुनगा फुले सफेद।
नानपन म केंवरा बदेंव, जवानी म होय भेंट।।
एक पार नदी वो पार नदी, बीच में टेड़गी रूख।
सोन चिरइय्या गार पारे, हेरे बर बड़ दुख।।
बासी पानी जे पिये, भुंजे हर्रा खाय।
बंभूर-लीम के दतवन करे, ते घर बैंद न जाय।
भले गाँव गंडई भइया, बहुते उपजे गोंदा।
सब भाई दोहा पारिन, राजू भइगे कोंदा।।
आवत दियेन गारी गोड़हा, जावत दियेन असीस।
तुम तो बइठो रंग महल म, जुग जियो लाख बरीस।।

गतिविधि 5 अपने लोक नृत्य का चित्रण करें

राऊत-नाचा

अर्थ - अलसी घना-घना खिला है और सहजन सफेद खिला है। बचपन में मैंने मित्रता की जिससे बहुत दिनों बाद भेंट हुई। इस पार नदी है उस पार भी नदी है बीच में टेढ़ा -मेढ़ा पेड़ है, जिस पर सोने की चिड़िया ने अंडे दिये हैं, उसे निकालने में बड़ा कष्ट होता है। जो रात का बचा पानी पीकर, भुने हुए हरड़ को खाता है। नीम या बबूल के दातौन करता है उसके घर में वैद्य की जरूरत नहीं पड़ती। गडंई गाँव बहुत अच्छा वहाँ गेदे के फूल बहुत खिलते हैं। नाचने वाले सभी भाइयों ने दोहे का उच्चारण किया लेकिन राजू ने नहीं, लगता है कि राजू गूँगा है। आते समय हमने भला-बुरा कहा लेकिन जाते समय आशीष देकर जा रहे हैं, कि तुम इसी तरह रंग महल में निवास करो और जुग-जुग जियो।

13 आइए, नृत्य करते हुए खेलें

इस नृत्य की नई दुनिया में आपको नृत्य के सभी चरणों को ध्यान से देखना और वाद्ययंत्रों को सुनना है।

नृत्य में पद संचालन या पैरों की गति की कुछ विधियाँ होती हैं। नृत्य का संचलन वाद्ययंत्रों की लय पर निर्भर करता है। क्या आप बता सकते हैं कि नृत्य में ध्वनि और ताल के लिए किस प्रकार के वाद्ययंत्रों का उपयोग किया जाता है?

0338CH13

गतिविधि 1 शृंखलाबद्ध संचलन

थाप (टैप) पर आधारित संचलन करें। टैप-टैप-टो-टैप या टैप-टैप-हील-हील-टैप के साथ ताली बजाएँ।

- अपने पैरों से लयबद्ध रूप से थाप मारें।
- श◌ृंखलाबद्ध चलने का प्रयास करें।

उदाहरण— घेरे में चलें अथवा गोल आकार में घूमें।

आकृतियाँ अलग-अलग प्रकार की होती हैं, जैसे— घेरा, सर्पिल, पंक्ति आदि। क्या आप अपने नृत्य में ये आकृतियाँ बना सकते हैं?

जब आप एक पैटर्न में चलते हैं तो एक साथ मिलकर लय में 1, 2, 3, 4; 4, 3, 2, 1 गिनें।

गतिविधि 2 वाद्ययंत्र एवं रंगमच सामग्री के साथ आनंद लें

उपलब्ध वाद्ययंत्रों के उपयोग से लयबद्ध नृत्य गति का प्रयास करें।

इन वाद्ययंत्रों के नाम बताएँ—

क्या आपको बर्तनों से ध्वनि उत्पन्न करने में आनंद आता है!

आप रसोईघर के बर्तनों का भी उपयोग वाद्ययंत्रों के रूप में कर सकते हैं।

आइए, वाद्ययंत्रों के साथ अब और अधिक कल्पना करें!

नृत्य में प्रयोग की जाने वाली उपलब्ध सामग्री के साथ नृत्य करें।

उदाहरण— नृत्य सामग्री के रूप में फीते या रिंग का उपयोग करना।

नृत्य के नवीन संचलनों का पता लगाएँ।

क्या आपको नृत्य में रंगमच सामग्री उपयोग करने में आनंद आया?

अब संगीत और लय के साथ संचलन करें।

हाँ... अब हम इन तीनों विधाओं (गायन, वादन और नृत्य) का उपयोग एक साथ करने का प्रयास करेंगे।

गतिविधि 3 संगीत के साथ अंग संचालन

समूह 1 – गीत के साथ अंग संचलन करें।

समूह 2 – एक गीत गाएँ।

समूह 3 – गीत के साथ ताल दें।

शिक्षक संकेत

तीन समूह बनाएँ। सभी समूहों का आपस में समन्वय होना चाहिए।

गतिविधि 4 तीन मात्रा का ठेका

आइए, इस गतिविधि में हम लय में सुधार करें।

आप 4 मात्रा के ठेके से परिचित हैं। यहाँ हम 3 मात्रा के ठेके का पता लगाएँगे।

3 मात्रा का ठेका या बोल— एक, दो, तीन या त, कि, ट या कदम थाप कदम ...

क्या आप 2, 3 और 4 मात्राओं के संयोजन के लिए तैयार हैं?

गतिविधि 5 विभिन्न मात्रा के ठेकों का स्वरूप (पैटर्न)

कक्षा को तीन समूहों में विभाजित करें।

समूह 1 – 2 मात्रा का ठेका— एक, दो गिनेंगे।

समूह 2 – 3 मात्रा का ठेका— एक, दो, तीन गिनेंगे।

समूह 3 – 4 मात्रा का ठेका— एक, दो, तीन, चार गिनेंगे।

ताली एवं कदम थाप के साथ एक के बाद एक ठेका गिनते जाएँ। इस गतिविधि में समन्वय के साथ शरीर का संचलन करें।

क्या आप समझ गए हैं कि एक साथ अभ्यास करना बहुत महत्वपूर्ण और आवश्यक है?

नृत्य की भंगिमाओं में समानता के लिए अभ्यास की बहुत आवश्यकता है फिर चाहे आप दो लोग हैं या फिर एक समूह है।

शिक्षक संकेत

- समूह बनाने और गिनने में विद्यार्थियों की सहायता करें।
- ठेका अर्थात मात्रा की मूर्त रूप अभिव्यक्ति।

आपने नृत्य करने के लिए कौन-से वाद्ययंत्र का उपयोग किया?

क्या आप अपने मित्रों के साथ अच्छी तरह समन्वय करने में सक्षम हुए?

14 प्रकृति के साथ नृत्य

क्या आपने कभी प्रकृति को नृत्य करते देखा है? प्रकृति में किस प्रकार की लय या गतियाँ होती हैं? ये गतियाँ कब होती हैं? हाँ! आपके आस-पास नृत्य के कई प्रकार के तत्व हैं। प्रकृति की भी अपनी विशेष नृत्य गतियाँ हैं।

0338CH14

गतिविधि 1 प्रकृति एवं शारीरिक गतियाँ

अपने हाथों, बाँहों और शरीर के माध्यम से, सुगम एवं प्रवाहपूर्ण ढंग से उन गतियों को प्रदर्शित करने का प्रयास करें, जो आप प्रकृति में देखते हैं।

प्रकृति में बहुत सारे पेड़-पौधे और फूल हैं। उनके आकार भी भिन्न-भिन्न हैं। अपने आस-पास का अवलोकन करें—

- पशु, पक्षी, तितलियाँ और जीव-जंतु
- हाथी कैसे चलता है, बंदर कैसे व्यवहार करता है?
- अपनी पूरी बाँहों का उपयोग करते हुए, लंबे-लंबे कदमों से, शरीर को हिला-डुलाकर उनकी नकल करने का प्रयास करें।

आइए, हम लय के साथ पद संचालन करके नृत्य करें। आप अपनी आवाज से गाकर संगीत का सृजन कर सकते हैं।

गतिविधि 2 प्रकृति और लयबद्ध संचलन

प्रकृति के किसी पशु या पक्षी या किसी एक तत्व का चुनाव करें।

अपने शरीर के बड़े और छोटे अंगों के माध्यम से इन गतियों को प्रदर्शित करें। उदाहरण के लिए मोर कैसे लयबद्ध तरीके से नाचता हैं आप उसे चार मात्रा में एक सहज ढंग से प्रस्तुत करें —

- सिर को आगे-पीछे हिलाएँ।
- दोनों हाथों को फैलाएँ।
- पैरों के अँगूठे और उँगलियों के बल पर चलें।

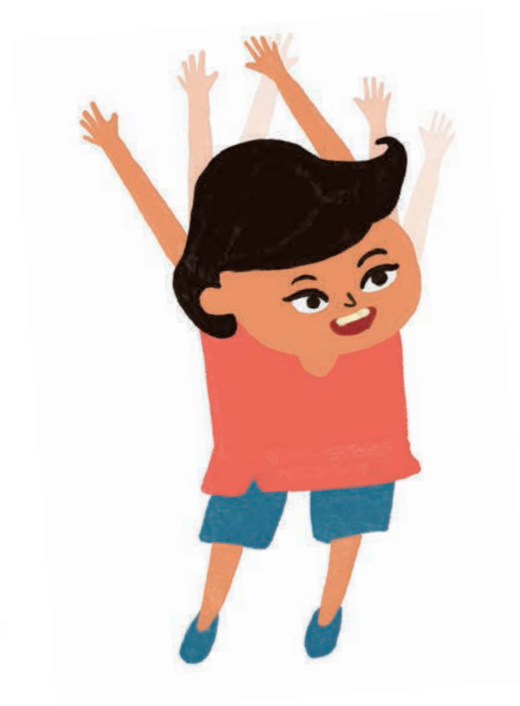

गतिविधि 3 नृत्य में प्रकृति की कहानी

आइए, अब समय है साथ मिलकर मस्ती करने का। क्या आप तैयार हैं? प्रकृति से अपना पसंदीदा विषय चुनें। उदाहरण —

- वर्षा, गर्मी, सर्दी, वसंत आदि ऋतुएँ।
- जंगल में एक दिन।
- तेज बारिश।

आप बदलते मौसमों को प्रदर्शित कर सकते हैं —

- गर्मी के मौसम के लिए सूर्य — थकान के साथ गोलाकार गति करें।
- सर्दी के मौसम के लिए ठंडी हवा — अपने हाथों को अगल-बगल घुमाएँ।
- बरसात के मौसम के लिए बारिश और तूफान — बड़े-बड़े कदमों के साथ मुड़ें और घूमें।
- वसंत ऋतु के लिए होली खेलना — आप जैसे भी चाहें।

नृत्य के माध्यम से प्रकृति की कहानी सुनाएँ। यहाँ भी एक-दूसरे के साथ बहुत समन्वय और समझ बनाने की आवश्यकता होगी।

क्या आपको कोई लोक नृत्य याद है जो आपने पहले सीखा है?

आइए, शुरू करते हैं ...

गतिविधि 4 स्थानीय गीत पर नृत्य

डंडा गीत

कामा बोवाबो रामे रम केरिया गा,

कामा बोवाबो गोंदा के फूल

तरी हरी नाना, नाना रे भाई

बरवरी बोवाबो रामे रम केरिया गा

कुँवा पारे बोंवाबो, गोदा के फूल

तरी हरी नाना, नाना रे भाई।

अधिकतर लोक नृत्य समूह में किए जाते हैं।

प्रत्येक लोक नृत्य का एक मुख्य विषय होता है।

लोक नृत्य मिलन-समारोहों एवं उत्सवों आदि के समय किया जाता है।

लोक नृत्य में स्त्री हो या पुरुष, सभी भाग लेते हैं।

अर्थ - डंडा नृत्य गीत प्रश्नोत्तर शैली का है, जिसमें कहा जा रहा है कि कहाँ हम भिंडी लगायें और कहाँ गेंदा के फूल। बाड़ी में भिंडी के बीज लगायेंगे और कुंए के नजदीक गेंदा के फूल लगायेंगे।

रंगमंच

शिक्षकों के लिए

- जिस प्रकार नाटक के आलेख को अभिनय और दृश्य में विभक्त किया जाता है, उसी अवधारणा को आधार बनाते हुए अध्यायों और पाठों को प्रस्तुत किया गया है।

  अभिनय 1 = अध्याय 1

  दृश्य 1 = पाठ 1

  दृश्य 2 = पाठ 2
- **विदूषक**– यह अनोखा पात्र संस्कृत नाटकों में हास्य एवं विलक्षण परिस्थितियों को दर्शाने के लिए प्रयुक्त किया जाता था। विदूषक भारतीय पारंपरिक रंगमंच का विशेष पात्र है, जो बच्चों को रंगमंच की अवधारणाओं और विचारों से परिचित कराता है। यह पात्र परिस्थिति के अनुसार किसी भी रूप में हो सकता है और उसके बारे में बता सकता है। यहाँ पर यह बच्चों के मित्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है। जब बच्चे एक गतिविधि से दूसरी गतिविधि की ओर बढ़ते हैं तो वह जानकारी के साथ उनका मार्गदर्शन भी करता है। विदूषक अपने अभिनय द्वारा बच्चों के लिए महत्वपूर्ण बातों, सीख आदि को प्रदर्शित करते हैं। विदूषक अपने अभिनय द्वारा बच्चों के लिए महत्वपूर्ण बातें, पाठ आदि को संचालित करते हैं।
- सुचारू और सुरक्षित गतिविधियों के लिए विद्यार्थियों को एक बड़ा खाली कक्ष, गतिविधि कक्ष अथवा मैदान उपलब्ध कराएँ, जहाँ वे मुक्त रूप से गतिविधियाँ कर सकें।
- शिक्षक या तो गतिविधियों के प्रदर्शन की व्यवस्था करें या स्वयं उन्हें प्रदर्शित करें। इसके बाद ही विद्यार्थियों को उसे दोहराने का निर्देश दें। यह महत्वपूर्ण है कि वे विद्यार्थी को उनके स्वयं के विचारों और योजनाओं को प्रस्तुत करने दें। शिक्षक की सहायता के लिए क्यू.आर. कोड में अन्य गतिविधियों के अतिरिक्त उदाहरण एवं विचार दिए गए हैं।
- शिक्षक आवश्यकतानुसार इन गतिविधियों को कक्षा में दोहराने के लिए स्वतंत्र हैं।

क्या आपने मित्रों के साथ (अभिनय) नाटक किया है?

मुझे पता है, आपको भिन्न-भिन्न परिस्थितियों को निर्मित करने में आनंद आता होगा।

मुझे विश्वास है आपने खिलौनों के साथ कहानियाँ बनाई होंगी।

आपने एक अलग ही दुनिया की कल्पना की होगी ...

यदि हाँ, तो आप पहले से ही रंगमंच में अच्छे हैं। रंगमंच कहानियों को जीवंत करने का एक आनंददायी साधन है। रंगमंच पर आप जो कल्पना करते हैं, वे घटनाएँ आपके सामने साक्षात घटित हो सकती हैं। योजनाएँ, भावनाएँ, परिस्थितियाँ और कहानियाँ जब सामने रंगमंच पर घटित होती हैं, तब वे जीवंतता लेकर आती हैं। रोमांचक लग रहा है, ना!

अब इन कहानियों, परिस्थितियों और भावनाओं का एक हिस्सा बनने की कल्पना कीजिए। अपने वास्तविक जीवन में लौटने से पहले कुछ समय के लिए उन्हें जीएँ। क्या ये और भी अधिक रोमांचक नहीं है?

आइए, नाटक की रोमांचक दुनिया की यात्रा शुरू करें, जो आपको हँसा सकती है या रूला सकती है, यहाँ आप जीवन के अनेक सबक भी सीखेंगे।

मैं रंगमंच में अनेक वर्षों से हूँ। मैं रंगमंच में होने वाली हर छोटी-बड़ी बारीकियों से परिचित हूँ और यहाँ हर क्षण का आनंद लेता हूँ। आइए, मैं आपको अपनी दुनिया से परिचित कराने के लिए एक अत्यंत रोमांचक यात्रा पर ले चलता हूँ!

नमस्ते! मेरा नाम विदूषक है।

आइए, सबसे पहले उन वस्तुओं की एक सूची बनाएँ जिन्हें आप रंगमंच का हिस्सा मानते हैं!

_______________ _______________ _______________

_______________ _______________ _______________

अति उत्तम! क्या आपसे कुछ छूट गया? निश्चित रूप से आपकी सूची अच्छी लग रही है! लेकिन आपने जो भी वस्तुएँ सूचीबद्ध की हैं, क्या उसमें 'आपको आपके चारों ओर का' और 'अपने भीतर का स्थान (मन)' लिखना याद था? ये बहुत महत्वपूर्ण वस्तुएँ हैं जिनकी आपको आवश्यकता होगी। आइए, इनके बारे में और अधिक जानें ...

आइए, खोजें!

15 आइए, पता लगाएँ

अभिनय 1 दृश्य 1 – आश्चर्यजनक रूप से चलना

0338CH15

गतिविधि 1 तीव्र कदम

जब आप अपने आस-पास के स्थान, वस्तुओं, अपने शरीर, मस्तिष्क और समूह के अन्य सदस्यों के साथ संबंधों को खोजते हैं तो संभावनाओं और सोचने के नए तरीकों का ज्ञान होता है।

कमरे, मैदान या बरामदे में अनियमित ढंग से अर्थात अस्त-व्यस्त होकर चलें। न किसी एक पथ पर चलते जाएँ और न ही गोलाकार पथ में चलें। आपको तब तक नहीं रूकना है जब तक निर्देश न दिया जाए। अपने साथियों को न छुएँ और न ही उनके पैरों पर पैर रखें। ध्यान से सुनें और निर्देशों का पालन करें—

- शिक्षक आपको चलने की गति के लिए निर्देश देंगे।
- गति 5 आपके चलने की सामान्य गति है। गति 1 सबसे धीमी है और गति 10 सबसे तेज (बिना दौड़े)।
- प्रारंभ करें। कमरे में 5 की गति से चलें, 8 से चलें, 3 से चलें। (20–25 सेंकड के अंतराल पर ऐसे ही चलते रहें)
- इसके बाद 4–5 मिनट तक दोहराएँ (जब शिक्षक को अनुभव हो कि छात्र सही लय में हैं), थमने और फिर तेजी से चलने का निर्देश दें।

आप सीखेंगे

सतर्कता और ध्यान, कल्पना एकाग्रता, सामूहिक कार्य करना, चेहरे की भाव-भंगिमा और आंगिक भाषा।

गतिविधि 2 हम एक परिस्थिति में हैं

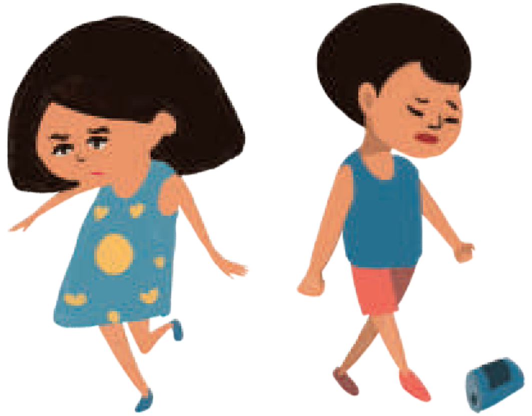

अन्वेषण का शाब्दिक अर्थ होता है अज्ञात से ज्ञात की ओर जाना। इसका अर्थ है नए प्रसंग सीखने के लिए खोज करना। तो क्या आप अपने आस-पास के स्थान की खोज करने के लिए तैयार हैं, अर्थात जिस कमरे में आप हैं, उसकी दीवारें, फर्श, छत और आपके आस-पास की वस्तुएँ और आपके भीतर का स्थान अर्थात आपका मन, विचार और कल्पनाएँ।

शिक्षक संकेत

गतिविधि की शुरुआत उत्साहपूर्वक करें। अलग-अलग गति के 4–5 चक्रों के बाद परिस्थिति में सरल परिवर्तन करें। उदाहरण पीछे दिए जा चुके हैं। शिक्षक अन्य उदाहरण भी जोड़ सकते हैं। प्रत्येक नए निर्देश के बीच 8–10 सेकंड का अंतराल दिया जा सकता है।

विभिन्न परिस्थितियों में चलना

स्तर 1

“ऐसे चलें जैसे आप काँटों पर चल रहे हैं”,
“ऐसे चलें जैसे तेल फैलने के कारण फर्श फिसलन भरा है”,
“ऐसे चलें जैसे आप नरम रूई पर चल रहे हैं”, इत्यादि।

स्तर 2

“ऐसे चले जैसे आप बर्फ पर नंगे पैर चल रहे हैं... अब जैसे वहाँ ठंडी हवा चल रही है... आपके पास एक मफलर के अतिरिक्त और कोई गर्म कपड़ा नहीं है... तेज हवा उसे उड़ाकर ले गई।”

घेरा समय की टिप्पणियाँ

चर्चा एवं प्रतिक्रिया

- गतिविधि के किस भाग में आपको सबसे अधिक आनंद आया? और क्यों?
- सबसे कठिन एवं उबाऊ भाग क्या था? और क्यों?
- आपने अवलोकन के दौरान क्या नया जाना?
- आपने अपने बारे में कौन-सी नई बात सीखी, यदि आपको अवसर मिलेगा तो आप कौन-सी परिस्थिति का निर्माण करेंगे?
- क्या आप ऐसी किसी परिस्थिति को अपने वास्तविक जीवन की किसी घटना से जोड़ सकते हैं, जिसका आपने अनुभव किया है?

यह बहुत आनंददायी रहा होगा! जब भी खाली समय मिले, आप इस खेल को खेल सकते हैं। इस खेल में एक बच्चा निर्देश देगा और बाकी बच्चे उसका पालन करेंगे। यह गतिविधि महत्वपूर्ण है क्योंकि यह आनंददायक तो है ही, साथ ही आपको 'सर्तक' भी बना रही है। आपको तुरंत निर्देशों का जवाब देना होगा इसलिए आपका 'ध्यान केंद्रित' रहना चाहिए।

रंगमंच पर नाट्य कला के दौरान आपको सर्तक रहना और ध्यान केंद्रित रखना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि कुछ क्षण के विलंब से ही पूरा नाट्य प्रदर्शन खराब हो सकता है।

शिक्षक संकेत

यह एक ऐसा अभ्यास है, जिसका पालन सभी गतिविधियों के लिए किया जाना चाहिए।

गतिविधि के अंत में, हर कोई अपना अनुभव साझा करने के लिए एक घेरे में बैठता है।

गतिविधि 3 बैठो-मुड़ो-कूदो

गतिविधि की शुरुआत उत्साहपूर्वक करें। सावधान रहें! अपने मित्रों के पैरों को बचाते हुए और दूसरों को बिना छुए कूदें। शिक्षक के निर्देशों का अनुसरण करें—

शिक्षक के 'बैठो' बोलने पर बैठ जाएँ, फिर चलना जारी रखें। शिक्षक के 'मुड़ो' बोलने पर मुड़ जाएँ और फिर चलना जारी रखें। शिक्षक के 'कूदो' बोलने पर अपने स्थान पर कूदें, फिर चलना जारी रखें। निर्देशों की गति एवं क्रम में परिवर्तन होंगे, अतः सतर्क रहें!

स्तर 1

क्रियाओं को आपस में बदलें! अब 'बैठें' का अर्थ 'मुड़ें', 'मुड़ें' का अर्थ 'कूदें' और 'कूदें' का अर्थ 'बैठें' है (गति एवं क्रम को बदलें)।

स्तर 2

बैठें, मुड़ें और कूदें शब्दों को दूसरे शब्दों से बदलें। उदाहरण के लिए इडली का अर्थ 'बैठना' और वड़ा का अर्थ 'खड़े होना' और सांभर का अर्थ है 'कूदना'। शिक्षक एक कहानी बना सकते हैं जिनमें ये शब्द छिपे हों। उदाहरण के लिए कल मेरी मित्र दोपहर के भोजन के लिए अपने डिब्बे में वड़े लाई थी। उसने एक टुकड़ा मुझे दिया परंतु उसमें सांभर नहीं था।

आइए, अब हम एक और खेल खेलते हैं जो आपसे पिछले खेल की तुलना में अधिक सतर्क होने और ध्यान केंद्रित करने की अपेक्षा करता है। क्या आप तैयार हैं?

चर्चा एवं प्रतिक्रिया

- आपको गतिविधि के किस भाग में सबसे अधिक आनंद आया? और क्यों?
- क्या निर्देशों के अर्थों को आपस में बदलने से यह अधिक चुनौतीपूर्ण बन गया?
- आप इडली, वड़ा और सांभर के स्थान पर क्या शब्द प्रयोग करेंगे?

घेरा समय की टिप्पणियाँ

आपने अच्छे ढंग से खेला। आप अगले स्तर के लिए तैयार हैं! लेकिन मुझे विश्वास है कि आपको यह अनुभव हुआ होगा कि आपको अभी और अधिक अभ्यास की आवश्यकता है। जब भी आपको खाली समय मिले, ये खेल खेलें। इससे न केवल आपको आनंद आएगा बल्कि आपकी क्षमता भी बढ़ेगी। क्या आप जानना चाहते हैं कि हम आगे क्या करेंगे?

दृश्य 2 – बिना बोले संचार

संचार हमारे जीवन का महत्वपूर्ण भाग है। संचार क्या है? यह दो या दो से अधिक लोगों के मध्य विचारों और भावनाओं का पारस्परिक आदान-प्रदान है।

क्या आप अपने परिवार एवं मित्रों से बात किए बिना एक भी दिन की कल्पना कर सकते हैं? क्या आप बिना किसी से बात किए अपने जीवन की कल्पना कर सकते हैं?

लेकिन, ठहरिए। क्या संचार बात करने तक ही सीमित है? क्या आप बिना बोले अपने आप को व्यक्त कर सकते हैं? क्या हम बिना बोले भी बहुत-से प्रसंगों की अभिव्यक्ति नहीं करते? क्या आप जानते हैं कि कुछ लोग हाथों के संकेतों से सांकेतिक भाषा में बात कर सकते हैं?

चलिए, देखते हैं क्या यह संभव है? यह बोलने से भी अधिक आनंददायी हो सकता है!

- जमीन खोदना
- रस्सी खींचना

गतिविधि 4 स्थिर होना और अभिनय पहचानना

जब तक आपको शिक्षक की ताली न सुनाई दे, तब तक अनियमित ढंग से चलें। शिक्षक के ताली बजाते ही मूर्तिवत स्थिर हो जाएँ। शिक्षक एक बच्चे को चुनेगा और शेष बच्चे उस बच्चे के अभिनय को पहचानेंगे। जब तक फिर से ताली की ध्वनि सुनाई न दें, सब अनियमित ढंग से चलते रहेंगे। यह प्रक्रिया इसी तरह चलती रहेगी।

अपने अनुमानों को यथासंभव रचनात्मक, आनंददायी और रोचक बनाने का प्रयास करें। कोई भी उत्तर गलत या सही नहीं है।

- पानी पीना
- किसी को पुकारना

चर्चा एवं प्रतिक्रिया

- आपको गतिविधि के किस भाग में सबसे अधिक आनंद आया? और क्यों?
- क्या सभी गतिविधियों को पहचानना सरल था? क्यों और क्यों नहीं?
- आपने कौन-सी नई गतिविधि सीखी?
- क्या आप इस गतिविधि का उपयोग किसी और रूप में कर सकते हैं?

घेरा समय की टिप्पणियाँ

स्तर 1 – कुछ हाव-भाव

जब शिक्षक ताली बजाएँ, विभिन्न प्रकार के भाव निर्मित करें और स्थिर हो जाएँ। उदाहरण के लिए एक हाथ ठोड़ी पर रखें (विचारने का भाव) और दूसरे हाथ की सहायता से प्रश्न पूछें।

स्तर 2 – कुछ भाव मुद्राएँ

विभिन्न प्रकार की मुद्राएँ बनाएँ और शारीरिक अभिनय करें और जब शिक्षक ताली बजाए तो आप मूर्तिवत स्थिर हो जाएँ, उदाहरण के लिए खेती, चित्रकारी, लकड़ी काटने का अभिनय इत्यादि।

- जीत का जश्न मना रहे हैं
- सिर पर टोकरी लिए हुए

वाह! यह बहुत आनंददायक था। घर, सड़क या अन्य किसी भी स्थान पर जाएँ, जब आप लोगों को अलग-अलग भाव मुद्राओं में देखें तो इन्हें रोचक अर्थ देने का प्रयास करें। यदि आप ध्यान दें, तो पाएँगे कि यह कितना आनंददायक है। नए अर्थ देने की यह क्षमता आपकी 'रचनात्मकता' को बढ़ाएगी। रचनात्मकता कुछ नया, मौलिक और असामान्य सृजित करने की क्षमता है। ये वे विचार हैं जो संचार में सहायता करते हैं, समस्या के लिए समाधान प्रदान करते हैं और साथ में आनंददायी भी हैं। आपकी रचनात्मक रूप से सोचने की यह क्षमता आयु बढ़ने के साथ–साथ और बढ़ेगी और आपकी सहायता करेगी।

रंगमंच में आप इसका उपयोग विभिन्न नए दृश्यों के निर्माण में कर सकते हैं। अब अगली गतिविधि नए दृश्यों और परिस्थितियों के निर्माण से संबंधित है।

गतिविधि 5 समूह संरचना

सुरक्षित आश्रय के लिए प्रार्थना

निर्देश— सभी को एक सांकेतिक शब्द दिया गया है और आप अपने समूह में इस बारे में चर्चा करके योजना बना सकते हैं (3 मिनट की अवधि में)।

आप दृश्य को प्रदर्शित करने के लिए दृश्य की आवश्यकता के अनुसार अपने समूह के साथ अलग-अलग स्थान पर खड़े हो जाएँ। ऐसी शारीरिक मुद्राओं में न खड़े हों, जिससे आपको कठिनाई अनुभव हो। याद रखें कि संपूर्ण विषय को प्रस्तुत करने में प्रत्येक की भूमिका महत्वपूर्ण है। अभिनय करते हुए आपस में बात न करें।

स्तर 1

टेलीविजन देखना, क्रिकेट, बस इत्यादि जैसे शब्द दिए जा सकते हैं। छात्र कल्पना करें और अपना स्थान लें और जितना संभव हो सके, सूक्ष्मताओं को दर्शाएँ।

स्तर 2

बाजार, खेती, विवाह इत्यादि (कठिनाई के स्तर को बढ़ाएँ और बारीकियों पर ध्यान दें)।

शिक्षक संकेत

विद्यार्थियों की संख्या के अनुसार उन्हें 5–6 के समूहों में विभाजित करें।

इन संरचनाओं के अर्थ के बारे में विचार करें।

चर्चा एवं प्रतिक्रिया

- आपको गतिविधि के किस भाग में सबसे अधिक आनंद आया? और क्यों?
- कौन-सी संरचना बनाना सबसे कठिन था?
- आप कौन-सी संरचनाएँ बनाना पसंद करेंगे?
- आपने स्वयं के बारे में कौन-सी नई बात सीखी?

घेरा समय की टिप्पणियाँ

____

____

____

____

क्या आपने देखा कैसे रचनात्मकता आपकी नवीन अभिव्यक्ति वस्तुएँ बनाने में सहायक होती है? बिना बोले अपने विचारों को प्रस्तुत करने के लिए अधिक रचनात्मकता की आवश्यकता होती है। आपने बहुत अच्छे ढंग से अपना काम किया। आपने अपनी बात कहने के लिए अपने शरीर के अंगों का प्रयोग किया, इसे 'आंगिक भाषा' कहते हैं। आप अपने हाथों, पैरों, सिर एवं धड़ का उपयोग भाषा में शब्दों के रूप में कर रहे हैं। यह रचनात्मकता है।

प्रत्येक समूह अपने मित्रों के साथ रचनात्मकता पर विचार-विमर्श करें। यह देखें कि 'कैसे सबसे अलग सोचना' कितना अद्‌भुत है! अपने घर और अलग-अलग परिस्थितियों के अनुभवों को उदाहरण सहित साझा करें। अगली गतिविधि रचनात्मक होने के महत्वपूर्ण पहलूओं में से किसी एक महत्वपूर्ण पहलू पर केंद्रित होगी। चलिए, अगली गतिविधि करते हैं।

गतिविधि 6 जादुई गड्ढा (वस्तु)

निर्देश— आइए, हम एक घेरे में बैठें। इसके बाद सबकी गिनती कर लेंगे। शिक्षक कोई भी एक अंक बोलेंगे। जब आपका अंक बोला जाए तो आपको घेरे के मध्य में जाना होगा। जहाँ अदृश्य जादुई गड्ढा है। अब उस अदृश्य जादुई गड्ढे से किसी काल्पनिक वस्तु को निकालने और उपयोग करने का अभिनय करें। अन्य छात्र उस वस्तु का अनुमान लगाएँगे।

सुझाव — ना केवल आपकी शारीरिक क्रिया (आंगिक भाषा), अपितु आपकी अभिव्यक्ति भी लोगों को बेहतर ढंग से समझाने में सहायक होगी। उदाहरण के लिए चित्र देखें।

क्या वह गेंद पकड़ रही है या कोई भारी पत्थर उठा रही है? (अभिनय में दोनों संभव हैं, लेकिन अभिव्यक्ति में अंतर होगा)। आप क्या सोचते हैं?

____

____

____

स्तर 1

कलम, पुस्तक, कॉफी का मग इत्यादि (क्रियाओं को करने के लिए सुझाई गई वस्तुएँ हैं)। उदाहरण के लिए कलम से लिखना, पुस्तक से पढ़ना और पन्ने पलटना, मग से कॉफी पीना और कॉफी के बहुत गर्म होने का अभिनय करना।

स्तर 2

कील और हथौड़ा, सब्जी और चाकू, टूथब्रश और पेस्ट (छात्र दोनों वस्तुओं का उपयोग साथ-साथ दर्शाएँ)।

वह हाथ में धनुष-बाण लेकर युद्ध का मैदान दिखाने का प्रयास कर रही है। इस चित्र में क्या बदलाव किया जा सकता है?

____

____

____

चर्चा एवं प्रतिक्रिया

- आप कितनी वस्तु-क्रिया अभिनय का अनुमान लगा पाए?
- कौन-सी वस्तु-क्रिया का अभिनय करना सबसे कठिन था?
- वह कौन-सी वस्तुएँ हैं जिन्हें आप जादुई गड्ढे से प्राप्त करना चाहते हैं?
- इस गतिविधि से आपने कौन-सी नई बात सीखी?

घेरा समय की टिप्पणियाँ

आपकी शारीरिक क्रियाओं (शारीरिक हाव–भाव) के अतिरिक्त और क्या समान रूप से महत्वपूर्ण है– आपकी 'अभिव्यक्ति'। यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि अभिनय करते समय आपके चेहरे के हाव–भाव कैसे हैं? जब आप आंगिक भाषा और भाव दोनों को एक साथ अभिव्यक्त करते हैं तो आप 'संवाद' कर रहे होते हैं। यह रचनात्मकता के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यदि आप अपने विचार दूसरों से साझा करने में असमर्थ हैं तो आपका बहुत अच्छा विचार भी व्यर्थ हो सकता है।

रंगमंच कहानियाँ बनाता और उन्हें दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत करता है। इसलिए यदि आप रचनात्मक विचारों में कुशल हैं तो आपको यह सीखना चाहिए कि इन्हें दूसरों के समक्ष कैसे प्रदर्शित किया जाए और उनके साथ कैसे साझा किया जाए?

रंगमंच के साथ नियमित रूप से जुड़े रहने से न केवल आपकी रचनात्मकता बेहतर होगी बल्कि आपके संचार कौशल में भी सुधार होगा। यदि आप अच्छे ढंग से अभिव्यक्ति कर पाते हैं तो आपके विचारों को भी बेहतर ढंग से समझा जा सकेगा। अब हम इस रचनात्मकता और संचार को अगले स्तर पर ले जाएँगे।

0338CH16

16 कल्पना करें

अभिनय 2 दृश्य 3 – परिस्थितिजन्य धारणाएँ

गतिविधि 7 जादू का गड्ढा (परिस्थिति)

आइए, कुछ अलग व्यक्ति बनें और नई रोमांचक परिस्थितियों में उतरकर एक नई दुनिया बनाएँ! यह सब कैसे होता है? आपके मस्तिष्क के माध्यम से! आप जो सोचते हैं, वह वास्तविकता बन जाती है!

आइए, हम एक घेरे में बैठें। इसके बाद सबकी गिनती कर लेंगे। शिक्षक कोई भी एक अंक बोलेंगे। यदि आपका अंक बोला जाए तो आपको घेरे के मध्य में जाना होगा। जहाँ अदृश्य जादुई गड्ढा प्रदर्शित है। पिछली बार की तरह किसी वस्तु को चुनने के बजाय आप किसी परिस्थिति में कूद पड़ें और ऐसा व्यवहार करें जैसे आप उस परिस्थिति का भाग हों। अन्य बच्चे परिस्थिति का अनुमान लगाएँगे। आपस में बात न करें।

सुझाव

जब कुछ क्रियाओं को एक साथ किया जाता है, तब परिस्थितियाँ निर्मित होती हैं।

स्तर 1

तैयार होकर विद्यालय आना, गिर जाना और चिकित्सक के पास जाना।

स्तर 2

दो छात्र एक परिस्थिति का अभिनय करते हैं, एक छात्र उस परिस्थिति को आरंभ करता है और दूसरा छात्र उसमें सम्मिलित होता है। उदाहरण के लिए गिरने पर चिकित्सक के पास जाना। यहाँ एक रोगी और दूसरा चिकित्सक है।

आप सीखेंगे

आंगिक भाषा, आत्मविश्वास, रचनात्मकता, संचार, कल्पना करना और सुनने की क्षमता को विकसित करना आदि।

चर्चा एवं प्रतिक्रिया

- क्या आप परिस्थितियाँ बनाने में सक्षम थे? यदि नहीं, तो क्यों नहीं?
- क्या परिस्थितियाँ आपके अनुभव पर आधारित थीं (देखी गई या घटित हो रही) या काल्पनिक थीं?
- क्या आप अपनी अन्य पाठ्यपुस्तकों के पाठों से प्रेरित होकर परिस्थितियाँ बना सकते हैं?

घेरा समय की टिप्पणियाँ

अब आप समझने लगे हैं कि क्रिया (आंगिक भाषा) और अभिव्यक्ति को मिलाकर 'संचार' को कैसे बेहतर बनाया जा सकता है। इसके लिए 'रचनात्मकता' और 'कल्पनाशीलता' की आवश्यकता होती है। आप देख रहे हैं कि किस प्रकार आप न केवल इन शब्दों को समझ रहे हैं जो रंगमंच के मूल तत्व हैं, अपितु आपके भीतर इन कौशलों का विकास भी हो रहा है।

इन दोनों परिस्थितियों में क्या हो रहा है?

इनकी गतिविधियों (आंगिक भाषा) और भावों को बारीकी से देखें और वर्णन करें।

गतिविधि 8 वस्तु के अन्य उपयोग

निर्देश— शिक्षक एक बच्चे को बुलाकर एक वस्तु देता है (कोई भी कक्षा की वस्तु, जैसे— पेन, डस्टर, चॉक का टुकड़ा आदि), उस वस्तु का उपयोग इसके मूल कार्य के अतिरिक्त किसी अन्य वस्तु के रूप में किया जाना चाहिए। अन्य बच्चे उस पूर्व कल्पित वस्तु का अनुमान लगाएँ। फिर वही वस्तु अगले बच्चे को दे दी जाएगी। वह इसका उपयोग किसी अन्य वस्तु के रूप में करेगा और दूसरे बच्चे अनुमान लगाएँगे। इसके बाद अगला बच्चा इस वस्तु का उपयोग किसी अन्य रूप में करेगा (दूसरों ने जो कुछ किया, उसे दोहराया नहीं जा सकता)।

याद रखें— अभिनय की गई वस्तु का आकार मूल वस्तु के आकार के समान होना चाहिए। उदाहरण के लिए कलम को टूथब्रश या कंघी के रूप में दर्शाया जा सकता है क्योंकि इनका आकार समान है। इसका उपयोग किताब, हेलमेट या जूते आदि के रूप में नहीं किया जा सकता, क्योंकि ये वस्तुएँ आकार में बहुत अलग हैं।

यह लड़की बोतल का उपयोग इस प्रकार कर रही है—

____

____

____

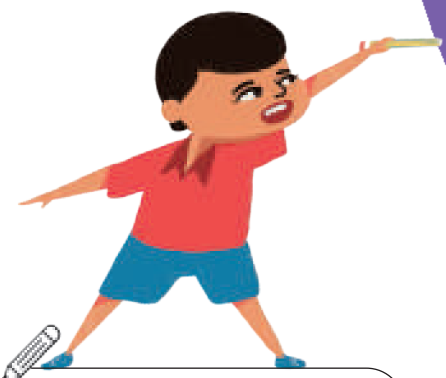

यह लड़का पेंसिल का उपयोग इस प्रकार कर रहा है—

____

____

____

सुझाव

आंगिक भाषा के साथ भावों का उपयोग करने से संचार सुगम होगा।

स्तर 1

पेन, चॉक, डस्टर आदि।

स्तर 2

पुस्तक, बैग आदि (कुछ ऐसा जो स्तर 1 में दी गईं वस्तुओं से बड़ा हो)।

चर्चा एवं प्रतिक्रिया

- आपको गतिविधि के किस भाग में सबसे अधिक आनंद आया? और क्यों?
- किसी वस्तु के पुन: उपयोग की कल्पना करना सरल था या कठिन?
- आपने कितनी वस्तुओं का सही अनुमान लगाया?
- गतिविधि में आप कोई अन्य चीज जोड़ना चाहेंगे?

घेरा समय की टिप्पणियाँ

____

____

____

अभ्यास

वस्तु — पेंसिल बॉक्स

लैपटॉप

खजाने का बक्सा

दरवाजा खोलना

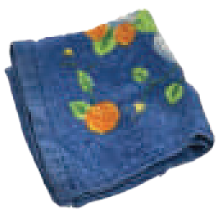

वस्तु — रूमाल

____

____

____

वस्तु — पानी की बोतल

____

____

____

दृश्य 4 – ध्वनि का अनुभव

आवश्यकताएँ— लोक वाद्ययंत्र— तमटे, ताल वाद्य, घंटियाँ, रिकार्ड किया गया वाद्य संगीत (कोई स्वर या गीत का उपयोग नहीं किया जाएगा)।

निर्देश— शिक्षक ध्वनि बजाएँगे। आप अपनी आँखें बंद कर लें और ध्वनि को पूरे ध्यान से सुनें।

आप जिन भावनाओं का अनुभव कर रहे हैं उनका अवलोकन करें। आपके ध्यान में क्या-क्या चित्र आ रहे हैं? अब अपनी आँखें खोलें और रचनात्मक तरीके से उन्हें व्यक्त करें। (आप जो अनुभव करते हैं उसे नृत्य, आंगिक गति और प्रतिक्रिया द्वारा अभिव्यक्त करें। आपस में बात न करें)।

अब हम अगले स्तर 'ध्वनि' पर पहुँच गए हैं। ध्वनि में विचारों और भावनाओं को सामने लाने का गुण होता है। जब आप पक्षियों के चहचहाने की ध्वनि सुनते हैं तो आपको कैसा अनुभव होता है? आप नदी के बहने या समुद्र की लहरों की ध्वनि के बारे में क्या अनुभव करते हैं? प्रत्येक ध्वनि का अलग-अलग व्यक्ति के लिए अलग-अलग अर्थ हो सकता है। आइए, देखें कि आप जो सुनते हैं उसे आप कैसे अर्थ दे सकते हैं। प्रत्येक संगीत अंश आपको क्या संकेत दे रहा है?

गतिविधि 9 ध्वनि के अन्य उपयोग

स्तर 1

स्थानीय ढोलों की लय, मुँह से बजने वाली सीटी की धुन आदि। अलग-अलग मनोदशाओं और भावनाओं को प्रस्तुत करने के लिए सितार, बाँसुरी, वायलिन आदि द्वारा रिकार्ड किए गए संगीत का प्रयोग किया सकता है।

स्तर 2

पहली गतिविधि व्यक्तिगत है परंतु यहाँ प्रतिक्रियाएँ समूह में दर्शानी है। आप जो ध्वनियाँ सुनते हैं उस मनोदशा के लिए एक सरल दृश्य बनाते हैं। उदाहरण के लिए त्यौहार को मनाने के लिए एक जीवंत संगीत अंश की परिकल्पना की जा सकती है; ढोल की गहरी ध्वनि को रहस्यात्मक दृश्य के रूप में दर्शाया जा सकता है।

चर्चा एवं प्रतिक्रिया

- क्या ध्वनियाँ आपको सहज अभिनय के लिए प्रेरित करती हैं?
- आप ध्वनि के अनुसार अभिनय करने को सरल मानते हैं या कठिन?
- क्या आप कक्षा की किसी वस्तु के माध्यम से कोई ध्वनि उत्पन्न कर सकते हैं?
- आपने स्वयं के बारे में कौन-सी नई बात सीखी?

घेरा समय की टिप्पणियाँ

___

___

___

अब तक आपने इन ध्वनियों को कई बार सुना होगा, परंतु आप इसके भीतर छिपे अर्थ को नहीं जान पाए होंगे। हमने अभी जो कुछ किया, उसे ही 'ध्यान से सुनना' कहते हैं। यह साधारण सुनने से अलग है।

जब आप ध्वनि या बोले गए शब्द को समझते, ग्रहण करते और साथ ही साथ उस पर सही प्रतिक्रिया देते हैं तो इसे 'ध्यान से सुनना' कहते हैं। आप प्रतिदिन कक्षा में कई प्रकार की ध्वनियाँ सुनते हैं, लेकिन जब शिक्षक कुछ बोलते हैं तब आप 'ध्यान से सुनते' हैं।

क्या यह देखना अद्‌भुत नहीं है कि हम बिना बोले या भाषा के उपयोग किए, संचार से जुड़ी गतिविधियाँ कर रहे हैं। सामान्यतया हम बोलने को ही संचार समझ लेते हैं। यहाँ तक कि हम कहानियाँ सुनाने में भी दृश्य निर्मित करने के लिए चेहरा, शरीर, ध्वनि का उपयोग करते हैं। क्या हमें भाषा की आवश्यकता पड़ती है? इसके बारे में सोचिए, पर अभी हम भाषा का उपयोग करना प्रारंभ करते हैं।

17 आइए, सृजन करें

अभिनय 3 दृश्य 5 – एक दृश्य बनाएँ

0338CH17

गतिविधि 10 भूमिका निर्वहन

अहा! अंत में हमें बोलने का मौका मिल गया, अब हमारे पास आंगिक भाषा, भाव, सामग्री के उपयोग के साथ एक और जादुई उपकरण है— 'भाषा'। क्या आपके विचार से यह सरल होगा? यद्यपि ऐसा लगता है किंतु ऐसा नहीं है। आइए, आगे बढ़ें और एक दृश्य बनाएँ।

रचनात्मकता, कल्पना और संचार जैसी अवधारणाओं की मूलभूत समझ रंगमंच का आधार है। अब आप अभिनय के लिए तैयार हैं।

निर्देश— आप दो के समूह में काम करेंगे। शिक्षक आप में से प्रत्येक को पात्र और परिस्थितियाँ सौंपेंगे। इसके आधार पर आप और आपके मित्र के बीच वार्तालाप होगा। आप रंगमंच में सहायक वस्तुओं (वास्तविक या काल्पनिक) का उपयोग भी कर सकते हैं। बातचीत तब तक जारी रखें जब तक शिक्षक आपको रूकने के लिए न कहें। क्या यह सरल है?

स्तर 1

पुलिस और चोर, रोगी और चिकित्सक, माँ को चॉकलेट खरीदने के पैसे देने के लिए मनाना, किसी मित्र को अंचभित करने के लिए जन्मदिन मनाने की योजना बनाना आदि।

स्तर 2

परिस्थिति आधारित अवधारणाएँ ईमानदारी, सम्मान, मदद करना, साझा करना आदि।

आप सीखेंगे

समन्वय, सामग्री का उपयोग, विश्वास, दृश्य परिस्थितियों का निर्माण, समूह कार्य आदि।

चर्चा एवं प्रतिक्रिया

- क्या आपको दूसरे पात्र की तरह अभिनय करना पसंद आया?
- कौन-सी परिस्थिति में अभिनय करना कठिन था? और क्यों?
- क्या यह बोलकर करना सरल था या बिना बोले?
- आपने स्वयं के बारे में कौन-सी नई बात सीखी?

घेरा समय की टिप्पणियाँ

क्या भाषा के जादुई उपकरण ने इसे सरल बना दिया? या क्या आप आंगिक भाषा के बारे में सब भूल गए क्योंकि आपने केवल इस बात पर ध्यान केंद्रित किया कि आगे क्या कहना है? अपनी आंगिक भाषा, भाव और भाषा में समन्वय स्थापित करना, कार्य करने का सबसे अच्छा तरीका है। क्या ये सब बहुत अधिक है? चिंता न करें, अभ्यास से यह आसान हो जाएगा। प्रतिदिन अभ्यास करें, आप जब भी घर या विद्यालय में मित्रों से बातें करें तो अपनी आंगिक भाषा और हाव-भाव पर ध्यान दें। दूसरों का भी अवलोकन करें।

दृश्य 6 – अभिनय के माध्यम से कहानी

पहले के दृश्य में केवल दो कलाकार थे। अब हम और जोड़ रहे हैं! यद्यपि आप व्यक्तिगत रूप से जो करते हैं उसका आंगिक संचलन, अभिव्यक्ति और भाषा समान होते हैं लेकिन यहाँ प्रक्रिया पूरी तरह से अलग है। क्या समूह में काम करने से दृश्य बेहतर हो जाता है या इससे अधिक समस्या होती है? बिल्कुल नहीं। जितने अधिक लोग उतना अच्छा दृश्य!

गतिविधि 11 सामूहिक भूमिका निर्वहन

कक्षा को 5 या 6 के समूहों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक समूह को एक सरल कहानी मिलती है। बच्चे तैयारी करते हैं, अभ्यास करते हैं और प्रदर्शन करते हैं!

स्तर 1

अन्य पाठ्यपुस्तकों के अलग-अलग पाठों से परिचित कहानियाँ ली जा सकती हैं। उदाहरण के लिए भाषा की पुस्तकें, इतिहास की पुस्तकें आदि।

स्तर 2

विषयवस्तु पौराणिक कथाओं, तेनालीराम, पंचतंत्र आदि से ली जा सकती हैं। उदाहरण के लिए चतुर कौआ, एकलव्य, प्रशिक्षण के समय अर्जुन का ध्यान, श्रवण कुमार, शिव और पार्वती के प्रति गणेश की भक्ति इत्यादि।

चर्चा एवं प्रतिक्रिया

- आपको गतिविधि के किस भाग में सबसे अधिक आनंद आया? और क्यों?
- हमारी पौराणिक कथाओं की कितनी कहानियाँ आप पहले से जानते थे?
- अन्य कौन-सी कहानियाँ हैं जिन पर आप अभिनय करना चाहेंगे?
- आपने अपने बारे में कौन-सी नई बात सीखी?

घेरा समय की टिप्पणियाँ

क्या एक समूह में कार्य करना और अकेले काम करना आपकी सोच और प्रक्रिया के मामले में बहुत अलग नहीं है? जब आप किसी समूह में कार्य करते हैं तो आप विभिन्न प्रकार के कौशल सीखते हैं। आप यह सुनिश्चित करते हैं कि प्रदर्शन में सभी को समान अवसर मिले। प्रत्येक के विचारों और सुझावों पर विचार किया जाना चाहिए और इन पर विचार करते हुए आप यह निर्णय कैसे ले पाते हैं कि आप क्या प्रदर्शन करेंगे? इसे ही हम समूह में कार्य करना कहते हैं।

आगे चलकर आप समूह में बहुत सारी गतिविधियाँ करेंगे, क्योंकि नाटक, समूह में कार्य करने की एक प्रक्रिया है। मेरे पास आपके अनुकरण करने के लिए एक सरल सुझाव है, जिससे आपका समूह और अधिक सक्षम बनेगा। दूसरों की कमियाँ ढूँढ़ने के स्थान पर सदैव अपने समूह में योगदान देने के बारे में सोचें। यदि समूह में प्रत्येक व्यक्ति इसका पालन करेगा तो आपका समूह सर्वश्रेष्ठ होगा।

0338CH18

18 आस-पास देखें

अभिनय 4

विदूषक— जिस प्रकार हमने 'सुनने' और 'ध्यान से सुनने' के बीच के अंतर पर चर्चा की, अब हम 'अवलोकन' पर चर्चा करने जा रहे हैं। 'अवलोकन' और सामान्य रूप से देखना भिन्न है। यह किसी वस्तु को 'ध्यानपूर्वक देखना' या ध्यानपूर्वक उसके बारे में जानकारी लेने या अधिक जानने की क्रिया है। आप विद्यालय जाते समय बहुत से लोगों को देखते हैं, लेकिन आप एक व्यक्ति के कार्य व्यवहार पर ध्यान देने के लिए उसका अवलोकन करते हैं। जब आप अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए किसी परिस्थिति, क्रिया या व्यक्ति पर अधिक ध्यान देते हैं तो वह 'अवलोकन' कहलाता है।

एक अभिनेता को अपने आस-पास देखकर और अवलोकन करके बहुत कुछ सीखने को मिलता है। हमने अब तक अपनी सोच आधारित रचनात्मकता पर काम किया है। अब हम अपने चारों ओर रचनात्मकता और प्रेरणा की खोज करेंगे।

आप सीखेंगे

विचारों में स्पष्टता, रचनात्मकता, भाषण में आत्मविश्वास, कहानी सुनाना, प्रश्न करना, अवलोकन करना, स्थानीय रंगमंच, परंपरा आदि।

दृश्य 7 – कथाओं का निर्माण

गतिविधि 12 अवलोकन और कहानी सुनाना

अपने आस-पास के लोगों का अवलोकन करें। एक व्यक्ति को पहचानकर उनके व्यवहार का अनुसरण करें। उनके चलने की शैली, बातचीत की शैली, वे जिस प्रकार के कपड़े पहनते हैं, वे जिस प्रकार के सामान का उपयोग करते हैं, उनके द्वारा किया गया कोई अनोखा कार्य आदि पर ध्यान दें। इन सभी विवरणों को देखने और इस पर ध्यान देने में आपको 2–3 दिन का समय लग सकता है। उदाहरण के लिए पड़ोस का दुकानदार, दूधवाला, रसोई में खाना पकाते माता-पिता आदि।

कहानी की कल्पना

स्तर 1

किसी व्यक्ति के बारे में सरल शब्दों में वर्णन करें, उसके बाद उस व्यक्ति को मुख्य पात्र बनाकर एक कहानी सुनाएँ (यह कहानी काल्पनिक हो सकती है)।

स्तर 2

आपने उस व्यक्ति की जिन विशेषताओं का अवलोकन किया है, जैसे— भावनाएँ, शारीरिक गतियाँ, हाव-भाव, ध्वनि और बातचीत करने का तरीका आदि के साथ अभिनय करें।

चर्चा एवं प्रतिक्रिया

- आपको गतिविधि के किस भाग में सबसे अधिक आनंद आया? और क्यों?
- क्या आपको अपने अवलोकन उपयोगी लगे?
- क्या आप उस व्यक्ति से आसानी से जुड़ सके जिसका आप अवलोकन कर रहे थे?
- आपने अपने बारे में कौन-सी नई बात सीखी?

घेरा समय की टिप्पणियाँ

____

____

____

वे कौन हैं? वे क्या कर रहे हैं?

____

____

चित्र का अवलोकन करें और चित्र में जो कुछ घटित हो रहा है, उसके बारे में एक सरल कहानी बनाएँ? इसे कक्षा में साझा करें।

____

____

गतिविधि 13 चित्रमय कहानी सुनाना

आवश्यकताएँ— दृश्यात्मक रूप से आकर्षक चित्र। ये वे चित्र हो सकते हैं जिन्हें छात्रों ने अपनी दृश्य कला की कक्षा में तैयार किया है।

निर्देश— आपके शिक्षक जो चित्र दिखा रहे हैं उन्हें ध्यानपूर्वक देखें। चित्र के प्रत्येक कोने के सभी विवरणों का अवलोकन करें। क्रियाओं और अभिव्यक्तियों का उपयोग करके, अपने अवलोकन के आधार पर आपको एक कहानी बनानी होगी।

चित्रमय कहानी बनाएँ

स्तर 1

किसी वस्तु या पशु-पक्षी का सरल चित्र (पेड़, मटका, बिल्ली आदि) बनाएँ और उनके बारे में कहानी सुनाएँ।

स्तर 2

दो चित्रों को जोड़कर एक नई कहानी (कक्षा में प्रयुक्त मौजूदा चित्रों से) बनाएँ। उदाहरण के लिए ऊपर दिए गए चित्र में बिल्ली की कहानी को मछली से जोड़ें।

चर्चा एवं प्रतिक्रिया

- आपको गतिविधि के किस भाग में सबसे अधिक आनंद आया? और क्यों?
- क्या आप इस गतिविधि का उपयोग कहीं और कर सकते हैं?
- आपने अपने बारे में कौन-सी नई बात सीखी?

घेरा समय की टिप्पणियाँ

अब आप कहानियों के लिए नए विचार प्राप्त कर सकते हैं। क्या यह प्रेरणादायक नहीं है? अपने साथ एक पुस्तिका रखें ताकि जब भी आपका सामना आपके आस-पास उपस्थित किसी रूचिकर व्यक्ति, वस्तु या परिस्थिति से होता है तो आप अपने विचारों को लिखकर कहानियाँ बना सकें। यह आपकी नई कहानी बन सकती है।

अवलोकन की कला में निपुणता के लिए उत्सुकता के साथ अवलोकन करें। इससे आपको अपने आस-पास की दुनिया के रहस्यों को उजागर करने का अवसर मिलेगा।

दृश्य 8 – सामुदायिक रचनात्मकता

गतिविधि 14

जैसा कि हमने कहानियों में नए–नए विचारों का समावेश करने के लिए अपने चारों ओर का अवलोकन करना सीख लिया है इसलिए आइए, यह भी देखें कि हमारे आस-पास रंगमंच की अन्य शैलियाँ और रूप कौन-कौन से हैं? भारत कला और संस्कृति में इतना समृद्ध है कि आपको प्रत्येक 100 किलोमीटर में एक नया और भिन्न कला रूप देखने का अवसर मिलेगा। ऐसी है हमारे देश की समृद्धि और विविधता। अपने राज्य में एक रंगमंच शैली खोजने का प्रयास करें।

अपने क्षेत्र के (अपने जिले में और उसके आस-पास प्रदर्शित होने वाले) दो नाट्य रूपों की पहचान करें। आप अपने परिवार या दोस्तों को आपकी सहायता करने के लिए कह सकते हैं। इसका एक चित्र नीचे बनाएँ या चिपकाएँ और प्रत्येक नाट्य रूप के बारे में तीन पंक्तियाँ लिखें।

आपके राज्य और जिले का नाम

यहाँ चित्र बनाएँ या चिपकाएँ

यहाँ चित्र बनाएँ या चिपकाएँ

19 गतिविधियाँ

अभिनय 5

इन चित्रों को मिलाकर अपनी कहानी बनाएँ। आप इनका उपयोग किसी भी क्रम में कर सकते हैं। कहानी को यथासंभव रचनात्मक और अलग बनाने का प्रयास करें।

0338CH19

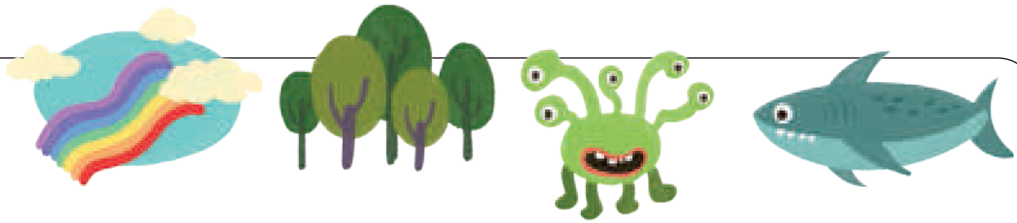

मानसिक एकाग्रता गतिविधि

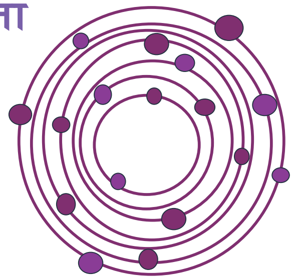

निर्देश –

1. प्रत्येक गोले में गेंदों की संख्या को अलग-अलग गिनें। बाहरी गोले से गिनना शुरू करें।
2. अब इन्हें जोड़ें।
3. सभी गोलों में गेदों की संख्या को एक साथ गिनें।
4. क्या दोनों संख्याएँ समान हैं?
5. अपने उत्तर की जाँच अपने मित्रों के साथ मिलान करके करें।

आपको इतनी सारी आनंददायी गतिविधियाँ करवाते हुए, मुझे अनुभव ही नहीं हुआ कि हम इस वर्ष के कार्य के अंत तक पहुँच गए हैं, लेकिन हमने तो यात्रा अभी शुरू की है, अगला वर्ष और भी रोमांचक होगा। मैं आपको एक नई यात्रा पर ले जाने और अपनी कहानियाँ साझा करने की प्रतीक्षा में हूँ क्योंकि मैं आपको और अधिक सीखने में सहायता करना चाहता हूँ। याद रखें, यहाँ कोई उत्तर सही या गलत नहीं हैं। आपके सभी विचार अद्‌भुत हैं।

आप रंचमंच में जो भी कर रहे हैं, सुनिश्चित करें कि आप उसका आनंद लें।

बच्चों, अब अगले सत्र में मिलेंगे...

नमस्ते!

कला-विधाओं का एकीकरण

0338CH20

क्या आप जानते हैं?

बाँसुरी

आपकी पाठ्यपुस्तक का नाम बाँसुरी है। बाँसुरी जादुई और मधुर ध्वनि वाला एक संगीत वाद्ययंत्र है। यह प्रत्येक व्यक्ति को अच्छी लगती है। क्या आप जानते हैं कि बाँसुरी बाँस से बनाई जाती है? आप इसे स्वयं भी बना सकते हैं और बजा सकते हैं। जब आप किसी मेले में जाते हैं तो वहाँ सदैव कोई न कोई खिलौने बेचता और बाँसुरी बजाते हुए मिल जाता है और आप सभी इसकी ध्वनि से आकर्षित हो जाते हैं। वही बाँसुरी नृत्य प्रदर्शन में बजाई जाती है और नाटक में सामग्री के रूप में उपयोग की जा सकती है। बाँसुरी को कागज, मिट्टी या बाँस से बनाया जा सकता है। आप मैदान या जंगल में किसी व्यक्ति का बाँसुरी बजाते हुए चित्र भी बना सकते हैं।

सभी कलाएँ एक-दूसरे से भिन्न हैं, साथ ही उन सभी में बहुत-सी सामान्य विशेषताएँ भी हैं और वे एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं। उदाहरण के लिए सभी कलाएँ, जैसे— संगीत, नृत्य, रंगमंच और दृश्य कला स्वर, लय, भाव और ताल से संबंधित हैं। इन सभी के पास अपनी गति, लय और वार्तालाप हेतु अपनी एक भाषा है। आप अपनी भावनाएँ कला के माध्यम से व्यक्त कर सकते हैं। यहाँ हमारे पास कुछ गतिविधियाँ हैं जो सभी कला-विधाओं को एक साथ जोड़ती हैं। आप इन सभी गतिविधियों को कर सकते हैं और इनका आनंद ले सकते हैं।

गतिविधि 1 कला-विधाओं का एकीकरण

यहाँ पर चार पंक्ति का उदाहरण दिया गया है जो कि संस्कृत भाषा में नंदिकेश्वर द्वारा रचित है। जिसका वर्णन हजार वर्ष पहले लिखे गए ग्रंथ अभिनय दर्पण से लिया गया है। प्राय: कलाकार अपनी प्रस्तुति आरंभ करने से पहले इसको सुनाते हैं। आप इसे ऊँचे स्वर में हाव-भाव के साथ पढ़ सकते हैं। आप क्यू.आर. कोड को स्कैन करके वीडियो भी देख सकते हैं।

आङ्गिकं भुवनं यस्य, वाचिकं सर्व वाङ्मयम्।
आहार्यं चन्द्र तारादि, तं वन्दे सात्त्विकं शिवम्॥

अर्थ— जहाँ भौतिक शरीर ब्रह्मांड है, वाणी या गीत सभी ध्वनियों का सार है, अलंकार चंद्रमा और सितारे हैं, मैं उस परम दिव्य परमेश्वर को नमन करता हूँ।

यह उन सभी चार कला विधाओं को एक साथ जोड़ता है जिन्हें आप सीख रहे हैं—

आंगिक – संचलन, क्रिया और अभिव्यक्ति के माध्यम से शारीरिक प्रस्तुतीकरण।

वाचिक – भाषण, संवाद, गीत और शब्द।

आहार्य – वेशभूषा, आभूषण, मूर्तिकला और चित्रकला।

सात्विक – कलाकारों और दर्शकों के लिए गहरी भावनात्मक और आध्यात्मिक अनुभूति।

गतिविधि 2 बाँसुरी

आप बाँसुरी बना सकते हैं जिसके लिए आपको केवल मोटे चार्ट पेपर, गोंद, कैंची और कुछ रंगों या रंग भरी पेंसिल की आवश्यकता होगी।

- एक चार्ट पेपर पर एक बाँसुरी का एक चित्र बनाएँ। पेपर को बेलनाकार मोड़ें और किनारों को गोंद से चिपकाएँ। इसमें छोटे-छोटे छेद करें। लीजिए, आपकी बाँसुरी तैयार है।
- आप बाँसुरी पर चित्र आदि भी चिपका या बना सकते हैं। इसके चारों ओर कई अन्य सामग्री भी जोड़ सकते हैं, जैसे— व्यक्ति, जंगल, फूल और जानवर आदि का चित्र।
- अब बाँसुरी को विषयवस्तु बनाकर उसके ऊपर बने चित्रों का प्रयोग करते हुए एक कहानी बनाएँ और कक्षा में प्रस्तुत करें।
- आप कहानी सुनाने के लिए अपने आस-पास की किसी भी वस्तु का उपयोग कर सकते हैं और उसे बाँसुरी के रूप में तैयार कर सकते हैं। बाँसुरी को आप वस्तु के रूप में प्रयोग कर सकते हैं।
- आप अपने आपको वाद्ययंत्र बाँसुरी के रूप में कल्पना करें और अभिनय करें।
- बाँसुरी में गीत या धुन बजाते हुए सरल गतिविधियाँ कर सकते हैं।

शिक्षक संकेत

बच्चों को बाँसुरी की ध्वनि सुनाएँ। उन्हें निम्नलिखित कल्पना करने के लिए कहें– भगवान श्रीकृष्ण खेतों में गायों के झुंड के साथ बाँसुरी बजा रहे हैं। वे इस विषयवस्तु पर एक लोक गीत भी सीख सकते हैं। सभी गतिविधियों को करते समय पूरी कक्षा को 4–5 विद्यार्थियों के समूहों में विभाजित करें और सभी बच्चों को इसमें सम्मिलित करें।

गतिविधि 3 प्रकृति के निकट

हम सभी प्रकृति से प्रेम करते हैं और इसे अनुभव करने का प्रयास करते हैं। हम प्रकृति के निकट रहते हैं और विभिन्न प्रकार की ध्वनियों, रंगों और हरियाली का आनंद लेते हैं। आप सभी कक्षा में जंगल का चित्र बनाने का प्रयास कर सकते हैं।

- पृष्ठ के बीच में एक फूल बनाएँ। आपके समूह से प्रत्येक विद्यार्थी उस फूल के आस-पास कुछ न कुछ जोड़ें और किसी बगीचे या जंगल का चित्र बनाएँ।
- ऐसी कहानी बनाएँ जिसमें फूल, पक्षी, पेड़ और जानवर आदि सम्मिलित हों।
- ऐसे घूमें जैसे आप किसी जंगल में चल रहे हों।
- क्या आप उत्साहित और जिज्ञासु हैं?
- आप जो कल्पना करते हैं, उस पर प्रतिक्रिया करें (आपका पसंदीदा जानवर, फूलों की सुगंध, बड़ी चट्टानें आदि)।
- आप किस प्रकार की ध्वनियाँ जंगल या बगीचे में सुनना चाहेंगे (पक्षी चहचहाते हुए, पानी बहते हुए आदि)? उन ध्वनियों को निकालने का प्रयास करें।
- ऐसा अनुभव करें कि आप किसी जंगल या पार्क जैसे प्राकृतिक परिवेश में हैं।

शिक्षक संकेत

बच्चे जानवरों, पक्षियों, प्रकृति आदि पर एक गीत सीख सकते हैं। उपर्युक्त सभी गतिविधियों को चार से पाँच विद्यार्थियों के समूह बनाकर किया जा सकता है और पूरी कक्षा को इसमें सम्मलित किया जा सकता है।

गतिविधि 4 त्यौहारों को मनाना

हम सभी विभिन्न त्यौहार मनाते हैं। हमें सामान्यतया बड़े त्यौहारों के लिए अवकाश मिलता है, वे हमारे जीवन में उत्साह और रंग लाते हैं। कोई भी त्यौहार, चाहे वह छोटा हो या बड़ा, उसे मनाने से हमें प्रसन्नता मिलती है क्योंकि उस समय हम नए कपड़े खरीदते हैं, अच्छा खाना खाते हैं, मित्रों और प्रियजनों से मिलते हैं, घर की साफ-सफाई करते हैं और उन्हें सजाते हैं।

शिक्षक संकेत

इस गतिविधि के पीछे मुख्य विचार विभिन्न कला विधाओं के बीच संबंध निर्मित करना है।

- बच्चे त्यौहार का गीत सीख सकते हैं।
- गतिविधियों को विद्यालय की प्रार्थनासभा में विशेष अवसरों पर प्रस्तुत किया जा सकता है। कक्षा को विषय (थीम) के अनुसार विभिन्न कला विधाओं के आधार पर समूहों में बाँटा जा सकता है। इससे बच्चों को दर्शकों का सामना करने और कला विधाओं के बीच परस्पर संबंध और समझ बनाने का अवसर मिलेगा।

- कोई ऐसा त्यौहार चुनें जिसे हम साथ मिलकर मनाते हैं।
- आप अपने समूह में चर्चा करें कि किस त्यौहार को किस प्रकार मनाते हैं और उसके लिए क्या-क्या तैयारियों की आवश्यकता है? कौन-से विशेष व्यंजन या भोजन तैयार किए जाते हैं? आप अपने घर को कैसे सजाते हैं और कौन-से गीत और नृत्य उस त्यौहार से संबंधित हैं?

विभिन्न समूह निम्नलिखित कार्य कर सकते हैं—

- किसी विशेष त्यौहार के लिए रंगोली या कागज के टुकड़ों से अन्य सजावट के सामान बनाएँ।
- उस त्यौहार पर आधारित एक गीत सीखें।
- इसे रसोई के बर्तनों का उपयोग करते हुए गाएँ।
- किसी त्यौहार को मनाते समय घटी हुई घटना को साझा करें।
- त्यौहार से संबंधित किसी एक कहानी को साझा करें और उससे संबंधित अभिनय करें।
- संगीत में ध्वनि के लिए रसोई के बर्तनों का उपयोग करें और त्यौहार गीत के अभिनय के लिए सरल एवं सहज मुद्राओं का उपयोग करें।
- इस अवसर पर पहने जाने वाले पारंपरिक वस्त्रों का चित्र बनाएँ।